॥ ॐ ॥

प्रस्तावना

नमो गणेशाय शिवाय गौर्यै मात्रे च पित्रे गुरवे ग्रहेभ्यः ।
अनेकग्रन्थाननवलोक्य सम्यक् करोमि भाषाग्रथनं मुहूर्तान् ।

ज्योतिष, वेद का चक्षु है; जो कि सिद्धान्त–संहिता–होरा रूप से त्रिस्कन्धात्मक (तीन प्रकार का) शास्त्र है और ज्योतिष ही काल-विधान शास्त्र कहा गया है—

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः ।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्यौतिषं वेद स वेद यज्ञान् ॥ —वेदाङ्ग ज्योतिष

यज्ञों के लिए वेद की आवश्यकता है और समय के आधार पर यज्ञ होती हैं, इस कारण यह (ज्योतिष) काल–विधान शास्त्र है, इसका जानने वाला, यज्ञों को जानता है ।

इसलिए इसका ज्ञान करना, अति आवश्यक है जिसमें से मुहूर्त नामक अंश, अधिक प्रसिद्ध है, जिसकी आवश्यकता सर्व साधारण को भी होती है। विद्वान् पण्डित तो, संस्कृत ग्रन्थों से अध्ययन कर इसका ज्ञान, पूर्ण कर लेते हैं; पर साधारण पण्डितों को संस्कृत न जानने के कारण, प्रथम कठिनता होती है और अन्य मुहूर्त ग्रन्थों में तिथि, वार, नक्षत्र तथा विवरण आदि एकत्र कर स्पष्ट लिखा भी नहीं गया, विभिन्न स्थलों में उल्लेख मिलता है, जिनकी एक-संगति बिठाना, उनकी दूसरी कठिनता होती है। श्रुति-स्मृति के प्रसिद्ध कर्मोपयोगी समय का ज्ञान, उन्हें भी हो, ऐसा विचार कर प्रकाशक ने जो हमें विकाश-सहायता दी, उसका प्रतिफल आपके हाथ में है।

इसमें प्रसिद्ध और नित्य आवश्यक मुहूर्तों का उल्लेख, सरल ढंग से हिन्दी भाषा में किया गया है। आवश्यक समझकर, यत्र-कुत्र संस्कृत-श्लोक (ग्रन्थ के भी उल्लेख) दे दिये गये हैं, जिसे प्रमाण रूप से कार्य में ला सकें। सम्भव है कि, त्रुटियाँ भी हों, जिनकी शुद्धता करना अथवा सूचना देने की त्रुटि न करना और श्रम की सफलता, पाठकों की उपयोगिता पर है। मुझे तो, 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।'—का अत्युत्तम पाठ ही सुखात्मक है।

संकलनकर्ता

❀ मुहूर्त – पृष्ठ ❀

विशेषांश

नक्षत्रों के नाम

अ.	दस्र, अश्वि. आद्य, अश्व के नाम
भ.	यम, अन्तक
कृ.	वन्हि
रो.	ब्रह्मा, ब्राह्म, क, धाता
मृ.	मृग, शशि के नाम
आ.	शिव, रुद्र, ईश्वर
पुन.	अदिति
पुष्य.	ईज्य, तिष्य
श्ले.	सर्प
म.	पितर
पूफा.	भग
उफा.	अर्यमा
ह.	कर, अर्क, पतंग, सूर्य के नाम
चि.	त्वाष्ट्र, विश्व, त्वष्टा
स्वा.	वायु, मारुत, पवन के नाम
वि.	द्वीश, द्विदैव (इन्द्राग्नी)
अनु.	मैत्र, मित्र
ज्ये.	इन्द्र, शाक्र
मू.	राक्षस, निऋति, क्रव्य, निशाचर
पूषा.	जल
उषा.	वैश्व, विश्वेदेव
अभि.	ब्रह्मा
श्र.	श्रुति, कर्ण, विष्णु, हरि
ध.	वसु, वासव
श.	पाशि, वरुण, जलेश के नाम
पूभा.	अजैकपात्
उभा.	अहिर्बुध्न्य
रे.	पूषन्, पौष्ण, अन्त्य

नक्षत्र-वार की संज्ञाएँ

संज्ञा	नक्षत्र	वार	संज्ञा	नक्षत्र	वार
ध्रुव या स्थिर	रो. उ.फा. उषा. उभा	रवि	मिश्र या साधारण	कृत्तिका विशाखा	बुध
मृदु या मैत्र	मृ. चि. अनु. रे.	शुक्र	लघु या क्षिप्र	अश्वि. पुष्य ह. अभि.	गुरु
तीक्ष्ण या दारुण	आर्द्रा श्ले. ज्ये. मू.	शनि	चर या चल	पुन. स्वा. श्र. ध. शत.	सोम
			उग्र या क्रूर	भर. म. पूफा. पूषा. पूभा.	मंगल

तिर्यक्	—	ज्येष्ठा. हस्त. अश्वि. मृग. पुन. चित्रा. स्वाती. अनु. रेव.
ऊर्ध्वमुख	—	रोहि. आर्द्रा. पुष्य उफा. उषा. उभा. श्रव. धनि. शत.
अधोमुख	—	मूल. कृत्ति. मघा. विशा. भर. श्लेषा. पूफा. पूषा. पूभा.

पर्व तिथि —१५।३० तिथि कृष्ण पक्ष की १४।८ तिथि और संक्रान्ति।

ईश्वर तिथि—८।११ तिथि

पक्षरन्ध्रतिथि-४,६,८,९,१२,१४ तिथियों का क्रमशः परिहार ८-९-१४-२५-१०-५ घटी वर्जित है

अर्धोदययोग —माघ ३० को सूर्योदय समय व्यतीपात, श्रवण (१०० सूर्यग्रहण समपर्व)

महोदय पर्व—अर्धोदय योग में कुछ कमी से होता है।

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०
ईश	अग्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	अहि	गुह	रवि	शिव	दुर्गा	यम	विश्व	हरि	काम	शिव	शशी	पितर

	सतयुग	त्रेता	द्वापर	कलियुग
युगादि—	कार्ति. शु. ९,	वै. शु. ३,	माघ या फा. ३०	भाद्र या आश्वि. कृ. १३

मदनदर्शौ भाद्रमाघासिते । मु. चि (यह प्रसिद्ध है)

त्रयोदश्याश्विने कृष्णा तथा दर्शश्च फाल्गुने ॥ मु.ग. (अप्रसिद्ध मतान्तर)

इन तिथियों में युगों का प्रारम्भ होता है। और युगमान विभिन्न प्रकार के होते हैं; जिनके उल्लेख, अनेक ग्रन्थों में दिये गये हैं। युगमान जातक-दीपक में देखिए।

मन्वादि—आश्वि. शु. ९, माघ शु. ७, भाद्र शु. ३, चैत्र शु. ३, कार्ति. शु. १२
आषा. शु. १०, ज्ये. १५, आषा. १५, फाल्गु. १५, चैत्र १५, कार्ति. १५
पौष शु. ११, कृ. ८ या ३० (भाद्र कृ. ८–३०)

१. नवीन वस्त्र-आभूषण धारण मुहूर्त (पुरुष के लिए)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्षों की	सू.	अ. रो. पुन.	विवाहे च यज्ञे तथा वत्सरादौ, नृपेणापि दत्तं मुदा यच्च वस्त्रम्। श्मशाने विशेषोत्सवे श्राद्धपक्षे, कुधिष्ण्ये दिनादावथो धारणीयम्॥
२।३।५।६।७	बु.	पु. पूफा. उ. ३	
८।१०।११	गु.	ह. चि. स्वा.	
१२।१३।१५	शु.	वि. अनु. ध. रे.	विवाह में, यज्ञ में, नूतन संवत् के प्रथम दिन में, राजा द्वारा प्रदत्त वस्त्र, श्मशान में, विशेष उत्सव में और श्राद्ध-पक्ष में बिना मुहूर्त के भी नवीन वस्त्र-धारण करना, उचित है [विप्र आज्ञा से भी उचित है।
तथा कृष्ण १ भी।		नक्षत्र-फल पृष्ठ ३ से पढ़िए।	—बृहज्ज्योतिः सार]

२. नवीन वस्त्र-आभूषण धारण मुहूर्त (स्त्री के लिए)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६ ७।८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	बु. गु. शु.	अ. ह. चि. स्वा. वि. अनु. ध. रे.	पति की राशि से ४।८।१२ वें चन्द्र में, स्त्री को नवीन वस्त्र-आभूषण धारण करना वर्जित (मना) है। वस्त्र-धारण में दिन-फल— सू. = जीर्ण। चं. = वध मं. = शोक। बु. = लाभ गु. = ज्ञान। शु. = यात्रा शनिवार = मलिनता —मुहूर्त गणपति।

३. नवीन रक्त-वस्त्र धारण मुहूर्त (पुरुष के लिए)

तिथि	वार	नक्षत्र	वस्त्र-धारण में नक्षत्र-फल
दोनों पक्ष की	सू.	अ. रो. पुन.	अ. =वस्त्रलाभ । भ. =वस्त्रनाश
२।३।५।६	मं.	पु. पूफा. उ. ३	कृ. =अग्निभय । रो. =धनलाभ
७।८।१०।११	बु.	ह. चि. स्वा.	मृ. =गृपकभय । आ. =मृत्यु
१२।१३।१५	गु.	वि. अनु. ध. रे.	पुन. पुष्य =धन-धर्म-महोत्सव
तथा	शु.		श्ले. =शोक । म. =मरण
कृष्ण १ भी।			पूफा. =राजभय । उफा. =धनलाभ
			ह. =सफलता । चि. =इच्छापूर्ति
			शेष पृष्ठ ४ में

४. नवीन सफेद, पीले, कबरे, लाल वस्त्र धारण मुहूर्त (पुरुष के लिए)

तिथि	वार		नक्षत्र	पृष्ठ ३ का शेष
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. बु. गु. शु.	सफेद	अ. रो. पुन. पु. उ. ३ ह. चि. स्वा. वि. अनु. ध. रे.	स्वा. = सुभोजन । वि. = आनन्द अनु. = मित्रलाभ । ज्ये. = वस्त्रहरण मू. = जलभय । पूषा. = रोगभय उषा. = मधु अन्न । श्र. = नेत्ररोग ध. = धान्यलाभ । श. = विषभय पूभा. = जलभय । उभा. = धनलाभ रेवती = रत्नलाभ —बृ. ज्यो. सा. । मु. ग. ।
	सू. बु. गु.	पीले, कबरे		
	मं.	लाल		

५. दर्पण देखना, काजल लगाना आदि शृंगार मुहूर्त (स्त्री के लिए)			
तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. चं. बु. गु. शु. श.	अ. मृ. चि. स्वा. वि. अनु. ध. रे.	"भौमे ध्रुवादितिगुरे सुभगा न दध्यात्।" —मु. चि.। रोहिणी. पुनर्वसु. पुष्य. उत्तरात्रय (३) नक्षत्रों में तथा भौमवार को वस्त्र-आभूषण आदिक शृङ्गार करना, निषेध है। —मु. ग.। परन्तु पाणि-ग्रहण के दिन शृंगार करना, सर्वदा उचित है।

६. नवीन कृष्ण, नील वस्त्र धारण मुहूर्त (पुरुष के लिए)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. श.	अ. पुन. पूर्वा. ३ उत्तरा. ३ ह. चि. स्वा. वि. ध.	पुनर्वसुधनिष्ठाख्येऽश्विभे हस्ताच्चतुष्टये। पूर्वोत्तरे शनौ सूर्ये नीलकृष्णाम्बरं शुभम्॥ —बृ. ज्यो. मा.

७. नवीन रेशमी–वस्त्र धारण मुहूर्त (पुरुष के लिए)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू	अ. रो. पुन. पु.	जीवेऽर्के च बुधे शुक्रे वस्त्रोक्तर्क्षे श्रवान्विते ।
२।३।५।६।७	बु	उ. ३ ह. चि.	स्थिरेऽङ्गे सद्ग्रहैर्युक्ते पट्टकूलस्य धारणम् ॥
८।१०।११	गु.	स्वा. वि. अनु.	—वृ. ज्यो. सा. ।
१२।१३।१५	शु.	श्र. ध. रे.	कुम्भ लग्न छोड़कर (मतान्तर से),
तथा			स्थिर लग्न (२-५-८) में, (जो कि, शुभ-ग्रह
कृष्ण १ भी ।			से युक्त वा दृष्ट लग्न हो, उसमें) उचित है ।

८. नवीन कौशेय-वस्त्र धारण मुहूर्त (पुरुष के लिए)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. चं. गु.	अ. रो. पुन. पु. म. पू. ३ उ. ३ ह. स्वा. श्र. ध. श. रे.	शुभग्रह युक्त स्थिर लग्न में धारण करना, उचित है। विज्ञानमत से, रेशमी तथा कौशेय वस्त्र के धारण करने से विद्युत् का दूषित प्रभाव नहीं होता; अतएव मन्त्र-कार्य में इनका धारण करना, अत्यावश्यक है।

६. नवीन ऊनी वस्त्र धारण मुहूर्त (पुरुष के लिए)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अ. पुन. पु.	नीलवस्त्रोदितं धिष्ण्ये रेवतीपुष्ययोरपि ।
२।३।५।६।७	शु.	पू. ३ उ. ३ ह.	शुक्रे शनैश्चरे सूर्ये धारयेद्रोमजाम्बरम् ॥
८।१०।११	श.	चि. स्वा. धि.	—बृ. ज्यो. सा. ।
१२।१३।१५		ध. रे.	
तथा			
कृष्ण १ भी ।			

१०. सुवर्ण या चाँदी मिला हुआ नवीन वस्त्र धारण मुहूर्त (पुरुष के लिए)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. मं. गु. सुवर्ण वाले शु. चाँदी वाले	अ. रो. पुन. पु. पूफा. उ. ३ ह. चि. स्वा. वि. अनु. ध. रे.	नासत्यपौष्णवसुभैः करपञ्चकेन, मार्तण्डभौमगुरुदानवमन्त्रिवारे। मुक्तासुवर्णमणिविद्रुमदन्तशंख- रक्ताम्बराणि विधृतानि भवन्ति सिद्ध्यै॥ —पीयूषधारा। ज्योतिषसार में "मार्तण्डभौमगुरुमन्त्रि-शशांकवारे" रूपक-पाठान्तर, भ्रमात्मक है।

११. वस्त्र-निर्माण मुहूर्त (K. करघा, क्लाथ-मिल, कॉटन मिल आदि कार्य)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	र.	मृ. रो. उ. ३	
२।३।५।६।७	चं.	चि. अनु. रे.	
८।१०।११	मं.		
१२।१३।१५	बु.		
तथा	गु.		
कृष्ण १ भी।	शु.		

रेवतीरोहिणीचित्रानुराधामृगभोत्तरे ।
शनिं हित्वा कुविन्दानां तन्तुभिः पटसाधनम् ॥

—मुहूर्त गणपति।

१२. नवीन वस्त्र रँगने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. मं. गु. शु.	अ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. वि. अनु. श्र. ध.	पुनर्वसुद्वये हस्तपंचके श्रवणद्वये। अश्विभेऽर्के कवीज्यारे वाससां रञ्जनं शुभम्॥ —मुहूर्त गणपति।

१३. सूची-कर्म मुहूर्त (टेलरिंग-शिक्षा तथा शॉप)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अ. रो. मृ. पुन.	मृगश्चित्रानुराधाश्विपुष्यान्ते रोहिणी करः।
२।३।५।६।७	चं.	पुष्य ह. चि.	ज्येष्ठा सद्वासराःसार्कः सूचीकर्मणि सम्मताः॥
८।१०।११	बु.	अनु. ज्ये. ध.	—मुहूर्त गणपति।
१२।१३।१५	गु.	रे.	पुनर्वसौ मित्रद्वये धनिष्ठा
तथा	शु.		चित्रासु सौम्येऽह्नि कर्मसूच्याः।
कृष्ण १ भी।			—बृ. ज्यो. सा.।

१४. नवीन वस्त्र धुलाने का मुहूर्त (न्यू क्लाथ वाशिंग) रजक-कार्य का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।८ १०।११।१३ तथा कृष्ण १ भी।	चं. मं. गु. शु.	अ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. वि. अनु ध.	पुनर्वसुद्वयेऽश्विन्यां धनिष्ठाहस्तपंचके । हित्वार्कार्किबुधान् रिक्तां षष्ठीं श्राद्धदिनं तथा ॥ व्रतं पर्व च वस्त्राणि क्षालयेद्रजकादिना । —वृ. ज्यो. सा. । मु. ग. । श्राद्ध-पक्ष, नवरात्र, व्रत का दिन, पर्व के दिनों (१५।३० तिथि, संक्रान्ति) में, यह कार्य करना-कराना, वर्जित है।

१५. जूता पहिनना और चमड़े के काम का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	स.	आ. मृ. श्ले. म.	चित्रापूर्वानुराधार्द्रा ज्येष्ठाश्लेषामघामृगे ।
२।३।५।६।७	बु.	पूर्वा ३ चि.	विशाखाकृत्तिकामूले रेवत्यां चार्कसूर्यजे ॥
८।१०।११	शु.	वि. अनु. ज्ये.	उपानत परिधान न चर्मकर्मणि शस्यते ।
१२।१३।१५		मू. रे.	—मु. गणपति । बृ. ज्यो. सा ।
तथा			
कृष्ण १ भी ।			

१६. नवीन तोशक, तकिया, पल्ली (रजाई) बनाने का मुहूर्त [तम्बू-कनात लगाने का]

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. बु. गु. शु.	अ. रो. आर्द्रा पुन. पु. पूफा. उ. ३ ह. चि. स्वा. वि. अनु. ध. रे.। श्र. श. में तथा पूर्वोक्त नक्षत्रों में तम्बू-कनात कार्य शुभ होता है।	कुर्याद्दस्रोदिते धिष्ण्ये तूलिकामुपधानकम्। वितानाद्यं च बध्नीयादूर्ध्वमूर्ध्वमुखोडुषु ॥ —वृ. ज्यो. सा.।

१७. वस्त्र का गेह निर्माण मुहूर्त (छाता आदि बनाने, लगाने का मुहूर्त)			
तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अ. रो. मृ. पुन.	श्रुतित्रयेऽश्विनीपुष्येऽनुराधा रोहिणी मृगे ।
२।३।५।६।७	चं.	पु. उ. ३ ह.	हस्तत्रये पुनर्भेऽन्त्ये ह्युत्तरे पटवेश्म सत् ॥
८।१०।११	बु.	चि. स्वा. अनु	—मु. ग.
१२।१३।१५	गु.	श्र. ध. श. रे.	
तथा	शु.		
कृष्ण १ भी।			

१८. सुगन्ध भोग (चन्दन, अगर, कस्तूरी, फूल, इत्र आदि धारण) मुहूर्त			
तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११।१२ १३।१५ तथा कृष्ण १ भी। संवत्सरारम्भ १ और दीपावली ३० भी शुभ	चं. बु. गु. शु.	अ. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. पूषा. श्र. ध. श. रे.	श्रुतित्रयेऽश्विनीपुष्ये पूर्वाषाढानुराधयोः । हस्तत्रये पुनर्भेऽन्त्ये मृगभे च शुभेऽहनि ॥ चन्दनागरुकस्तूरीपुष्पाणां धारणं शुभम् ॥ —बृ. ज्यो. सा.

१६. शय्यासन भोग मुहूर्त (शय्या, सवारी)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	अ. भ. रो. मृ.	श्रवणे चानुराधाया न्युत्तरे रोहिणी मृगे ।
२।३।५।६।७	बु.	पुन. पु. उ. ३	पुनर्वसुद्वये हस्ते चित्राया रेवतीत्रये ॥
८।१०।११।१२	गु.	ह. चि. अनु.	भोगः शय्यासनादीनां शुभे वारे शुभे तिथौ ॥
१३।१५ तथा	शु.	श्र. रे.	—मु. ग.
कृष्ण १ और			
दीपावली ३०			

२०. भूषण बनवाने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	अ. रो. मृ.	त्रिपुष्कर योग में भी शुभ।
२।३।५।६।७	बु.	पुन. पु. उ. ३	त्रिपुष्कराभिधे योगे त्र्युत्तरे रेवतीद्वये।
८।१०।११	गु.	ह. चि. स्वा.	श्रुतित्रये मृगे पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः॥
१२।१३।१५	शु.	अनु. श्र. ध.	हस्तत्रयेऽथ रोहिण्या भूषा कार्या शुभेऽहनि॥
तथा		श. रे.	—मु. ग.
कृष्ण १ भी।			

२१. रत्नयुक्त भूषण बनवाने का मुहूर्त (चाँदी आदि के भूषण)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. चं. मं. बु. गु. शु.	अ. कृ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३ ह. चि. स्वा. धि. अनु. श्र. ध. श. रे. कृ. वि. छोड़कर शेष में गु. शु. वार को चाँदी के भूषण, मोती तथा हीरा धारण शुभ है।	त्रिपुष्कर योग में भी शुभ। कृत्तिकादित्रये हस्तपंचके रेवतीद्वये। श्रुतित्रये पुनर्वस्वौ पुष्यभे चोत्तरात्रये॥ कुजेऽर्के रत्नयुक् भूषा घटनं शुभवासरे॥ रत्नयुक् भूषणं ऋक्षे विशाखा कृत्तिकां विना। शुक्रेज्ये भूषणं रौप्यवज्रमुक्तामयं हि सत्॥ —मु. ग.

२२. राजदर्शन मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१३ तथा कृष्ण १ भी।	सू. चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुष्य ऊ. ३ ह. चि. अनु. श्र. ध. श. रे.	वृद्ध-बाल्य के बिना गुरु-शुक्रोदय में। क्षयाधिमास छोड़कर शेष मास में और यात्रा-लग्न में, गोचर द्वारा बलिष्ठ सूर्य में, उत्तरायण में विशेष शुभ। लग्न से १।२।४।७।१०।११ वें शुभग्रह, ३।६ वें पापग्रह हों तो, शुभ है। त्र्युत्तरे श्रवणद्वन्द्वे मृगे पुष्यानुराधयोः। रोहिण्या रेवतीयुग्मे चित्राहस्ते शुभेऽहनि ॥ बलिन्यर्केऽर्कवारेऽपि राजदर्शनमीरितम् ॥ —वृ. ज्यो. सा.

२३. राज-सेवा करने का मुहूर्त (नौकरी करने का)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. बु. गु. शु.	अ. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. अभि. रे.	रोज के नाम से राजा व दास की योनि तथा राशि की मैत्री होना चाहिए। शुक्लादि गत तिथि में लग्न मिलाकर ९ से भाग दे; शेष में ४ बचे तो राज-पंचक होता है। यह नर्मदा नदी से दक्षिण में प्रसिद्ध है।
राज-पंचक और नृप-वाण त्याज्य		सूर्य ५।१४।२३ वें अंश पर हो तो नृपवाण होता है।	१०।११ वें सू. मं. भी शुभ है। लग्न से १।२।४।७।१०।११ वें भाव में शुभग्रह होना चाहिए।
		नृदूर विचार करे	दास के नाम नक्षत्र से, राजा (स्वामी) के नाम का नक्षत्र दूसरा हो तो, नृदूर दोष होता है। इससे राजा को हानि पहुँचती है।

२४. राजा को अर्जी देने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सर्व दिन	अ. रो. मृ. उ. ३ चि. रे.	अर्जी देने वाले के चन्द्र बल में दशमेश से अधिक बली लग्नेश होना चाहिए।

२५. गज, अश्व, रथ, गाड़ी, सवारी आरोहण मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अ. मृ. पुन.	रेवतीयुगले हस्तत्रये कर्णत्रये मृगे।
२।३।५।६।७	चं.	पु. ह. चि. स्वा.	पुनर्वसुद्वये कुर्याच्छनिभौमान्यवासरे॥
८।१०।११	बु.	अ. ध. श. रे.	गजाश्वरथमुख्यानामारोह च शुभे तिथौ॥
१२।१३।१५	गु.		—मु. ग.
तथा	शु.		
कृष्ण १ भी।			

२६. पालकी आरोहण तथा पालकी बनवाने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	रो. मृ. आर्द्रा	२।३।४।६।७।६।१२ लग्न में निर्माण तथा आरोहण शुभ है।
२।३।५।६।७	बु.	पुन. पु. उ. ३	उत्तरारोहिणीयुग्मे त्रिभे हस्तात्त्रिभेश्वरात्।
८।१०।११	गु.	ह. चि. स्वा.	पुनर्वसौ तथा पुष्येऽनुराधाद्वितये मृगे ॥
१२।१३।१५	शु.	अनु. ज्ये.	रोहणं शिविकायास्तु सल्लग्ने घटनं तथा ॥
तथा			—मु. ग.
कृष्ण १ भी।			

२७. गज कर्म मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	चं. बु. गु. शु. श.	अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. मकर-कुम्भ लग्न में; शनिवार के दिन अंकुश-कार्य शुभ है। —मु. ग.	गज-चक्र [साभिजित सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक] २ कर्ण = महालाभ २ मस्तक = लाभ २ दन्त = लाभ २ पुच्छ = हानि २ शुण्ड = शुभ ४ पृष्ठ = सुख-सम्पत्ति ४ पेट = रोग ४ मुख = मध्यम ६ चरण = लाभ —बृ. ज्यो. सा.

२८. अश्व कर्म मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. चं. बु. गु. शु. श.	अ. मृ. पुन. पु. ह. स्वा. ध. श. रे. पूर्वाह्न में सवारी करना शुभ है।	अश्व के लिए, मानव के समान मुहूर्त होते हैं। अन्नप्राशन मुहूर्त में घी, अन्न, चना, दूध, घास, मूँग, दाना आदि भक्षण, शुभग्रह के लग्न-वार में स्नान, चौलकर्म मुहूर्त में बाल (बालों) का काटना, भेषज मुहूर्त में भेषज देना, गर्भाधान मुहूर्त में गर्भाधान कराना, गृहारम्भ मुहूर्त में हयशाला-निर्माण, विद्यारम्भ मुहूर्त में शिक्षा देना, भूषण मुहूर्त में भूषण-धारण कराना, शुभग्रह की लग्न, वार तथा विजयकारक मुहूर्त में एवं ३-८-१३ तिथि में चर्म-कर्म (जीन आदि चमड़े के सामान) करना चाहिए। इसी प्रकार गर्दभ, खच्चर, ऊँट का भी करना चाहिए।

२६. अश्व का क्रय-विक्रय मुहूर्त [गुरु शुक्रोदय में]

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अ. रो. मृ.	लग्न में गु. शु. हो, २।४।७ वें भाव में चन्द्र हो तो शुभ है।
२।३।५।६	मं.	पुन. पु. उ. ३	
७।८।१०।११	बु.	ह. चि. स्वा.	अश्व - चक्र—(बृ. ज्यो. सा.)
१२।१३।१५	गु.	अनु. ध. श. रे.	[साभिजित सूर्य नक्षत्र से]
तथा	शु.	अश्व-चक्र सूर्यभात् साभिजित	५ स्कन्ध = शुभ १० पृष्ठ = लाभ २ पुच्छ = पत्नीनाश ४ पैर = रणभङ्ग ५ उदर = अश्वनाश २ मुख = धनलाभ
कृष्ण १ भी।		१५ । १० । ३ शु. अ. शु.	

३०. रथ कार्य मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अ. रो. मृ. पुन.	२।३।५।६।७।९।१२ लग्न में शुभ है।
२।३।५।६	चं.	पु. ह. चि.	
७।८।१०।११	बु.	स्वा. अनु. ज्ये.	
१२।१३।१५	गु.	श्र. ध. श. रे.	पुष्ये पुनर्वसुज्येष्ठानुराधाश्विवर्ताहवे।
तथा	शु.		श्रवणादित्रिके हस्तत्रितये रोहिणी मृगे॥
कृष्ण १ भी।			शुक्रे सौम्यार्कदिने सौम्यविलग्ने रथकर्म तत्॥
			—मु. ग.

३१. शत्रु या चोर का बन्धन–ताड़न मुहूर्त (जेल कार्य)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	भ. आर्द्रा श्ले.	लग्न मे क्रूरग्रह होना चाहिए।
३।४।८।६	मं.	म. पू. ३ ज्ये.	१।५।८।१०।११ लग्न में शुभ है।
१३।१४	श.	मू.	
			ज्येष्ठार्द्राभरणीपूर्वामूलाश्लेषामघाह्वये।
			क्रूरखेटयुते लग्ने क्रूरमन्दारवासरे।
			शत्रूणा बन्धनं कुर्यात्कशाभिस्ताडनं तथा॥
			—मु. ग.

३२. शस्त्र-धारण मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अ. रो. मृ.	लग्न २।४।८।११ में शुभ है।
२।३।५।६।७	गु.	पुन. पु. उ. ३	शुभस्थानस्थ चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि या युति हो और केन्द्र में शुभग्रह हो तो शुभ है।
८।१०।११	शु.	ह. चि. वि.	
१२।१३।१५		अनु. ज्ये.	पुनर्वसुद्वये हस्तचित्रायां रोहिणीद्वये।
तथा		अभि. रे.	विशाखादित्रये कुर्यात् त्र्युत्तरे रेवतीद्वये ॥
कृष्ण १ भी।			रिक्तां विना तिथौ सूर्यशुक्रजीवदिने तथा।
			सन्नाहच्छुरिकाखकुन्तशस्त्रादिधारणम् ॥
			—मु. ग.

३३. शत्रु-सन्धि (राजीनामा) मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।८ १०।१२।१३	च. बु. गु. शु.	पुष्य मघा पूफा. अनु.	लग्न, शुभयुत या दृष्ट हो तो शुभ है।
तैतिल करण में			अनुराधामघापुष्ये तिष्यर्धे तैतिलाभिधे। लग्ने सुदृष्टिगेऽष्टम्यां द्वादश्यां सन्धिरिष्यते ॥ —मु. ग.

३४. मादक वस्तु बनाने तथा खाने का मुहूर्त			[औषधि के लिए]
तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
सर्व तिथि विशेष तिथि ४।६।८।६ १२।१४	सू. मं. श.	भ. आर्द्रा श्ले. मघा पू. ३ ज्ये. मू. श.	आर्द्राश्लेषामघापूर्वाज्येष्ठामूलशताभिषे । भरण्यां क्रुदिने मन्दे चाश्नीयान्मादकं मधु ॥ —मु. ग. किन्तु बृहज्ज्योतिःसार में पूर्वोक्त नक्षत्रों में "निर्माण करना' लिखा गया है— 'मद्यारम्भः कालविद्भिः पुराणैः ।" तथा च "भरण्यां क्रूरवारे च मद्यकर्मेरितं बुधैः ।" —मु. ग.

३५. गीत नृत्यारम्भ मुहूर्त (म्यूजिक-शिक्षा)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	रो. मृ. पुष्य	लग्न में बुध या गुरु की दृष्टि हो, ३।६
२।३।५।६।७	बु.	उ. ३ ह. अनु.	राशि का चन्द्र चतुर्थ मे शुभग्रहों से दृष्ट या
८।१०।११	गु.	ज्ये. ध. श. रे.	युक्त हो तो शुभ है।
१२।१३।१५	शु.		रेवत्यामनुराधायां धनिष्ठादिद्वये करे।
तथा			रोहिणीयुगले पुष्ये त्र्युत्तरे गीतनर्तने ॥
कृष्ण १ भी।			—मु. ग.

३६. नट नर्तकी कर्म मुहूर्त (नाट्य-शिक्षा)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	रो. मृ. आर्द्रा.	मृगार्द्रारोहिणीपुष्ये पुनर्भे श्रवणत्रये ।
२।३।५।६	बु.	पुन. पु. उ. ३	चित्रात्रयोत्तरामूले कृत्यं शृङ्गारजीविनाम् ॥
७।८।१०।११	गु.	चि. स्वा. वि.	—मु. ग.
१२।१३।१५	शु.	मू. श्र. ध. श.	
तथा			
कृष्ण १ भी।			

३७. दुन्दुभी. मृदङ्ग. करवाद्य. बाँसुरी आदि शिक्षा का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	मं.	अ. मृ. पुन. पु.	हस्तत्रयेऽनुराधान्त्ये पुनर्वसुयुगेऽश्विभे ।
३।५।८।१०	चं.	ह. चि. स्वा.	श्रवत्रये ज्ञेऽर्केऽहनि शुभे पूर्णांजयान्तु च ॥
१३।१५	बु.	अनु. श्र. ध.	शुभे दुन्दुभिभेर्यादिकरवाद्यं समीरितम् ।
	गु.	श. रे.	वंशादि नृत्यवाद्यन्तु पूर्वैश्चैव समीरितम् ॥
	शु.		— मु. ग.

३८. शिकार खेलने के लिए जाने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की ३।४।८।६ १३।१४	सू. मं. श.	भ. आर्द्रा श्लेषा पू. ३ स्वा. वि. ज्ये. मू.	रोज के नाम से चन्द्र-शुद्धि । देखिए, घाततिथ्यादि वर्जित हैं । श्लेषाभरण्योज्येष्ठापूर्वार्द्रास्वातिमूलभैः । विशाखायां च पापेऽह्नि याद्याटाखेटकुन्नरः ॥ —मु. ग.

३६. जल-यन्त्र चलाने का मुहूर्त (नाव, जहाज, स्टीमर)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	मं. श.	पुष्य श्ले. म. पू. ३ मू. श.	पूर्वाश्लेषामघामूले शतपुष्येऽम्बुचारिणि । लग्नेष्वार्किकुजे वारे जलयन्त्रक्रिया शुभा ॥
जलचर लग्न में (४।८।१० । ११।१२)		मध्य-पूर्व शुभ, आग्नेय-दक्षिण-नैऋत्य अशुभ, पश्चिम शुभ, वायव्य अशुभ, और उत्तर-ईशान के तीन-तीन नक्षत्र शुभ हैं।	त्रा रोहिणीतो दिनभं क्रमेण मध्यादिरुद्रान्तदिश त्रिभिर्भैः । मध्येन्द्रपाश्युत्तररुद्रदिग्भिः शुभञ्च वह्नित्रयवायुदिक्ष्वसत् ॥ रोहिणी से दिन नक्षत्र तक—(ज्योतिर्विदाभरण) ६ शुभ, ६ अशुभ, ३ शुभ, ३ अशुभ और ६ शुभ नक्षत्र होते हैं। —मु. ग.

४०. नौका आदि जलयन्त्र बनाने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अ. मृ. पुन.	ज्येष्ठोभयं विशाखार्द्रारोहिणीभरणीद्वयम्।
२।३।५।६।७	गु.	पु. पू. ३ उ. ३	आश्लेषाश्च विहायान्ये नक्षत्रेऽर्के गुरौ सिते ॥
८।१०।११	शु.	ह. चि. स्वा.	—मु. ग.
१२।१३।१५		अनु. मू. श्र.	
तथा		ध. श. रे.	
कृष्ण १ भी।			

४१. ऊँट, बकरी, भैंस, कुत्ता आदि पालने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	अ. मृ. पुन.	धनिष्ठाद्वितये पूर्वापाढातिर्यङ् मुखोडुषु ।
२।३।५।६।७	बु.	ह. चि. स्वा.	अजादिमहिषोष्ट्राणां कृत्यश्चाश्वतरीशुनाम् ॥
१०।११।१२	गु.	अनु. ज्ये. पूषा.	—मु. ग.
१३।१५	शु.	ध. श. रे.	
तथा			
कृष्ण १ भी।			

४२. मृगादि वनचारी (शृङ्गी कर्म) मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ १०।११।१२ १३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	चं. बु. गु. शु.	अ रो. पुन. पु. उ. ३ ह. स्वा. ज्ये.	ज्येष्ठास्वात्यश्विनीपुष्ये पुनर्भे रोहिणीकरे। उत्तरासु शुभं कृत्यं शृंगिणां वनचारिणाम्॥ —मु. ग.

४३. नखी (व्याघ्रादि) पालने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	गु.	अश्विनी रोहिणी	ज्येष्ठार्द्रारोहिणीहस्ते निशाखापुष्यभेऽश्विभे ।
२।३।५।६।७	मं.	आर्द्रा पुष्य	मृगर्क्षे व्याघ्रमुख्यानां कृत्यं नखवतामपि ॥
८।१०।११	श.	ह. चि. ज्ये.	—मु. ग.
१२।१३।१४			
तथा			
कृष्ण १ भी।			

४४. पशु का क्रय–विक्रय मुहूर्त (निज योनि के नक्षत्र में शुभ) सामान्य रीति

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ १०।११।१२ १३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	गु. शु.	अ. कृ. मृ. आर्द्रा पुन. पु. ह. वि. ज्ये. अभि. पू. ३ ध. श. रे.	वैधृति, व्यतीपात, भद्रा, संक्रान्ति, शकुनि चतुष्पद, नाग, किंस्तुघ्न वर्जित हैं।
			त्यक्त्वाष्टमीममां रिक्तां रोहिणी उत्तरात्रयम् । चित्राख्यं श्रवणं भौमं पशूनां सर्व कर्म च ॥ प्रवेशनिर्गमौ चापि न त्याज्यं निजयोनिभम् । विशाखारेवतीपुष्ये धनिष्ठा शतभेऽश्विभे ॥ हस्ते पुनर्वसुज्येष्ठे पशूनां क्रयविक्रयौ ॥ शुभ लग्न में, अष्टम भाव ग्रह-रहित में, ये कार्य करना शुभ है। —मु. ग.
योनि के नक्षत्र पृष्ठ ४६ में		देखिए मतान्तर से पृष्ठ ४५ भी।	

४५. पशु रखना या निकालने का मुहूर्त (विशेष रीति) योनि के नक्षत्र पृष्ठ ४६ में

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ १०।११।१२ १३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	मृ. चं. बु. गु. शु. श.	रो. उ. ३ चि. श्र. को त्यागकर सर्वनक्षत्र देखिए मतान्तर से पृष्ठ ४४ भी।	अपनी-अपनी योनि के नक्षत्रों में प्रवेश व निर्गम शुभ है। ८ वें ग्रह न हो, एवं २।३ ४।६।७।६।१२ लग्न में शुभ है। न रिक्ताष्टमी दर्शभौमेषु चित्राश्रुतित्र्युत्तरे रोहिणीषु प्रकामम्। पशूना प्रवेशप्रयाणस्थितीश्च प्रकुर्वन्ति धीराः कदाचित्कथञ्चित् ॥ —वृ. ज्यो. सा.

४६ योनि के नक्षत्र

योनि	अश्व	गज	मेष अजा	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक
नक्षत्र	अ. श.	भ. रे.	कृ. पुष्य	रो. मृ.	आर्द्रा मूल	पुन. श्ले.	मघा पूफा.
योनि	गौ-वृष	महिष	व्याघ्र	मृग	मर्कट	नकुल	सिंह
नक्षत्र	उफा उभा.	ह. स्वा.	चि. वि.	अनु. ज्ये.	पूषा. श्र.	उषा.	ध. पूभा.

४७ चरही मु.

स्वामी के हाथों से लम्बाई-चौड़ाई के नाप को जोड़कर ८ से भाग दीजिए—

शेष में फल

१—पशु-हानि
२—पशु-नाश
३—पशु-लाभ—शुभ
४—पशु-क्षय
५—पशु-रोग
६—पशु-वृद्धि—शुभ
७—पशु-भेद
८ पशु-वृद्धि—शुभ

४८. पशु–शिक्षा का मुहूर्त (बैल, भैंसा, हाथी, घोड़ा आदि)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ १०।११।१२ १३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सर्व दिन	अ. कृ. मृ. आर्द्रा पू. ३ ज्ये. ध. श.	रवि–मंगल–बुध के दिन बैल को और शनि के दिन अश्व को काढ़ना (शिक्षा देना) वर्जित है।

४६. नाथना, नाल बाँधना, बधिया (नपुंसक) करने आदि का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की ४।६।८।६ ११।१४	सू. मं. श.	कृ. मृ. पुष्य ह. स्वा. श्र. ध. रे.	१।४।७।१० लग्न में शुभ है।
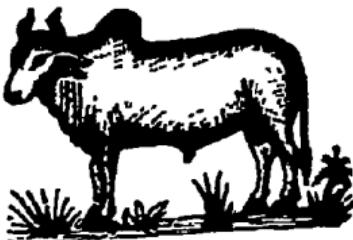
५८. पक्षि-कर्म (तोता, मैना आदि पालने का) मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अ. रो. मृ. आर्द्रा	शुभाहे मन्वौ तिर्यङ् मुखे चोर्ध्वमुखेऽपि भे।
२।३।५।६	चं.	पुन. पु. उ. ३	सारिकाशुकमुख्यानां पक्षिणां कृत्यमुत्तमम् ॥
७।८।१०।११	बु.	ह. चि. स्वा.	—मु. ग.
१२।१३।१५	गु.	अनु. ज्ये. श्र.	
तथा	शु.	ध. श. रे.	
कृष्ण १ भी।			

५१. वीर–साधन (मन्त्र–साधन) मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की ४।६।८।६ ११।१३	सू. चं. बु. गु. शु.	भरणी आर्द्रा मघा मूल	५।११ लग्न हो, बुध से युत या दृष्ट हो, ४ थे शुक्र हो, ८ वाँ भाव ग्रह-रहित हो तो, शुभ है। संक्रान्ति, दीपमालिका, होलिका, दुर्गाष्टमी, ग्रहणदिन, नवरात्र भी शुभ हैं। मघार्द्राभरणीमूले मृगेंऽगे सबुधे वटे। शुद्धाष्टमे भृगौ तुर्ये वीरवेतालसाधनम् ॥ —मु. ग.

५२. मल्ल-क्रिया (कसरत, कुश्ती का) मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की ३।५।८।१० १३।१५	सू. चं. बु. गु. शु.	भ. श्ले. म. पू. ३ ज्ये. मू.	३।६।७।८।११ लग्न में। सू. और शुभग्रह केन्द्र में हों तो, शुभ है। ज्येष्ठार्द्राभरणीपूर्वामूलाश्लेषामघाभिधे। जयापूर्णासु सद्वारे सार्के शीर्षोदयेऽङ्गके॥ सत्खेटैः केन्द्रगैः सार्कैर्मल्लक्रीडा शुभावहा॥ —मु. ग.

५३. सर्प पकड़ने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की ३।४।८।६ १३।१४	सू. मं. श.	भ. आर्द्रा श्ले. म. पू. ३ ज्ये. मू. इन नक्षत्रों में सर्प काटने से अधिक विष भय अथवा मृत्यु होती है।	लग्न से केन्द्र में पापग्रह न होना चाहिए। भरण्यार्द्रामघाश्लेषापूर्वाज्येष्ठाख्यमूलभे । क्रूरेऽह्नि केन्द्रगैः पापैर्हित्वा कालमहिग्रहः ॥ —मु. ग.

४५. सर्व वस्तु विक्रय (बेची हुई वस्तु मात्र लेने-देने) का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	भ. कृ. श्ले.	मित्रान्त्यकृत्तिकाश्लेषाभरणीपूर्विकात्रये ।
२।३।५।६।७	चं.	पू. ३ चि.	विक्रयः सर्वपण्येषु कर्तव्यो न क्रयः शुभः ॥
८।१०।११	बु.		—मु. ग.
१२।१३।१५	गु.		
तथा	शु.		२।५।८ लग्नों में। केन्द्र, धन (द्वितीय) और त्रिकोण में शुभ ग्रह और ३।६।११ वें पापग्रह का होना शुभ है।
कृष्ण १ भी।	श.		
			पृष्ठ ४५ में नोट पढ़िए।

५५. सर्व वस्तु क्रय (खरीदी हुई वस्तु के मूल्य मात्र लेने-देने) का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. चं. बु. गु. शु. श.	अ. चि. स्वा. श्र. श. रे.	शततारारश्विनीचित्राश्रवणस्वातिभेषु च । रेवत्या च क्रयः श्रेष्ठो विक्रयो न कदाचन ॥ —मु. ग.
			नोट—चूंकि खरीदने-बेंचने का मुहूर्त, एक-सा होना चाहिए; क्योंकि एक ही दिन (समय) में एक बेंचता है तो, दूसरा खरीदता है। परन्तु वस्तु के लेने-देने में विक्रय मुहूर्त तथा मूल्य के लेने-देने में क्रय मुहूर्त देखना चाहिए। ऐसा प्रयोग व्यापारी वर्ग में हो सकता है।

४६. भूमि के क्रय-विक्रय का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की ४।६।१० ११।१५ तथा कृष्ण १ भी।	गु. शु.	मृ. पुन. श्ले. म. वि. अनु. पू. ३ मू. रे.	२।४।८ लग्न में। केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह और ३।६।११ वें पापग्रह का होना शुभ है। जीवे शुक्रे च नन्दायां पूर्णायां मूलभे मृगे। पूर्वाश्लेषामघान्ते च विशाखादितये तथा॥ पुनर्भे मुनिभिः प्रोक्तं क्रयविक्रयणम्भुवः। —मु. ग.

५७. ऋण (कर्ज) लेने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७।८ १०।११।१२ १३।१५	चं. गु. शु. श.	हस्त, संक्रान्ति, वृद्धि योग को छोड़कर शेष में शुभ	त्रिकोण में शुभ ग्रह, ८ वाँ शुद्ध हो, चर लग्न (१।४।७।१०) में शुभ है।
मंगल-बुध के दिन, ऋण का लेना–देना निषेध है।		हस्त-रविवार को ऋण न लेना चाहिए।	

५८. ऋण देने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।८ १०।११।१२ १३।१५	चं. गु. शु. श.	अ. मृ. पुन. पु. चि. स्वा. वि. अनु. श्र. ध. श. रे.	चर लग्न में । त्रिकोण में शुभग्रह । ८ वाँ भाव शुद्ध (ग्रह-रहित) होना चाहिए। मंगल-बुध के दिन. ऋण का लेना-देना निषेध है ।
			भ. कृ. रो. आर्द्रा श्ले. म. पू. ३ उ. ३ ह. ज्ये. मू. भद्रा, व्यतीपात, नक्षत्रादिकों में द्रव्य चुरा जाना. व्यापार में द्रव्य लगाना, द्रव्य देना, द्रव्य गाड़ना अथवा किसी प्रकार में द्रव्य लगाने से पुनः द्रव्य (वापिस धन) नहीं मिलता ।

५६. वाणिज्य-कर्म (दूकान प्रारम्भ करने) का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११।१२ १३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. चं, बु. गु. शु. श.	अ. रो. मृ. पुष्य उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. अभि. ध. पूभा. रे.	लग्न मे चं. शु. हों, ८।१२ वें पापग्रह न हो, २।१०।११ वे शुभग्रह हों तो शुभ है। २।३।५ ६।८।१० लग्नों में धनभाव शुभ हो। रोज के नाम से चन्द्र-शुद्धि हो तो, शुभ है। 'रिक्ताभौमघटान्विना' —मुहूर्त चिन्तामणि
		भू-रुदन दिन वर्जित हैं।	भू-रुदन-ज्ञान— मासान्ते दिनसंक्रान्तौ वर्षान्ते च हुताशनौ। अमायां भौमवारे च रोदति पंच दिनानि भूः॥ (देखिए पृष्ठ ६० और ६२ में)

६०. हल चलाने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की ३।५।७।१० ११।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी। भू-शयन तथा भू-रजस्वला के दिन वर्जित हैं।	सू. चं. बु गु. शु.	अ. रो. मृ. पुन. पु. म. उ. ३ ह. चि. स्वा. वि. अनु. ज्ये. मू. श्र. ध. श. रे.	२।३।६।६।१२ लग्न में। पापग्रह निर्बल हों। चं. जलचरराशि के नवांश में हो। चं. शु. बली हों। लग्न पर गुरु की युति या दृष्टि होना चाहिए। हलचक्र (साभिजित्) सूर्यभान् ३ अशुभ ३ शुभ ३ अशुभ ५ शुभ ३ अशुभ ५ शुभ ३ अशुभ ३ शुभ (मु. मा.) मु. चि. तथा मु. ग. के मत से ३ अशुभ ८ शुभ ६ अशुभ ८ शुभ हैं। संक्रान्ति दिन से १।५।१०।११।१६।१८।१६ वें दिन (भू-रजस्वला के कारण) यज्ञ, हवन, कृषि तथा बीज बोने में वर्जित हैं। सूर्य नक्षत्र से ५।७।६ १२।१६।२६ वें चन्द्रर्क्ष में भूशायन होता है।

६१. बीज बोने का मुहूर्त [भू-रजस्वला (पृष्ठ ५६ में) दिन वर्जित हैं]

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अ. रो. मृ. पुन.	लग्न २।३।६।९।१२ शुभ है।
३।५।७।१०	चं.	पु. म. उ. ३ ह.	राहुचक्र राहुभात (मुहूर्त मार्तण्ड) ७ । १२ । ८ अ. शु. अ.
११।१३।१५	बु.	चि. स्वा. वि.	
तथा	गु.	अनु. मू. ध. रे.	राहुचक्र राहुभात् (मु. चि. और मु. ग.) ८ । ३ । १ । ३ । १ । ३ । १ । ३ । ४ अ. शु. अ. शु. अ. शु. अ. शु. अ.
कृष्ण १ भी।	शु.		

भूरुदन में वर्जित कर्म

यात्राभंगं कृषिभगं गृहवाणिज्यनिष्फलम्।
विवाहं क्षौररोगं च मृत्युरेव न संशयः ॥

(देखिए पृष्ठ ५८ और ६२)

बीजोप्ति चक्र सूर्यभात्	३	८	८	८
	शु.	अ.	अ.	शु.

६२. सिचाई का मुहूर्त			६३. घानी पेरने का मुहूर्त
तिथि	वार	नक्षत्र	[सूर्य नक्षत्र से दिन (चन्द्र) नक्षत्र तक]
दोनों पक्ष की	चं.	अ. रो. मृ. पुन.	३—हानि
२।३।५।६	गु.	पु. उ. ३ चि.	३—ऐश्वर्य
७।८।१०।११	शु.	स्वा. वि. अनु.	३—आरोग्य
१२।१३।१५		मू. ध. श.	३—नाश
तथा		पूभा. रे.	३—द्रव्य-लाभ
कृष्ण १ भी।			३—स्वामि-घात
			३—निर्धनता
			३—स्वामि-मृत्यु
		(मु. ग.)	३—सुख

६४. सस्यारोपण (खलिहान रखने का) मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण (देखिए पृष्ठ ५८ और ६० में श्लोक)
दोनों पक्ष की ३।५।७।१० ११।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुन. पु. म. उ. ३ ह. चि. स्वा. वि. अनु मू. ध. श. पूभा. रे.	मासान्त, वर्षान्त, अमा, होलिका, संक्रांति दिन, भौमवार को भू-रुदन होता है। भू-रुदन में यात्रा, कृषि, गृह, वाणिज्य, विवाह, क्षौर, रोग (कार्यों) में हानि होती हैं। पूर्णाश्च गुरुवारे वा पुष्येन सहिते तथा। हसन्ति भूमिभागाश्च श्रवणेन्दुरविहस्तयोः ॥ ५।१०।१५ तिथि, पुष्य गुरुवार, श्रवण के चन्द्र और हस्त के सूर्य में भू-हास्य शुभ है।
'शनिकुजौ विना' (मु. चिं.)		रो. उफा. वि. मू. श. पूभा.	पूर्वाभाद्रपदा मूलं रोहिण्युत्तरफल्गुनी। विशाखा वारुणं चैव धान्यानां रोपणे वराः ॥ —राजमार्तण्ड

६५. अनाज काटने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अ. भ. कृ. रो.	पूर्वोत्तरामघाश्लेषाज्येष्ठार्द्राश्रवणद्वये ।
३।५।७।१०	चं.	मृ. आर्द्रा पुन.	भरणीद्वितये मूले मृगे पुष्ये करत्रये ।
११।१३।१५	बु.	पु. श्ले. मघा	धान्यच्छेदः शुभो रिक्ता हित्वा भौमशनैश्चरौ ॥
तथा	गु.	पू. ३ उ. ३ ह.	—मु. ग.
कृष्ण १ भी।	शु.	चि. स्वा. वि.	
		अनु. ज्ये. मू.	अनाज काटने और खलिहान रखने का मुहूर्त एक-सा होना चाहिए। परन्तु दोनों में प्रारम्भ करने का समय कुछ भिन्न हो सकता है। पहिले सस्यारोपण मुहूर्त करना पड़ता है।
		श्र. ध. रे.	

६६. अन्न विक्रय (कृषक द्वारा अन्न बेंचने का) मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	रो. उ. ३	
२।३।५।६।७।८	बु.	ध. श.	रोहिण्यां विक्रयोऽन्नस्य वनिष्ठाशतभोत्तरे।
१०।११।१२	गु.		—मु. ग.
१३।१५	शु.		

६७. कणमर्दन (माड़ना) मुहूर्त			६८. कोल्हू चक्र—
तिथि	वार	नक्षत्र	सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक। फल—
दोनों पक्ष की	सू.	रो. मृ. म. पूफा.	३—शुभ
२।३।५।६।७	चं.	उफा. ह. स्वा.	५—धान्य वृद्धि
८।१०।११	बु.	अनु. ज्ये. मू.	५—पीड़ा
१२।१३।१५	गु.	उषा. श्र. उभा. रे.	३—नाश
तथा	शु.		३—नाश
कृष्ण १ भी।			८—चरचराहट
			—वृ. ज्यो. सा.

६६. धान्यानयन, फल, पुष्प त्रोटन मुहूर्त			७०. इक्षु रस काढ़ने का मुहूर्त
तिथि	वार	नक्षत्र	सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक। फल—
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ १०।११।१२ १३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सर्व दिन	अ. रो. मृ. पुष्य म. उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. ध.	४··लक्ष्मी प्राप्ति २·· हानि २···लाभ १···क्षय ५··मृत्यु ५··शुभ २ ··पीड़ा ६··धन लाभ —बृ. ज्यो. सा.

७१. सूर्पान्न क्रिया मुहूर्त (उड़ावनी करना)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. चं. बु. गु. शु.	कृ. रो. मृ. उ. ३ चि. वि. अनु. ज्ये. मू. रे.	फल पुष्प वाले अन्न के लिए भौमवार सहित तथा सबों में लग्न १।४।७।८।१०।११।१२ शुभ हैं।

७२. नवीन अन्न, फल, मूल आदि भक्षण का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० १३।१५ तिथिक्षय और भद्रा वर्जित	सू. चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे.	२।३।४।६।७।६।१२ लग्न में शुभयुत या दृष्ट में। विष घटी, क्षयाधिमास, चैत्र, पौष, त्याज्य हैं। वृद्ध, बाल्य के बिना गुरु, शुक्रोदय में शुभ है। नव अन्न—१ व्रीहि २ यव ३ गेहूँ ४ नीवार (पसई) ५ कंगु (काकुन) ६ वैणक ७ शालि (चावल) ८ मूँग ६ उर्द (माष)
वसन्त, शरद ऋतु में			नवान्न चक्र (बुधभात्) वृ. ज्यो. सा. ५ ५ ५ ५ ४ २ १ शुभ अशुभ शुभ हानि शुभ अशुभ शुभ

७३. कोठरी में धान्य रखने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अ. रो. मृ. पुन.	२।३।६।९।१२ लग्न में
२।३।५।७।१०	चं.	पु. उ. ३ ह. चि.	पुनर्भे मृगशीर्षेऽनुराधाश्रवणत्रये ।
११।१३।१५	गु.	स्वा. अनु. श्र.	हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्ये रोहिण्यामुत्तरात्रये ॥
	शु.	ध. श. रे.	गुरौ शुक्रे रवीन्द्वोः सत्कोष्ठादौ धान्यरक्षणम् ॥
			—मु. ग.

७४. बीज-संग्रह मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरणम्
दोनों पक्ष की	बु.	रो. पुन. ह.	२।५।८।११ लग्न में
२।३।५।७।१०	गु.	चि. स्वा.	हस्तत्रये पुनर्वस्वोः रोहिण्यां श्रवणद्वये ।
११।१३।१५	शु.	श्र. ध.	स्थिरे लग्ने शुभे वारे चिचन्द्रे बीजसंग्रहः ॥
			—मु. ग.

७५. धान्य वृद्धि (सवाई आदि पर उधार देने का मुहूर्त)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	अ. रो. पुन. पु.	विशाखारोहिणीज्येष्ठापुनर्भेऽश्विश्रुतित्रये ।
२।३।५।६।७	गु.	उ. ३ स्वा. वि.	त्र्युत्तरे स्वातिपुष्ये तु धान्यवृद्धिः शुभेरिता ॥
८।१०।११	शु.	ज्ये. श्र. ध. श.	—मु. ग.
१२।१३।१५			(ग्रन्थ मे 'शतत्रये' अशुद्ध पाठ है।)
तथा			
कृष्ण १ भी।			

७६. मेथि रोपण मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	चं. बु. गु. शु.	रो. मृ. म. ह. स्वा. मू. उषा. उभा. रे.	मड़नी के बीच में लकड़ी की बल्ली गाड़ना। वट, सप्तपर्ण, अंभारी, शाल्मली, गूलर, आँवला, स्त्री संज्ञक दूधदार वृक्ष की लकड़ी काम में लानी चाहिए। मुहूर्त-मार्तण्ड में मेथि का अर्थ, जुआड़ी (जुआँ) बताया गया है। क्योंकि— "मेथिं क्षीरतरोरुफानुरहितैरुद्वाहभैः रोपयेत्।" नक्षत्र प्रयोग द्वारा मेथि का अर्थ, जुआड़ी (बैलों के कन्धे में लगाने वाली काष्ठ-वस्तु) ही ठीक ज्ञात होता है।

७७. दन्त-धावन (दतून) करने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।४।५।७ ८।१०।१२ १३।१५	चं. मं. बु. गु. शु. श.	सर्व नक्षत्र	पहर भर दिन के बाद, भोजन के बाद, और व्रत के दिन, दतून करना त्याज्य है।

७८. विभाग (वँटवारा) मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१३।१५	सू. चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३ ह. चि. स्वा. श्र. ध. श. रे.	शुभ लग्न में। केन्द्र में शुभग्रह होना चाहिए।

७६. धर्म क्रिया (पुराण, व्रत आदि) मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र ध. श. रे.	बुध या गुरु के नवांश में या गुरु से युत या इष्ट लग्न में। कर्ता की जन्मराशि से गोचर द्वारा (विवाह वत्) गुरु शुद्धि में। गुरु, शुक्रोदय में वृद्ध, बाल तथा क्षयाधिमास के बिना, शुभ है। नास्ति स्त्रीणां पृथग् यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम्। भर्तृशुश्रूषयैवैता लोकानिष्टान् व्रजन्ति हि ॥ —स्कन्दपुराण

८०. शान्ति कर्म, पौष्टिक कर्म मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७ १०।११।१२ १३।१५ तथा कृष्ण १ भी	चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुन. पु. म. उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. घ. श. रे.	२।३।५।६।७।६।१२ लग्न में। १० वें सूर्य, ४ थे चन्द्र और लग्न में गुरु शुभ है। गुरु, शुक्रोदयादि शुद्धि में। किन्तु रोगादि समय में यथा सम्भव उक्त तिथ्यादिकों में करना चाहिए। ११६ वाँ भाव पाप-ग्रह-रहित होना चाहिए।

८१. मन्त्र, यन्त्र, व्रतोपवासादि मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७ १०।११।१२ १३।१५	सू. चं. बु. गु. शु.	अ. मृ. उफा. ह. वि. श्र. ——— अ मृ. पुष्य उ. ३ ह. अनु. रे.	कर्ता के चन्द्र-बल में। चन्द्र-बल (विवाहवत्) प्रीति, सिद्धि, साध्य, शुभ, शोभन, आयुष्मान् योगों में शुभ है। —व्रत परिचय हस्तमैत्रमृगपुष्यत्र्युत्तरा, अश्विपौष्णशुभयोगसौख्यदाः। —मुक्तक संग्रह पत्नी पत्युरनुज्ञाता व्रतादिष्वधिकारिणी। —व्यास

८२. औषधि बनाने तथा सेवन करने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल पक्ष की २।३।५।६।७।८ १०।११।१२ १३।१५	सू. चं. बु. गु. शु.	अ. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे.	३।६।६।१२ लग्न में। केन्द्र तथा ६।७।८।१२ वाँ भाव शुद्ध या शुभ हो। गोचर में गुरु शुभ हो। घात चन्द्रादि का त्याग करे। जन्म राशि से चन्द्र-तारा शुद्धि मे, शुभ है।
अमृत योग विहित		जन्मर्क्ष वर्जित	
भद्रा त्याज्य			

८३. रासायनिक औषधि कर्म मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	अ. कृ. मृ. आर्द्रा	विशाखाकृत्तिकामूले धनिष्ठाश्विकरे मृगे ।
२।३।५।७	बु.	ह. वि. ज्ये.	ज्येष्ठायामार्द्र भे सौम्ये वासरेषु रसक्रिया ॥
१०।११।१३	गु.	मू. ध.	—मु. ग.
	शु.		

८४. वातादि में तैल सेवन मुहूर्त			८५. चीर-फाड़ (आप्रेशन) मुहूर्त
तिथि	वार	नक्षत्र	तिथि, वार, नक्षत्र आदि शुभ।
दोनों पक्ष की ३।४।५ —मु. ग.	चं. बु. श.	भ. कृ. आर्द्रा श्ले. म. ह. वि. मू.	५।६।१४ तिथि
			सू. मं. गु. वार
		जन्मर्क्ष वर्जित	अ. मृ. पुष्य ह. स्वा. अनु. ज्ये. श्र. श. नक्षत्र

८६. सिंगी लगवाने, जुलाब लेने, वमन करने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६ ७।८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. मं. गु.	अ. रो. मृ. पुष्य ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. श्र श.	विरेक, वमन में—चं. शु. वार शुभ। हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्ये शतमे रोहिणीद्वये। श्रवणे चानुराधायां ज्येष्ठायां रक्तमोक्षणम्॥ गुरुभौमार्कवारेषु कार्यं शुभतिथौ तथा। विरेकवमने शुक्रे चन्द्रे चैवोक्तभादिषु॥ —मु. ग.

८७. तप्त लोह दाह मुहूर्त (विपूचिका, त्रिदोषादि में)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अ. कृ. आर्द्रा	लग्न १।५।८।१०।११ शुभ हैं।
४।६।१४	मं.	श्ले. चि. त्रि.	शतचित्राश्विनीमूले विशाखाकृत्तिकार्द्रभे।
		ज्ये. मू. श.	ज्येष्ठाश्लेषा कुजेऽर्केऽह्ने क्रूरे लोहाश्मतापनम्॥
			—मु. ग.
			(ग्रन्थ मे 'लोहास्यतापनम्' भ्रष्टपाठ है)

८८. रोग में अशुभ तिथ्यादि			८९. सर्प काटने में
तिथि	वार	नक्षत्र	अशुभ नक्षत्र
दोनों पक्ष की	सू.	भ. कृ. आर्द्रा	भ. कृ. आर्द्रा श्ले. म. वि. मू.
१।४।६।८।९	मं.	श्ले. म. पू. ३	(पृष्ठ ५२ में भी देखिए)
१२।१४।१५	श.	स्वा. वि. ज्ये.	मघाविशाखानलसार्पयाम्य- नैर्ऋत्यरौद्रेषु च सर्पदष्टः ।
		ध. श. उभा	सुरक्षितो विष्णुरथेन सोऽपि प्राप्नोति कालस्य मुखं मनुष्यः ॥
घात चक्र तथा		—मु. ग.	—पीयूष
जन्मस्थ ग्रह			
का भी विचार			
करना चाहिए			(विष्णुरथ = गरुड़)

६०. रोग निर्मुक्त स्नान मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की ४।६।१४	सू.	अ. भ. कृ. मृ.	१।४।७।१० लग्न में। केन्द्र त्रिकोणाय (१।४।५।७।६।१०।११ वें भाव) में पापग्रह शुभ। भद्रा, वैधृति, पात, व्यतीपात, संक्रान्त्यर्क्ष शुभ। १० वें शुभग्रह, ८ वें शुभ-पाप युत, चन्द्र, तारा की शुद्धि में शुभ। स्नान के वाद (आरोग्यार्थ) दान करना चाहिए।
	मं.	आर्द्रा पुष्य पू. ३	
	बु.	ह. चि. वि. अनु.	
	गु.	ज्ये. मू. श्र.	
रात्रि में भी शुभ	श.	ध. श.	

९१. रोगोत्पत्ति में पीड़ा की दिन संख्या (—मु. ग., मु. चि.)

कष्ट दिन	७	६	११	१५	२०	३०	अधिक दिन	मृत्यु
रोगारम्भ का नक्षत्र	रो.	अ.	भ.	ह.	म.	मृ.	अनु.	आर्द्रा
	पुन.	कृ.	चि.	वि.		उषा.	रे.	श्ले.
	पु.	मू.	श्र.	ध.				पू. ३
	उफा.		श.					स्वा.
	उभा.							ज्ये.

रोगोत्पत्ति के दिन वाले नक्षत्र द्वारा पीड़ा की दिन संख्या का विचार किया जाता है।

६२. रोगावली चक्रम्			चरणों में कष्ट दिन				
नक्षत्र	कष्ट दिन	दान	प्र.	द्वि.	तृ.	च.	मन्त्र
अ.	दिन ६	भोजन	६	११	१०	२०	मृत्युञ्जय
भ.	दिन ११	गो अन्न	०	८०	४०	११	यमायत्वा
कृ.	दिन ६	सुवर्ण	६	११	१६	२८	अग्निमूर्धा
रो.	दिन ७	घृत	७	६	१८	३०	ब्रह्मयज्ञेति
मृ.	दिन ३०	तिल	६	५	७	१०	इमं देवेति
आ.	मृति	गो	०	१८	०	०	नमस्ते रुद्र
पुन.	घटी ७	पीतल	७	१४	२	२१	अदितिर्द्यौः
पु.	दिन ७	तैलान्न	७	७	२०	२१	बृहस्पते

पृष्ठ ८६ का शेष

श्ले.	मृति	गोऽजादि	०	०	४१	०	नमोस्तु सर्पेभ्यो
म.	दिन २.	वस्त्राज्य	१५	७	१७	२०	पितृभ्यः
पूफा.	मृति	भोजन	०	१५	०	३०	भगप्रणेति
उफा.	घटी ७	अन्न	७	१४	७	६०	दध्यावर्द्धेति
ह.	दिन १५	तिल	१५	१७	१५	०	उदुत्यं जातवेदसे
चि.	दिन ११	दूध	११	६	६	१६	त्वष्टा तुरीये
स्वा.	मृति	गो घृत	६०	१७	३०	०	वायोरग्ने
वि.	दिन १५	गो स्वर्ण	१५	०	४	१३	इन्द्राग्नी
अनु.	स्थिर	गो घृत	६०	१२	३६	३०	नमो मित्रेति
ज्ये.	मृति	तिल	५६	६	६	४	त्रातारमिन्द्रेति

पृष्ठ ८७ का शेष

मू.	घटी ६	रौंप्य	०	६	१५	६	मातापुत्रेति
पूषा.	मृति	गो मुक्ता	०	१५	२४	१०	आपोधर्मेति
उषा.	मास १	भोजन	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति
श्र.	दिन ११	श्रीफल	६०	२४	६	६	विष्णोररार्डिति
ध.	दिन १५	अश्वअन्न	१५	४	२०	२१	वसो: पवित्रेति
श.	दिन ११	भोजन	०	४५	३	२	वरुणस्तम्भेति
पूभा.	मृति	भोजन	०	१२	२१	१६	अहिर्बुध्नेति
उभा.	दिन ७	अन्न	१०	२	६	१५	अहिर्बुध्नेति
रे.	स्थिर	वृषभ	१८	१०	१६	२०	पूषन्त वव्रते

६३. पथ्य मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. चं. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुन. पु उ. ३ ह. स्वा. त्रि. अनु. श्र. ध. श.	शुभ लग्न में। केन्द्र में शुभग्रह होना चाहिए।

६४. रोग से निर्मुक्त होकर बाहर जाने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	अ. रो. मृ. पुन.	२।३।४।६।७।६।१२ लग्न में शुभ है।
२।३।५।७	बु.	पु. उ ३ ह.	सद्वारे गमनोक्तर्क्षे सत्तिथौ शोभने विधौ।
१०।११	गु.	अनु. श्र. ध.	सल्लग्ने रोगमुक्तस्य बहिर्निःसरणं शुभम्॥
	शु.	श. रे.	—मु. ग.
		चन्द्र की शुभता मे	

६५. हवन में अग्नि-चक्र

[भू-रजस्वला (पृष्ठ ५६) वर्ज्य है।]

—मु. ग.

	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.	ग्रह के मुख में आहुति
सूर्यभात्	३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
	अ.	शु.	शु.	अ.	शु.	अ	शु.	अ.	अ.	फल (शुभ-अशुभ)

अग्निवास—शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि स वर्तमान तिथि तक गिनकर उसमें १ जोड़कर और रविवारादि वार जोड़कर ४ से भाग दे, तो अग्निवास, शेष तीन और शून्य में, पृथ्वी में शुभ, शेष एक में स्वर्ग में प्राणनाशक, शेष दो में पाताल में धन-नाशकारक है।

विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चूडोपनीते ग्रहणे युगाद्यैः।
दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्॥

नित्य, नैमित्तिक, जन्मसमय, दुर्गा पूजा, यात्रा, विवाह, ग्रहण, रोगपीड़ा, यज्ञोपवीत, विवाहआदि में अग्निवास का विचार नहीं होता।

६६. दीक्षा मुहूर्त [भरणी-ज्येष्ठा में भी राम-मन्त्र-दान शुभ है।]

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल २।३।५ ७।१०।११।१२ कृष्ण २।३।५ भी	सू. चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुन. पु. मघा पू. ३ उ. ३ ह. चि. स्वा. वि. अनु. मू. श. रे.	सौरमास वै. श्रा. आश्वि. कार्ति. मार्ग. माघ, फाल्गु. शुभ हैं। आषाढ़ में श्री–मन्त्र, चैत्र में गोपाल–मन्त्र देना, शुभ है। २।३।४।५।६।७।९।१२ लग्न व नवांश शुभ है। केन्द्र–त्रिकोण में शुभग्रह, ३।६।११ वें पापग्रह, गुरु या शुक्र से दृष्ट-युक्त लग्न में, ८ वाँ शुद्ध, २।६।११ वें सू., २।३।६।११ वें चं., ३।६।१०।११ वें मं.–बु., केन्द्र-त्रिकोण में गु., ३।६।९।१२ वें शुक्र, २।४।८।११ वें शनि शुभ हैं।
१३ तिथि में विष्णु-मन्त्र-दान शुभ है।		त्रयोदश पक्ष, क्षयाधिमास त्याज्य	त्रिषडेकादशे सौरिर्व्यये षष्ठे च भार्गवः। सबले धर्मपे जीवे केन्द्रे दीक्षा विरक्तिकृत् ॥
चन्द्र–तारा–नुकूल में			—शेष पृष्ठ ६३ में

पृष्ठ ६२ का शेष

प्रीति, आयुष्मान्, सौभाग्य, शोभन, धृति, वृद्धि, ध्रुव, हर्षण, वरीयान्, शिव, सिद्धि, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्म, ऐन्द्र योगों में और बव, बालव, कौलव, तैतिल करण। में दीक्षा लेना शुभ है। शिव-मन्त्र में चर, विष्णु-मन्त्र में स्थिर और शक्ति-मन्त्र में द्विस्वभाव लग्न शुभ हैं।

सूर्यर्क्ष से चन्द्रर्क्ष ४।६।१४।१७।२१।२७ वाँ शुभ है। ग्रहण, संक्रान्ति, पूर्वाह्न मे, भद्रा रहित, वृद्ध-बाल्य के बिना गुरु-शुक्रोदय में, चन्द्र-तारा शुद्धि में, शनि बली में, युगादि, मन्वादि तिथि और दुर्गा वेला में दीक्षा लेना शुभ है। गोचर से ३।६।१०।११ वाँ शनि शुभ (बली) होता है। रोज के नाम-राशि से विचार करना चाहिए।

षष्ठी भाद्रपदे मासि इषे कृष्णा चतुर्दशी। कार्तिके नवमी शुक्ला मार्गे शुक्ल-तृतीयका। पौषे च नवमी शुक्ला माघे शुक्लचतुर्थिका। फाल्गुने नवमी शुक्ला चैत्रे कामचतुर्दशी॥ वैशाखे चाक्षया चैव ज्येष्ठे दशहरा तिथिः। आषाढे पञ्चमी शुक्ला श्रावणे कृष्णपंचमी। एतानि देवपर्वाणि तीर्थकोटिफलं लभेत्॥ अत्र दीक्षा प्रकर्तव्या न मासं च परीक्षयेत्। न वारं न च नक्षत्रं न तिथ्यादिकदूषणम्। न योगं करणं

—शेष पृष्ठ ६४ में

पृष्ठ ६२ का शेष

चेति शंकरेण च भाषितम् ।। शुक्लपक्षे विशेषेण तत्रापि तिथिरष्टमी। तत्रापि शारदी पूजा यत्र दुर्गा गृहे गृहे। तत्र दीक्षा प्रकर्तव्या मासर्क्षादीन्न शोधयेत्। —रत्नावली

चैत्रे त्रयोदशी शुक्ला वैशाखैकादशी सिता। ज्येष्ठे च नवमी कृष्णा आषाढे नागपंचमी। —सनत्कुमार-तन्त्र

(ज्येष्ठे कृष्णे चतुर्दशीति पाठः)

श्रावणैकादशी भाद्रे रोहिणी संयुताष्टमी। आश्विने च महापुण्या महाष्टम्यप्यभीष्टदा। कार्तिके नवमी शुक्ला मार्गशीर्षे तथा सिता। षष्ठी चतुर्दशी पौषे माघेऽप्येकादशी सिता। फाल्गुने च सिता षष्ठी चेतिकालविनिर्णयः। —तन्त्रसार

सोमग्रहे विष्णुमन्त्रं सूर्ये शाक्तं न चाचरेत्। —मत्स्यसूक्त

पुण्य-क्षेत्र में तिथ्यादि का विचार नहीं। गुरु, कृपा करके जिस समय चाहे, मन्त्र दे सकता है; उस समय तिथ्यादि का कोई विचार नहीं होता।

९७. मेष संक्रान्ति के इष्टकाल द्वारा लग्न ही 'जगल्लग्न' होती है। फल—

जन्मलग्नाद्वर्षलग्नाज्जगल्लग्नं यदा भवेत्। अष्टमे द्वादशे वापि सर्वेषान्न शुभावहः॥ अष्टमे द्वादशे वापि भवेत्पुरराशितः। जगल्लग्नं तदा हानिस्तत्पुरस्य न संशयः॥	जन्म लग्न या वर्ष लग्न या ग्राम-राशि से ८ वें या १२ वें जगल्लग्न हो तो, उस व्यक्ति या उस ग्राम के लिए हानि-कारक फल होता है।

जन्म-लग्न द्वारा जगल्लग्न का फल—

१—कुटुम्बवृद्धि
२—धनलाभ
३—देह सुख
४—दुःख और दरिद्रता
५—लाभ और सुख
६—धनलाभ
७—धर्म और धन का लाभ
८—कष्ट या मृत्यु
९—स्त्री का सुख
१०—अरिपराजय
११—पुत्र की प्राप्ति
१२—मित्र का सौख्य

६८. क्षौर कार्य, नख कार्य, दन्त कार्य मुहूर्त (—मु. चि.)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१२।१३ भद्रा वर्जित	चं. बु. गु. शु.	अ. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. ज्ये. उषा. श्र. ध. श. रे. — राजसेवक, नट और राजा नित्य कर सकता है; किन्तु राजा नित्य सम्पूर्ण क्षौर न करावे।	दीक्षा, यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म, गर्भाधान, अग्न्याधान, बन्धन से मोक्ष में, विप्र एवं राजा की आज्ञा से, सर्वदा क्षौर कार्य शुभ है। तीर्थ में चतुर्दशी को, सन्यासी ३० तिथि को, पुण्य के दिन, सभी को क्षौर श्रेष्ठ है। सू. मं. श. वार, जन्मर्क्ष, अनु. उफा. कृ. रो. म. नक्षत्र, क्षौर से नवम दिन, उपवासी, व्रत के दिन, आन्हिक कर्म के बाद, ४।६।८।९।१४।१५ ३० तिथि, संक्रान्ति, श्राद्ध दिन, रात्रि, सौभाग्यवती स्त्री (५० वर्षायु तक), बिना आसन, —शेष पृष्ठ ६८ में

कुक्कुटवत् आसन, संग्राम में, यात्रा के दिन, सन्ध्या समय, १।५।८।१०।११ लग्न तथा नवांश, स्नान तथा भोजन के बाद, उबटन के बाद, क्षौर कर्म निषेध है। थोड़ी अवस्था वाला, राजा, योगीन्द्र, गर्भिणी पति, जीवित पिता वाला, सम्पूर्ण मुण्डन न करावे। गर्भिणी के पति को (सीमन्त के उपरान्त) विना आवश्यकता के शव उठाना, तीर्थ स्नान, वृक्ष बोना या काटना, विदेश यात्रा, समुद्र स्नान, क्षौर कर्म आदि त्याज्य हैं। किन्तु, गंगा और भास्कर-क्षेत्र में, माता-पिता के शव काल में और सोमपान में, सभी को सर्वदा, क्षौर ग्राह्य है।

यदि वर्ष के अन्दर क्षौर दिन मे—

६	वार	कृ.
८	,,	रो.
५	,,	म.
४	,,	उफा.
३	,,	अनु. आदि नक्षत्र

आ जावे तो, एक वर्ष के अन्दर मृत्यु या कष्ट होना, सम्भव है।

क्षौर में दिन के फल (ज्यो. सा.)

सू.	१ मास	की आयुहानि या दुःख ×
चं.	७ ,,	की आयुवृद्धि या सुख
मं.	८ ,,	की आयुहानि या दुःख ×
बु.	५ ,,	की आयुवृद्धि या सुख
गु.	१० ,,	की आयुवृद्धि या सुख
शु.	११ ,,	की आयुवृद्धि या सुख
श.	७ ,,	की आयुहानि या दुःख ×

६६. प्रेत क्रिया, काष्ठ-संग्रह, खाट बुनाना, घर छवाना आदि के मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	काष्ठस्थापनमें काष्ठचक्र, खाट में खट्वाचक्र देखो
दोनों पक्ष की १।२।३।५।६।७ ८।१०।११।१२ १३।१५	सर्व दिन	अ. मृ. आर्द्रा पुष्य, श्ले. ह. स्वा. मू. श्र.	प्रेतक्रिया, दक्षिणयात्रा, खाट बुनाना, घर छवाना, ईंधन रखना, पंचक में त्याज्य हैं। कुम्भ-मीन के चन्द्र में पंचक होता है।
		मं. को घर छवाना, बु. को शय्या बुनाना, गु. को दक्षिण यात्रा वर्जित हैं।	काष्ठ—चक्र सूर्यर्क्ष से ६ – ६ – ४ – ८ – ४ चन्द्रर्क्षमें शु. अ. शु. अ. शु. फल
खट्वा चक्र सूर्यभात् ७।३।१३।४ शु. अ. शु. अ.		मृतपक्ष में दक्षिण यात्रा करना अशुभ है।	तत्काल प्रेतकार्य करने में मुहूर्त नहीं देखा जाता। पंचक में प्रेत क्रिया की शान्ति, कर्मकाण्ड पद्धति से करनी चाहिए।

१००. त्रिपुष्कर योग	१०१. द्विपुष्कर योग	फल
दोनों पक्ष की १।२।६।७।११।१२ तिथि	दोनों पक्ष की १।२।६।७।११।१२ तिथि	त्रिपुष्कर में तिगुना और द्विपुष्कर में दुगुना शुभ-अशुभ फल होता है। ये दोनों योग वस्तु-विनाश, वस्तु-प्राप्ति, मृत्यु और जीवन में विचारना चाहिए।
सू. मं. गु. श. वार	सू. मं. गु. श. वार	
कृ. पुन. उफा. वि. उषा. पूभा. नक्षत्र	मृ. चि. ध. नक्षत्र	

१०२. नारायण बलि मुहूर्त

श्रेणी	उत्तम	मध्यम	
तिथि	कृष्ण पक्ष की २।३।५।७।८।१०।१२।१५	कृष्ण पक्ष की ४।६	त्रिपुष्कर योग, न्यूनाधिमास, १ वर्ष बाद, दक्षिणायन, व्यतीपात, परिघ, वैधृति योग, गुरुशुक्रास्त, भद्रा, शुक्लपक्ष, जन्म और प्रत्यरि तारा तथा कर्ता की राशि से ४।८।१२ वाँ चन्द्र त्याज्य हैं। आशौच के बाद ही मुहूर्त देखा जाता है। आशौच में तो, यथा-सम्भव करना चाहिये।
वार	सू. चं. गु. वार	बुधवार	
नक्षत्र	श्र. पुष्य, ह. स्वा. श्र.	रो. पुन. पूफा. उ. ३ और वि. का पूर्वार्ध तथा अनु.	
शेष में नारायण बलि करना अशुभ है।			

१

१०३. तेल लगाने का मुहूर्त			तिथि १मे अनपत्य, २मे अपत्नीक, १०मे निर्धन, १३में सर्वनाश
तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की ३।४।५।११ १२।१४	चं. बु. श.	सभी नक्षत्र	शनिवार को षष्ठी हो तो शुभ, नित्य, उत्सव, वातरोग, सुगन्धित तेल, मंत्र युत तेल, सरसों का तेल, औषधि तेल, कभी भी लगा सकता है।
ग्रहण तिथि, भद्रा, संक्रान्ति त्याज्य हैं		संवत्सरारम्भ, वसन्तारम्भ, सूतकान्त, महोत्सव, दीपोत्सव, चतुर्दशी, होलिकोत्सव के दिन मुहूर्त का विचार नहीं किया जाता।	वार में संयोग सू.—पुष्प मं.—मृत्तिका (अत्यल्प) गु.—दूर्वा शु.—गोबर (अत्यल्प) तेल में डालकर लगाने से कोई दोष नहीं होता।

१०४. मार्जनी कृत्य	१०५. चुल्ही कृत्य	
सूर्यर्क्ष से (वृहज्जातक) ३ – २ – ७ – ३ – ६ – ६ अ. शु. अ. शु. अ. शु. अग्निदाह, धान्यदायक, व्यथा, सम्पदा, शत्रुवृद्धि, धनलाभ	दोनों पक्ष की २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियाँ	चुल्ही चक्र सूर्यर्क्ष से (प्रथम) ६ – ३ – ६ – २ – ७ शु. अ. शु. अ. शु.
	चं. बु गु. शु. वार	द्वितीय ६ – ४ – ८ – ५ – २ – २ शु. अ. शु. अ. शु. अ.
अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. अनु. श्र. नक्षत्र मार्जनीबन्धन में शुभ हैं। रिक्ता, सू. मं. वार, ८।११।१२ लग्न, मार्जनी कृत्य में त्याज्य हैं।	अ. रो. आर्द्रा, पुष्य, पू. ३ उ. ३ नक्षत्र	तृतीय ४ – ४ – ६ – ४ – ५ – ४ नाश, सुख, दरिद्र, सुख, स्त्रीनाश, पुत्रसुख

१०६. गोद लेने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११।१२ १३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. सं. गु. शु.	अ. पुष्य, ह. चि. स्वा. वि. अनु. ध.	ग्रहीता तथा बालक की नामराशि व जन्मराशि से मैत्री होना चाहिये॥ बालक के भाग्य की प्रबलता में। लग्न २।३ शुभ हैं॥

१०७. राज्याभिषेक (वसीयतनामा) मुहूर्त			क्षयाधिमास त्याज्य]
तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११।१२ १३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	मं. बिना सर्व दिन	अ. रो. मृ. पुष्य उ. ३ ह. चि. अनु. ज्ये. श्र. रे.	लग्न ३।५।६।७।८।११ में। ग्रहीता की जन्म राशि से ३।६।१०।११ वीं पूर्वोक्त लग्न में। लग्न से १।८।४।५।७।९।१०।११ वें शुभ-ग्रह, ३।६।११ वें पापग्रह, सू. मं. लग्नेश, राज्येश, जन्म-लग्नेश बली हो। चैत्र छोड़ उत्तरायण मे, चं. गु. शु. के उदय में तथा शुद्ध एवं बली हों तो, शुभ है।
	रात्रि त्याज्य	लग्न से १।२।४ ५।७।८।१०।१२ वें पापग्रह हो तो, अशुभ है।	(१) लग्न से—१।५।९ वें गु., ६ ठे मं., १० वें शु. शुभ हैं। (२)—३ रे. श., ११ वें सू. ४-१० वें गु. शुभ हैं।

५

१०८. सन्यास धारण मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।८।१० ११।१२	चं. बु. गु. शु.	रो. उ. ३	लग्न २।५।८।११ शुभ हैं। ६।१२ वें शुक्र हो और पापग्रह बलहीन हों तो, शुभ है। ३।६।११ वें शनि, ६।१२ वें शुक्र, बलिष्ठ धर्मेश और गुरु केन्द्र में हो तो दीक्षा, विरक्तिकारक होती है।

१०६. पुनर्विवाह मुहूर्त			(सर्व मास शुभ हैं)
तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
सर्व तिथि	सर्व दिन	रो. मृ. म. उ. ३ ह. अनु. मू. स्वा. रे.	"न शुक्रास्तादिकं चिन्त्यं शुद्धिवेधादिकं तथा। पुनर्भवासंवरणे न मासतिथिशोधनम् ॥"
		रुद्रपट्ट शुद्धि सूर्यर्क्ष से ४।११।१८।२५ वें नक्षत्र में अपत्य-नाश होता है शेष (अन्य) में शुभ है।	ब्रह्मपट्ट शुद्धि सूर्यर्क्ष से मृत्यु, धन, मृति, पुत्र, मृति, दुर्भग, लक्ष्मी, उन्नति ३ – ३ – ६ – ३ – ३ – ३ – ३ – ३ अ. शु. अ. शु. अ. अ. शु. शु.

११०. लवण कर्म मुहूर्त (नमक निर्माण कार्य)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।४।५।७।८ ६।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	श.	भ. रो. आर्द्रा	गोचर द्वारा शनि शुभ होना चाहिए। दिन का समय होना चाहिए। लवणारम्भकृत्यन्तु भरणी रोहिणी शिवे। शनिवारे दिवाश्रेष्ठ जन्मराशेः शनेर्बले ॥ —मु. ग.

१११. बाजीगर (शैलूष) कर्म मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र
दोनों पक्ष की	सू.	रो. आर्द्रा, पुष्य,
१।२।३।५।६।७	चं.	उ. ३ चि. श्र.
८।१०।११।१२	बु.	ध. श.
१३।१५	गु.	
	शु.	

११२. पशु के खो (गुम हो) जाने पर विचार

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र में		
प्रथम ९	नक्षत्र हो तो,	वन में भ्रमण
पुनः ६	"	ग्राम के समीप में
" ७	"	घर में आगया है।
" २	"	न मिलेगा
" ३	"	मर गया था न मिलेगा

प्रश्न के समय, सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनकर, वर्तमान नक्षत्र (अंक) द्वारा विचार करना चाहिए।

११३. तैलिक यन्त्र (कोल्हू) कर्म मुहूर्त (सुगन्धित तेल बनाना)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	अ. पुन. पु. ह.	पृष्ठ ६५ में कोल्हू-चक्र भी देखिए।
२।३।५।६।७	बु.	चि. ज्ये. अनु.	धनिष्ठाश्विकरेचित्रानुराधा पुष्यमे तथा।
८।१०।११	गु.	ध. रे.	ज्येष्ठायाञ्च पुनर्वस्वौ रेवत्यां शुभवासरे ॥
१२।१३।१५	शु.		तैलयन्त्रक्रिया कुर्यात्तैलगन्धादिके तथा।
तथा			—मु. ग.
कृष्ण १ भी।			

११४. कुम्भकार कृत्य मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	रो. मृ. पुन. पु.	लग्न १।४।७।१० में शुभ है।
२।३।५।६।७	चं.	ह. चि. स्वा	पुनर्वसुद्वये हस्तत्रयेऽन्त्ये रोहिणी मृगे।
८।१०।११	बु.	अनु. ज्ये. श्र. रे.	अनुराधाश्रवज्येष्ठा सद्यूर्ये सौम्यवासरे ॥
१२।१३।१५	गु.		तथा चरोदये प्रोक्ता कुम्भकारक्रिया बुधैः ॥
तथा	शु.		—मु. ग.
कृष्ण १ भी।			

११५. काष्ठ (शिल्पकार) कृत्य मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	अ. रो. मृ. पुन.	हस्तषट्काश्विनी पुष्ये रेवत्या श्रवणत्रये।
२।३।५।७	बु.	पु. ह. चि. स्वा.	पुनर्भे रोहिणीयुग्मे शिल्पकारंक्रियोत्तमा ॥
१०।११।१३	गु.	वि. अनु. ज्ये.	—मु. ग.
तथा	शु.	श्र. ध. श. रे.	
कृष्ण. १-भी।	श.		

११६. स्वर्णकार कृत्य मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अ. कृ. मृ. पुन.	लग्न २।३।४।६।७।६।१२ में शुभ है।
२।३।५।७	चं.	पु. ह. चि. स्वा.	श्रवत्रयेऽश्विनी पुष्ये मृगे हस्तचतुष्टये।
१०।११।१३	मं.	वि. श्र. ध. श.	कृत्तिकाया पुनर्वस्वौ शुभे लग्ने तिथावपि॥
तथा	गु.		हेमकारक्रिया शस्ता हित्वा बुधशनैश्चरौ।
कृष्ण १ भी।	शु.		—मु. ग.

११६. मणिहार (मनिहार), लौहकार और पाषाणकार कृत्य मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	भ. कृ. रो.	लग्न २।५।८।११ में शुभ है।
२।३।५।७।१०	मं.	आर्द्रा, चि. स्वा.	स्वातौ जेष्ठाद्वये मूले चित्रार्द्राभरणीत्रये।
११।१२।१३	श.	ज्ये. मू.	मणिलौहाश्मनां कृत्यम्पापे चाह्निस्थिरोदये ॥
			—मु. ग.

११८. नापित कृत्य मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	अ. मृ. पुन. पु.	ज्येष्ठा हस्तत्रये कर्णत्रितयेऽश्विमृगेऽन्त्यभे ।
२।३।५।७।१०	बु.	ह. चि. स्वा. ज्ये.	पुनर्वसुद्वये हित्वा रिक्तापष्ठ्यष्टमीतिथीन् ॥
११।१२।१३।१५	गु.	श्र. ध. शत. रे.	सद्वारे नापितानां च क्षुरादिसकलाः क्रियाः ।
तथा	शु.		—मु. ग.
कृष्ण १ भी ।			

११८. आभीर जन (अहीर = ग्वाला) कृत्य मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. चं. बु.	अ. मृ. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. श्र. ध. श. पूभा. रे.	विशाखायां पुनर्भेऽन्त्ये ज्येष्ठा हस्ताश्विनीमृगे। पूभाकर्णत्रये पुष्ये शेऽब्जेऽर्के वल्लवक्रियाः ॥ —मु. ग.

११६. चौर कृत्य (गुप्तचर कार्य) मुहूर्त (शुभ शकुन में)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनो पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	मं. श.	भ. कृ. आर्द्रा श्ले. म. पू. ३ ज्ये. मू. वि.	लग्न से १-१० वें भाव में मंगल हो तो, शुभ है।
			चोर के लिए इस मुहूर्त के बताने में राज्य-बन्धन है; किन्तु गुप्तचर विभाग के जन को, यह मुहूर्त बताना, आवश्यक है।
कृष्ण पक्ष में विशेष शुभ		—मु. ग.	

१२०. बाग लगाने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७ १०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुष्य, उ. ३ ह. चि. वि. अनु. मू. अभि. श. रे.	लग्न में चन्द्र या जलचर राशि होना चाहिए। लग्न २।३।५।६।७।६।११।१२ में, उत्तरायण तथा गुरु, शुक्रोदय में शुभ है। अभिजित नक्षत्र मान—उत्तराषाढ़ का चतुर्थपाद और श्रवण के आदि पाद का तृतीयांश के लगभग तक (राश्यादि ६।६।४०।० से ६।१०।५३।२० तक)।

१२१. सेतु-बन्धन मुहूर्त (उत्तरायण तथा गुरु, शुक्रोदय में)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. मं. गु.	रो. मृ. उ. ३ स्वा.	त्र्युत्तरे रोहिणी स्वाती मृगेऽर्के मंगले गुरौ। सेतूनां बन्धनं शस्तं शुभे लग्ने शुभेक्षिते ॥ —मु. ग.
		भूशयन सूर्यर्क्ष से ५।७।६ १२।१६।२६ वें चन्द्रर्क्ष में होता है।	भूशायन में सेतु-बन्धन करना, वर्जित है।

१२२. ईंट, चूना, सुरखी, सीमेन्ट आदि बनाने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	१२३. ईंट पकाना और कोयला बनाना
दोनों पक्ष की २।३।५।७ १०।११।१२ १३।१५	सू. गु. श.	रो. पुष्य, उ. ३ ह. ज्ये. श्र. रे. लग्न २।५।८।११ में शुभ है।	दोनों पक्ष की ४।६।१४ तिथि, सूर्य, मंगल, शनि के दिन, भरणी कृत्तिका, मघा, पूर्वात्रय और विशाखा नक्षत्र में शुभ है।

१२४. गृहारम्भ मुहूर्त

(नित्य के नामराशि द्वारा विचार)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७ १०।११।१२ १३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	चं. बु. गु. शु. श.	रो. मृ. पुन. पुष्य उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे.	लग्न २।३।५।६।६।१२ में। दशम शुद्ध, ८।१२ वें शुभग्रह और ८ वें पापग्रह न हो, गोचर में सू. चं. गु. शु. बली हों तो, शुभ है।
भूशयन वर्जित		स्थिर-द्विस्वभाव लग्न में गृहारम्भ शुभ है। शेष पृष्ठ १२१–१२२–१२३ में	(क)—पूर्व-पश्चिम द्वार का गृहारम्भ— ११ के सूर्य फाल्गुन में शुभ ४–५ ,, श्रावण ,, १० ,, पौष ,, (ख)—उत्तर-दक्षिण द्वार का गृहारम्भ— १।२ के सूर्य वैशा. में शुभ ७।८ ,, मार्ग. ,,

पृष्ठ १२० का शेष—

मेष चैत्र में, वृष ज्येष्ठ मे, कर्क आषाढ़ में, सिंह भाद्रपद में, तुला आश्विन में, वृश्चिक कार्तिक में, मकर पौष में, मकर-कुम्भ माघ में भी गृहारम्भ शुभ है (आवश्यकता में ग्राह्य हैं)। नामराशि से २।४।६।१०।११ वीं ग्रामराशि हो तो, शुभ है।

द्वार–दिशा में त्याज्य तिथियाँ

दिशा					
पूर्व ··	पूर्णिमा	से	कृष्णाष्टमी		तक
उत्तर ··	कृ. ६	,,	कृ.	१४	,,
पश्चिम ··	अमा.	,,	शु.	८	,,
दक्षिण ··	शु. ६		शु.	१४	,,

ग्राम वास चक्र

(ग्राम के नक्षत्र से वास-कर्ता का नक्षत्र)

७	७	७	७
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

गुरु-शुक्रास्त, चैत्र शुक्ल, देवशयन, आषाढ़, ज्येष्ठ, माघ मास, वृश्चिक, कुम्भ लग्न, अर्धरात्रि का समय, अग्निपंचक, अग्निवाण, भूशयन, विष्कुम्भ, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतीपात, परिघ, वैधृति योग, वास्तु–चक्र अशुद्धि, वृष–चक्र अशुद्धि, पंचक में पूभा. मात्र, नक्षत्र-ग्रह-वार, गृहारम्भ में त्याज्य हैं।—शेष पृष्ठ १२२ मे देखिए।

वृषचक्र (साभिजित् सूर्यभात्)	देवशयन—आपाढ़ शु. ११ से कार्तिक शु. ११ तक।
३—शिर में = दाह ४—अग्रपाद में = शून्यता ४—पृष्ठपाद में = स्थिरता ३—पृष्ठ में = श्रीलाभ ४—दक्षिणकुक्षि में = लाभ ३—पुच्छ में = स्वनाश ४—वामकुक्षि में = दरिद्रता ३—मुख में = पीडा	अग्निपंचक—गत तिथि में लग्न मिलाकर ९ का भाग देने से शेष में २ बचे तो, अग्निपंचक (अग्निभयकारक) होता है। अग्निबाण—राशि के ३।१२।२१।३० वें अंश पर सूर्य हो तो, अग्निबाण होता है। भूशयन—सूर्यभात् ५।७।९।१२।१९।२६ वें चन्द्रर्क्ष में। संक्रान्ति से—५।७।९।११।१५।२०।२२।२३।२८ वें दिन भूशयन होता है।
वास्तुचक्र(सूर्यभात्साभिजित्) ७ – ११ – १० अशुभ शुभ अशुभ	स्वा. अनु. रे. में शनि हो या शनिवार हो, ह. पुष्य, रे. में भौम हो या भौमवार हों तो, नक्षत्र एवं वार दोनों त्याज्य हैं। यही नक्षत्र-ग्रह-वार गृहारम्भ में त्याज्य हैं।

शेष पृष्ठ १२३ में

पृष्ठ १२२ का शेष—

सूतिकागृह-निर्माण—पुनर्वसु, अभिजित्, श्रवण में करना चाहिये।

देवालय-निर्माण—गृहारम्भोक्त नक्षत्र एवं पुनर्वसु, श्रवण में भी कर सकते हैं।

निवास वर्ज्य—ग्राम या नगर के मध्य में, वृष-मिथुन-सिंह-मकर को, पूर्व में वृश्चिक को, आग्नेय में मीन को, दक्षिण में कन्या को, नैर्ऋत्य में कर्क को, पश्चिम में धनु को, वायव्य में तुला को, उत्तर में मेष को, ईशान में कुम्भ वाले को निवास न करना चाहिए।

नींव खोदने की दिशा— (यह राहुमुख शुभ है।)

देवालय	१२।१।२	३।४।५	६।७।८	९।१०।११
गृहारम्भ	५।६।७	८।९।१०	११।१२।१	२।३।४
जलाशय	१०।११।१२	१।२।३	४।५।६	७।८।९
दिशा	ईशान्य	वायव्य	नैर्ऋत्य	आग्नेय

१२५. शिलान्यास मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१२ १३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुष्य, उ. ३ ह. अनु. रे. विशेष नियम पीयूषधारा में देखिए।	सर्वदा अग्निकोण से प्रारम्भ करना चाहिये पुनः क्रमशः, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान्य, पूर्व को शिलान्यास, (प्रदक्षिणा क्रम से) करना चाहिये। घर के पूर्व में स्नानघर, आग्नेय में रसोईघर, दक्षिण में शयनघर, नैर्ऋत्य में शस्त्रघर, पश्चिम में भोजनघर, वायव्य में अन्नघर और पशुघर, उत्तर में भाण्डार (द्रव्यगृह) और ईशान्य में देवघर बनाना चाहिए।

स्तम्भस्थापन— (सर्वदा अग्निकोण से आरम्भ करना चाहिये)

सूर्यर्क्ष से ६ - २० - २ गृहारम्भोक्त चन्द्रर्क्ष तक

अशुभ शुभ अशुभ

रोहिणी, पुष्य, उ. ३, धनिष्टा, शतभिषा नक्षत्र में स्तम्भस्थापन, विशेष शुभ है। पंचक त्याज्य (पीयूष में माण्डव्य)

द्वार-देहली-चक्र

सूर्यर्क्ष से ४ - ८ - ८ - ३ - ४ गृहारम्भर्क्ष तक

शुभ अशुभ शुभ अशुभ शुभ

कूप—घर के अन्दर पूर्व, ईशान्य, पश्चिम, उत्तर दिशा में शुभ है।

कड़ी (धन्नी)—अ. मृ. ह. चि. स्वा. अनु. रे. में रखना शुभ है।

१२६. वापी, कूप, तडागारम्भ मुहूर्त (भूशयन वर्जित)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	अ. रो. मृ. पुन.	लग्न ३।४।६।६।१२ में। पापग्रह निर्बल हों, १० वें शुक्र हो; जलचर राशि का चन्द्र या लग्न हो तो, शुभ है।
२।३।५।७	बु.	पु. म. उ. ३ ह.	
१०।११।१२	गु.	चि. स्वा. अनु.	
१३।१५	शु.	मू. पूषा. श्र.	
तथा		ध. श. रे.	
कृष्ण १ भी।		शेष पृष्ठ १२७–१२८ में देखिए	

निर्वार (निवार) चक्र (साभिजित् राहुभात्)

पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.	मध्य	दिशा
३	३	३	३	३	३	३	३	४	नक्षत्र
सौम्यजल	मृत्यु	लाभ	लाभ	मृत्यु	मृत्यु	धनवृद्धि	मृत्यु	सौम्यजल	

पृष्ठ १२६ का शेष—

वापीचक्र (रोहिणीभात्)

४	५	४	५	४	५
शुभजल	बुद्धिनाश	स्थिरता	महाहानि	धनाप्ति	अनर्थ

जमीट मुहूर्त (साभिजित्, राहुभात्)

३	६	६	७
शुभ	अशुभ	शुभ	सामान्य

तडागचक्र (सूर्यभात्)

२—पूर्व, शोक

२—आग्नेय, बहुजल

२—दक्षिण, जलनाश

२—नैऋत्य, अमृतजल

२—पश्चिम, बहुजल

२—वायव्य, निर्जल

२—उत्तर, स्वादुजल

२—ईशान्य. नष्टजल

५—मध्य, शीघ्रजल प्राप्ति

६—वारिवाह्, नष्टजल

पृष्ठ १२७ का शेष—

चन्द्र द्वारा जल-प्रमाण

४।१०।१२	राशि के चन्द्र में	बहुजल
२।११	,,	अर्धजल
७।८	,,	अल्पजल
१।३।५।६।९	,,	निर्जल

नोट—कूप-चक्र, कई प्रकार के हैं।

(क) कूपचक्र (रोहिणीभात्)	(ख) कूपचक्र (सूर्यभात्)	(ग) कूपचक्र (भौमभात्)
३—शीतजल	३—स्वादु जल	३—सजल (बहुजल)
३—खण्डजल	३—निर्जल	३—सुसिद्ध (निर्जल)
३—मध्यम जल	३—स्वादु जल	३—स्वादु जल
३—जलनाश	३—निर्जल	३—अल्प जल
३—बहुजल	३—स्वादु जल	३—अशुभ (स्वादुजल)
३—स्वादुजल	३—क्षार जल	३—शुद्ध जल
३—क्षार जल	३—शिला (निर्जल)	३—निर्जल
३—स्वादुजल	३—स्वादु जल	३—क्षारजल
३—मध्यम जल	३—क्षार जल	३—अधिक जल

१२७. जलाशय, बाग, देव-प्रतिष्ठा आदि का मुहूर्त (यही विष्णु-प्रतिष्ठा के तिथ्यादि भी हैं)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्लपक्ष में २।३।५।६ ७।८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	सू. चं. बु. गु. शु. श.	अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे.	८।१२ वें शुभग्रह न हों, ३।६।११ वें चन्द्र तथा पापग्रह शुभ हैं। केन्द्र त्रिकोणाय स्व (१।२।४।५।७।९।१०।११ वें भाव) में शुभग्रह, शुभ हैं। जन्मराशि तथा जन्मलग्न से अष्टम लग्न में, प्रतिष्ठा अशुभ है।
पूर्वाह्न समय		मीन संक्रान्ति वर्जित	शिव-प्रतिष्ठा में शुद्धि— तिथि को दूना करके, उसमें ५ जोड़कर, ७ से भाग दे, शेष में फल पृष्ठ १३० मे पढ़िए।

पृष्ठ १२६ का शेष—

तिथिं च द्विगुणीकृत्य बाणैः संयोजयेत्ततः।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शिववासं समुद्दिशेत्॥

फल	शेष	शिववास फल
सुख	१	कैलास (शुभ)
सम्पत्	२	गौरी के पास(शुभ)
सिद्धि	३	बैल पर (शुभ)
संताप	४	सभा में (अशुभ)
पीडा	५	भोजन में (अशुभ)
कष्ट	६	रमण में (अशुभ)
मृति	७	स्मशान में(अशुभ)

देव-भेद से प्रतिष्ठा में शुभ लग्नादि—

देवता	लग्न	नक्षत्र	मास
सूर्य	५	हस्त	पौष
ब्रह्मा	११	रो. ध.	,,
विष्णु	६	,,	मार्गशीर्ष
शिव	३	,,	श्रावण
देवी	३।६।६।१२	मू.	याम्यायन, क्वॉर
इन्द्रादि	२।५।८।११	रो. ध.	पौष
वेद	११	,,	,,
गणेश यक्ष सर्प भूत	२।५।८।११	,,	,,
लघुदेवता	१।४।७।१०	पुन.स्वा.श्र.ध.श.	,,
सर्वदेवता	२।५।८।११	रो. ध.	,,

(शेष पृष्ठ १३१ में)

पृष्ठ १३० का शेष—

देवता	लग्न	नक्षत्र	मास
सरस्वती, व्यास, अगस्त्य, चन्द्रादि अष्टग्रह	२।४।८।११	पुष्य	पौष
बुद्धदेव	,,	श्रवण	,,
शेष भगवान्	११	अश्वि. मू.	,,
दिग्पाल	२।४।८।११	ध.	,,
धर्मराज, गणेश	,,	रे.	,,
कुबेर, स्वामिकार्तिक	.	अनु.	,,
सप्तर्षि	,,	स्वस्थर्क्ष	,,
वाराह, मातृ, भैरव, वामन, नृसिंह	,,	विष्णुर्क्ष	,,

शेष पृष्ठ १३२ में

पृष्ठ १३१ का शेष—

पौष में सभी देवताओं की प्रतिष्ठा हो सकती है; किन्तु विष्णु के तिथ्यादि में एवं उत्तरायण (चैत्र को छोड़कर) में, गुरु-शुक्रोदय में, पंचांग शुद्धि में, चन्द्र-तारा की शुद्धि में, भद्रादि दोष के विना, शुभ मुहूर्त में सभी देवों की प्रतिष्ठा करनी चाहिये। हाँ, देवता विशेष मे, (पृष्ठ १३०–१३१ में) कथित लग्नादि विशेष शुभ होते हैं।

प्रतिष्ठा में वार फल	
रविवार—देवता उग्र होता है। सोमवार—क्षेमदायक मंगलवार—अग्निदायक बुधवार—वरदायक गुरुवार—दृढकारक शुक्रवार—आनन्ददायक शनिवार—मूर्ति की कल्प तक स्थिति	रविवार को उग्रदेवता की स्थापना समुचित है।

१२८. वास्तु-शान्ति मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	अ. रो. मृ. पुन.	लग्न से १।२।४।५।७।६।१०।११ वें भाव में शुभग्रह और ३।६।११ वें पापग्रह शुभ है।
२।३।५।६।७	बु.	पु. उ. ३ ह. चि.	
८।१०।११।१२	गु.	स्वा. अनु. मू.	हवन चक्र, अग्निवास, चन्द्र और तारा की शुद्धि में, गुरु और शुक्रोदय में तथा उत्तरायण में शुभ है।
१३।१५	शु.	श्र. ध. श. रे.	
भद्रा वर्जित			

१२६. नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त [उत्तरायण (वै. ज्ये. माघ, फा.) गुरु-शुक्रोदय में]

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल की २।३ ५।६।७।८।१० ११।१३।१५	चं. बु. गु. शु. श	रो. मृ. उ. ३ चि. अनु. ध. श. रे.	नामराशि द्वारा विचार करना चाहिए. चर लग्न, चर नवांश त्याज्य (आवश्यकता में शुभ चर नवांश ग्राह्य) केन्द्र त्रिकोणाग्र स्व (१।२।४।५।७।६।१०।११ वें भाव) में शुभग्रह, ३।६।११ वें पापग्रह, ४।८ वाँ शुद्ध हो तो शुभ हैं। चैत्र मास, सू. मं. वार, १२ तिथि में शुक्रवार भी, रिक्तातिथि, दग्धा तिथि. अमा, मृत्यु योग, दुष्ट चन्द्र (४।८।१२ वाँ) जन्मर्क्ष या जन्म राशि या जन्म लग्न से अष्टम लग्न, रात्रि समय, लग्न से १।६।८।१२ वें चन्द्र और क्रान्ति-साम्य त्याज्य हैं। —शेष पृष्ठ १३५-१३६ में
कृष्ण की १।२।३ ५।६।७।८।१०		लग्न २।३।५।६ ८।६।११।१२ में शुभ है।	

पृष्ठ १३४ का शेष

दिशा-द्वार में		प्रवेश की शुभ तिथि
पूर्व	...	पूर्णा ५।१०।१५
दक्षिण	...	नन्दा १।६।११
पश्चिम	....	भद्रा २।७।१२
उत्तर	...	जया ३।८।१३

कलशाचक्र (सूर्यभात्)

५	- ८	- ८	- ६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

दग्धा-तिथि

वार तिथि	दग्धर्क्ष	मृत्युयोग
बु. ३	ध.	अश्वि.
गु. ६	उफा.	मृ.
शु. ८	ज्ये.	श्ले.
श. ६	रे.	ह.
चं. ११	चि.	पूभा.

६-१२	राशिस्थ सू. में	२	दग्धातिथि
२-११	,,	४	,,
१-४	,,	६	,,
३-६	,,	८	,,
५-८	,,	१०	,,
७-१०	,,	१२	,,

पृष्ठ १३५ का शेष

क्रान्ति–साम्य

	के सूर्य में		का चन्द्र हो
१	के सूर्य में	५	का चन्द्र हो
१०		२	,,
३		६	,,
८		४	,,
१२		६	,,
११		७	,,

तो, क्रान्ति–साम्य होता है। पूर्णिमा के समीप, क्रान्ति–साम्य सम्भव होता है। सूक्ष्म क्रान्ति–साम्य, गणित–साध्य है।

आमने–सामने सू. चं. होने से क्रांति-साम्य होता है। तथा—चक्र में देखिए—

१ २ ७ १२ ६ ४ ८ ३ ६ ५ १० ११
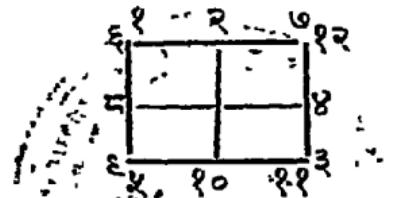
वाम सूर्य

द्वार–दिशा में प्रवेश शुभ—प्रवेश लग्न से निम्नांकित भावों में सूर्य होने से—

पूर्व	८।९।१०।११।१२
दक्षिण	५।६।७।८।९
पश्चिम	२।३।४।५।६
उत्तर	११।१२।१।२।३

सुधारे या पुराने मकान का प्रवेश मुहूर्त—

इसमें गुरु-शुक्रास्त का कोई विचार नहीं। कार्ति. श्राव. मार्ग. मास में, पुष्य, स्वा. श्र. ध. नक्षत्र में भी शुभ हैं। शेष तिथ्यादि, नवीन गृहप्रवेश मुहूर्त (पृष्ठ १३४) में देखना चाहिये।

१३०. यात्रा मुहूर्त (उत्तम तिथ्यादि)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१३ तथा कृष्ण १ भी।	चं. बु. गु. शु.	अ. मृ. पुन. पु. ह. अनु. श्र. ध. रे.	सर्व दिशा की यात्रा के नक्षत्र— अश्विनी, पुष्य, हस्त, अनुराधा
			५।६।७।८।१०।११।१२ लग्न शुभ हैं।
		पंचक मे दक्षिण दिशा की यात्रा त्याज्य है।	उत्तरायण में, गुरु-शुक्रोदय में शुभ है।

मध्यम तिथ्यादि

कार्तिक शुक्ल २ को छोड़कर, शेप पूर्वोक्त तिथि और दक्षिणायन में भी शुभ है।

सू. मं. श. वार। रो. पू. ३ उ. ३ ज्ये. मू. श. नक्षत्र।

यात्रा में वार फल—

सू.—क्लेश, अर्थ हानि। मं.—अग्नि-चोर-भय, ज्वर। श.—वन्धन, हानि, रोग, मरण।

योगिनी-चक्र—

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान्य	दिशा
१	३	५	४	६	७	२	८	तिथियाँ
९	११	१३	१२	१४	१५	१०	३०	,,

योगिनी वाम तथा पृष्ठ में शुभ होती है। आवश्यकता में तिथ्यन्त की ६ घटी छोड़कर, यात्रा कर सकते हैं; किन्तु, दक्षिण-यात्रा में सम्मुख योगिनी, सर्वदा अशुभ है।

दिग्शूल–चक्र—

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान्य	दिशा
चं.	चं.	गु.	सू.	सू.	मं.	मं.	बु.	वार
श.	गु.		श.	शु.		बु.	श.	

दिग्शूल, बायें तथा पीठ में शुभ होता है। वार–दोष निवारणार्थ–वस्तुएँ—

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वारों मे
घी	दूध	गुड़	तिल	दधि	यव	उरद	की वस्तु खाकर यात्रा कर सकता है।

समय-शूल—

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा में
प्रातः	मध्याह्न	गोधूलि	अर्धरात्रि	के समय यात्रा करना, अशुभ है।

नक्षत्र-समय-शूल यात्रा में त्याज्य है—

पूर्वाह्न	मध्याह्न	अपराह्न	अर्धरात्रि	रात्र्यन्त का तृतीयांश	पूर्वरात्रि
उ. ३ रो.	मू. ज्ये.	ह. अश्वि. पुष्य अभि.	पू. ३	पुन. श्र. ध. श.	मृ. रे. अनु.

काल—राहु—

पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.	दिशा
श.	श.	गु.	बु.	मं.	चं.	सू.	०	वार

दाहिने शुभ ; अन्यथा अशुभ होता है।

चन्द्र—वास—

पू.	द.	प.	उ.	दिशा में चन्द्रवास
१।५।६ ,	२।६।१० ,	३।७।११ ,	४।८।१२	राशि का चन्द्र अथवा लग्न

दिग्द्वार—लग्न—

चन्द्रवासवत् दिग्द्वार लग्न जानिए। सन्मुख और दाहिने चन्द्र तथा दिग्द्वार लग्न शुभ ; अन्यथा अशुभ होता है।

आवश्यकता में, नक्षत्र के आदि की घटी त्याग कर शेष में यात्रा शुभ है—

पूर्वात्रय की ७ या १६ घटी, कृत्तिका की २१ घटी, मघा की ११ घटी, भरणी की ७ घटी, श्ले. स्वा. वि. ज्ये. की १४ घटी, चित्रा का पूर्वार्ध या आदि की १४ घटी, मतान्तर से ज्येष्ठा और जन्मर्क्ष सम्पूर्ण तथा आर्द्रा की १४ घटी।

तारा-विचार—

जन्मर्क्ष से दिनर्क्ष तक गिनकर ९ से भाग दें; शेष १ जन्म, २ सम्पत्ति, ३ विपत्ति, ४ क्षेम, ५ प्रत्यरि, ६ साधक, ७ वध, ८ मैत्र, ९ अतिमैत्र होता है। १।३।५।७ वाँ तारा अशुभ; शेष शुभ हैं।

यात्रा में, शनिवार के दिन रोहिणी हो तो, त्याज्य है। यात्रा में, जन्म-राशि से विचार करना चाहिये। यात्रा में, गोचर द्वारा शुक्र का बल, परमावश्यक है।

शुक्र-विचार—

एकग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे। विवाहे तीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रो न दोषकृत्॥

रे. अ. भ. पूर्ण और कृ. के प्रथम चरण तक चन्द्रमा होने से अन्ध-शुक्र होता है। शुक्र-वास पीठ तथा वाम में शुभ, अन्यथा अशुभ होता है। अतएव अन्ध-शुक्र के समय, आवश्यकता में यात्रा कर सकता है। भृगु, कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, अंगिरा, भरद्वाज, वत्स गोत्रों में शुक्र का दोष नहीं होता—ऐसा भी एक आचार्य का मत है।

काल-चन्द्र—

१ – २ – ३ – ४ – ५ – ६ – ७ – ८ – ९ – १० – ११ – १२ राशि वाले को
४ – ८ – ३ – १० – १२ – ९ – ६ – १० – ११ – ७ – ५ – ४ था चन्द्र अशुभ।
यह सर्व कर्मों में त्याज्य है—ऐसा शौनक का मत है।

तिथियों में वर्जित लग्न—

१–६–११	(नन्दा)	५ – ७ – ८ – १०	लग्न
२–७–१२	(भद्रा)	९ – १२	"
३–८–१३	(जया)	३ – ६	"
४–९–१४	(रिक्ता)	१ – ४	"
५–१०–१५	(पूर्णा)	२ – ११	"

वक्रीग्रह व नीचग्रह से जीता गया शुक्र हो या शुक्र अस्त हो तो, यात्रा करने से, प्रबल शत्रु भी वश मे हो जाता है।

पन्था-राहु—

अश्वि.	पुष्य	ऽश्ले.	वि.	ऽनु.	ध.	श.	धर्म संज्ञा
भ.	पुन.	म.	स्वा.	ज्ये.	श्र.	पूभा.	अर्थ ”
कृ.	आर्द्रा	पूफा.	चि.	मू.	भि.	उभा.	काम ”
रो.	मृ.	उफा.	ह.	पूपा.	उपा.	रे.	मोक्ष ”

धर्म मे सूर्य हो और अर्थ या मोक्ष में चन्द्र हो तो यात्रा शुभ
अर्थ ” ” ” धर्म या मोक्ष में ” ” ”
काम ” ” ” धर्म या अर्थ या मोक्ष में ” ” ”
मोक्ष ” ” ” धर्म या अर्थ या मोक्ष में ” ” ”

अन्यथा अशुभ होता है।

नोट—पञ्चाङ्ग-शुद्धि, योगिनी, दिक्शूल, समय-शूल, नक्षत्र-समय-शूल, काल-राहु, काल-पाश, चन्द्र-वास, दिग्द्वार-लग्न, तारा-शुद्धि, पन्था-राहु-शुद्धि, घात-चक्र, चोर-बाण, चोर-पंचक, परिघ-दण्ड, लग्न-शुद्धि, विशेष योग आदि विचार कर यात्रा करना चाहिए।

चोर-बाण—

राशि के ७।१६।२५ वें अंश पर सूर्य हो तो, चोर-बाण, यात्रा में त्याज्य है।

चोर-पंचक—

गत तिथि में, लग्न जोड़कर ६ से भाग दे, शेष में ६ बचें तो, चोर-पंचक, यात्रा में त्याज्य है।

काल-पाश— (यात्रा व युद्ध में सम्मुख त्याज्य है)

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार में	
उ. द.	वा. आ.	प. पू.	नै. ई.	द. उ.	आ. वा.	पू. प.	दिवा	काल-पाश
द. उ.	आ. वा.	पू. प.	ई. नै.	उ. द.	वा. आ.	प. पू.	रात्रौ	

परिघ–दण्ड–चक्र—

नियम
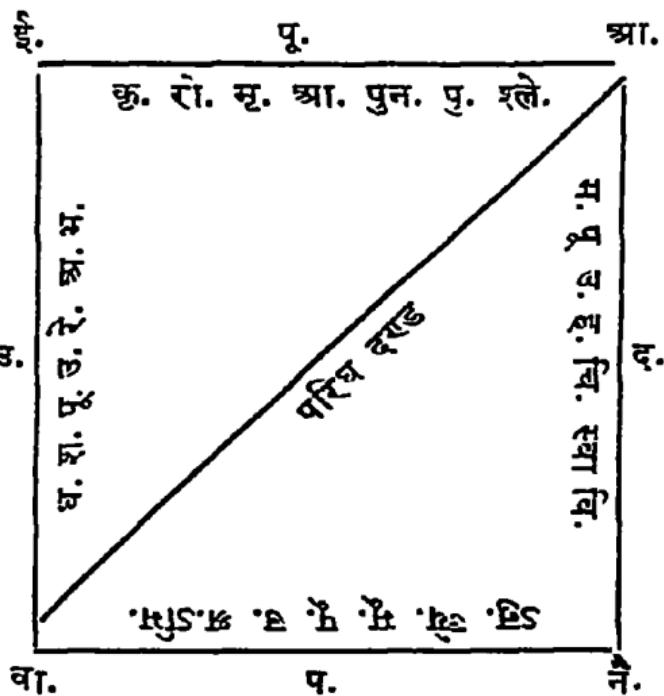
परिघ दण्ड का उल्लंघन न करना चाहिए, तथा दिग्द्वार-नक्षत्रों को सम्मुख या दाहिने रखकर यात्रा करना, शुभ है। पू.–आ. । द.–नै. । प.–वा. । उ.–ई. दिशा द्वार के नक्षत्र एक समान समझिए। विदिशा में यात्रा के लिये शुभ हैं। अर्थात् पूर्व दिशा के कृ. से श्ले. तक नक्षत्रों में पूर्व दिशा की यात्रा की भाँति, आग्नेय दिशा की भी यात्रा की जा सकती है।

घात-चक्र	(जन्मराशिद्वारा रोगार्तें गमने रणे विचार्यम्)											[शेष पृष्ठ १४६ में ।
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशिवालेको
कृ. म.	चि. ह.	श. स्वा.	म. अनु.	ध. मू.	आर्द्रा श्र.	मू. श.	रो. रे.	पूभा. भ.	भ. रो.	मू. आर्द्रा	पूभा. श्ले.	घातनक्षत्र
१	२	३	३	१	३	२	४	३	४	४	३	घातनक्षत्र के घात चरण
१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२	घातचन्द्र
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
सू.	श.	चं.	बु.	श.	श.	गु.	शु.	शु.	मं.	गु.	शु.	घातवार
नन्दा	पूर्णा	भद्रा	भद्रा	जया	पूर्णा	रिक्ता	नन्दा	जया	रिक्ता	जया	पूर्णा	घाततिथि
का.	मार्ग	आषा.	पौष	ज्येष्ठ	भाद्र.	माघ	क्वाँर	श्राव.	वैशा.	चैत्र	फा.	घातमास

घात-चक्र का शेषभाग—

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशिवाले को
वि.	शू.	प.	व्या.	धृ.	शू.	शू.	व्य.	वरी.	वै.	गं.	वै.	घातयोग
बव	श.	च.	ना.	वणि.	कौ.	तै.	ग.	तै.	श.	किं.	च.	घातकरण
१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४	घातप्रहर
४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	१२	२	६	घातसूर्य
५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	४	घातमंगल
२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१	घातबुध
६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५	घातगुरु
७	११	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६	घातशुक्र
३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२	घातशनि
८	१२	४	९	१	५	१०	२	११	३	६	७	घात राहु
१	८	७	९	५	३	६	२	१०	११	५	१२	स्त्री का चन्द्र

अयन-शुद्धि—

सू. चं. (दोनों) उत्तरायण में हों तो, पूर्व-उत्तर की ओर दोनों दक्षिणायन में हों तो, पश्चिम-दक्षिण की यात्रा शुभ है। यदि भिन्न-भिन्न अयन में हों तो, जिस अयन में सूर्य हो, उस दिशा में दिन को और जिसमें चन्द्र हो, उस दिशा में रात्रि को यात्रा करना, शुभ है, अन्यथा अशुभ है। मकर राशि से मिथुन राशि तक उत्तरायण, शेष में दक्षिणायन होता है।

दिशा के स्वामी—

पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.	दिशा
सू.	शु.	मं.	रा.	श.	चं	बु.	गु.	स्वामी

लालाटिक योग—

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	ग्रह
१	५-६	१०	४	२-३	११-१२	७	८-९	भावों में
पू.	वा.	द.	उ.	ई.	आ.	प.	नै.	दिशा

यात्रा—दिशा का स्वामी केन्द्र में हो, तो शुभ। लालाटिक योग में हो तो, अशुभ। अन्यथा, साधारण ग्रह होता है।

जीवपक्षादि संज्ञा (राहु नक्षत्र से यात्रा के दिन का नक्षत्र)

राहु भुक्तर्क्ष	१३	जीवपक्ष
राहु भोग्यर्क्ष	१३	मृतपक्ष
राहु स्थिति	१ वाँ	कर्तरी
कर्तरी से	१५ वाँ	ग्रस्त

यदि सूर्य, मृतपक्ष में हो और चन्द्र, जीवपक्ष में हो तो, युद्ध-यात्रा शुभ। यदि चन्द्र, मृतपक्ष में औरसूर्य, जीवपक्ष में हो तो, युद्ध-यात्रा अशुभ। यदि दोनों (सू. चं.) जीव-पक्ष में हों तो, शुभ हैं।

मृत से ग्रस्त शुभ, ग्रस्त से कर्तरी शुभ,। यायी (मुद्दई) का स्वामी चन्द्र और स्थायी (मुद्दालय) का स्वामी सूर्य होता है। जीवपक्ष का चन्द्र हो तो यायी की तथा जीवपक्ष का सूर्य हो तो स्थायी की विजय होती है। दोनों (सू. चं.) मृतपक्ष में हों तो, राजीनामा (सन्धि) होता है।

प्रवासी यात्रा में विचार—

१ । ५ । ६	राशि के	सूर्य	मे यात्रा	शुभ
२।३।६।७।१०।११	,,		,,	मध्यम
४ । ८ । १२	,,		,,	दीर्घयात्रा

अकुल संज्ञा मुद्दई	कुल संज्ञा मुद्दालय	कुलाकुल संज्ञा दोनों फरीकैन	फल
१।३।५।७।६।११।१३।१५ तिथि	४।८।१२।१४	२।६।१०	अकुल में यायी (मुद्दई या सरकार को) यात्रा से विजय
सू. चं. गु. श. वार	मं. शु.	बु.	कुल में स्थायी (मुद्दालय या अपराधी को) यात्रा से विजय
भ. रो. पुन. श्ले. ह. उ. ३ ह. स्वा. अनु ध. रे. नक्षत्र	अश्वि. कृ. मृ. पुष्य म. पू. ३ चि. वि. ज्ये. श्र.	आर्द्रा मू. अभिजित् श.	कुलाकुल में सन्धि योग होता है।

सर्वाङ्ग योग (यायि-यात्रा में विचार)

यात्रा के दिन—शुक्लादि प्रतिपदा से तिथि, रविवारादि से वार; अश्विन्यादि से नक्षत्र, जोड़कर ७। ८। ३ से पृथक्-पृथक् भाग दे। प्रथम स्थान में शून्य बचे तो यायी को दुःख। दूसरे में शून्य बचे तो धननाश। तीसरे में शून्य बचे तो मृत्यु होती

है। यदि तीनों में अंक बचे तो सुख होता है। इसका विचार, कुल (स्थायी) यात्रा में भी करना चाहिये।

महाडल और भ्रमण योग—

सूर्यर्क्ष से चन्द्रर्क्ष तक गिनकर ७से भाग दे, शेप मे दो या शून्य बचे तो, महाडल योग (अशुभ) और ३।६ बचें तो भ्रमण योग (अशुभ) तथा १।४।५ बचे तो शुभ है।

ह्मिम्बर (हैम्बर) योग—

सूर्यर्क्ष से चन्द्रर्क्ष तक गिनकर, शुक्लादि १ से तिथि, रविवारादि से वार जोड़कर ६ से भाग दे, शेप में ७ बचे तो, ह्मिम्बर योग होता है; यह यात्रा में शुभ है।

घवाड योग—

सूर्यर्क्ष से चन्द्रर्क्ष तक गिनकर ३ से गुणाकर, १५ जोड़कर, ७ से भाग दे। यदि शेप में ३ बचे तो, यात्रा मे शुभ हैं।

विशेप विचार

केन्द्र में वक्रीग्रह या लग्न में वक्री का पड्वर्ग हो तो, उस वक्री ग्रह के वार में यात्रा त्याज्य है। केन्द्र त्रिकोण मे शुभग्रह, ३।६।१०।११ वें पापग्रह शुभ हैं।

१।३।८।१२ वें चन्द्र, १० वें शनि, ७ वें शुक्र, ६।७।८।१२ वें या नीच या अस्त या शत्रु-क्षेत्री लग्नेश, क्रूरयुक्त ८ वें मं. शु. अशुभ हैं। मीन लग्न या नवांश में यात्रा करने से मार्ग वक्र होता है। जन्म राशि या जन्म लग्न के स्वामी या शुभग्रह, लग्न में शुभ हैं। जन्म राशि या जन्म लग्न से ६।८ वीं राशि की यात्रा लग्न में अथवा शत्रु की जन्म राशि या जन्म लग्न से ६।८ वीं राशि की लग्न में, कुम्भ–मीन लग्न या नवांश या चन्द्र या पृष्ठोदय (१।२।३।४।६) लग्न में यात्रा निषिद्ध है। लग्न या चन्द्र अपने वर्गोत्तम में हो तो, शुभ है। जलचर राशि की लग्न या नवांश में, नौका द्वारा यात्रा शुभ होती है।

प्रवेश व निर्गम एक ही दिन में हो तो, दिग्शूलादि का विचार करना, परमावश्यक नहीं है। देवप्रतिष्ठा, यज्ञोपवीत, विवाह, होलिकादि उत्सव, सूतक आदि के मध्य में तथा दुर्दिन में यात्रा अशुभ है। घर में प्रवेश कर पुनः यात्रा, या यात्रा करके ९ वें दिन या नवें नक्षत्र में यात्रा से लौटकर गृह–प्रवेश करना अशुभ है। विजयादशमी की यात्रा में विजय या सन्धि होती है। युद्ध–यात्रा में गोचर द्वारा भौम, बली होना चाहिये।

विजय योग—

(१) ३ रे सू., १० वें चं., ६ ठे मं. श., ५ वें शु., ४ थे बु., लग्न में गु.।
(२) ३ रे श., ६ ठे मं., ल. में गु., ११ वें सू. तथा शुक्र पीछे हो।
(३) ल. में गु., ८ वें चं., ६ ठे सू.।
(४) ल. में गु, २।११ वें अन्य ग्रह।
(५) ७ वें चं., ल. में सू., २ रे बु. गु. शु.।
(६) २ रे बु., ३ रे सू., ल. में शु.।
(७) ल. में सू., ६ ठे श., १० वें चं.।
(८) ल. में श. मं., १० वें सू. बु., १०–११ वें शु.।
(९) ३।६।११ वें श. मं., अन्य स्थानों में बु. गु. शु. बली हों।
(१०) ल. में गु., ७ वें चं., ४ थे बु. शु., ३ रे पापग्रह।
(११) ल. में गु., ७ वें चं., ११ वें सू., १० वें बु. शु., ३ रे मं. श.।
(१२) ल. में गु. या चं., ६ ठे सू., ५ वें बु., १० वें श., ४ थे शु.।

(शेष पृष्ठ १५४ में)

(१३) ल. में वली बु., केन्द्र में गु., ३।६।६।१२ वें भाव में निर्बल या नीच चन्द्र।
(१४) ७।८।६वें भावमें पापग्रह,३।४।११वें शु., केन्द्रस्थ गुरु से दृष्ट हो तो वहु लाभकारी।
(१५) १।४।६।१० वें शुभ दृष्ट बु., १।७।१२ वें भाव पापग्रह न हों।
(१६) ल. में गु., १०।११ वें पापग्रह।
(१७) ७ वें बु. शु., ४ थे चं.।
(१८) ६ ठे शु., लग्न में गु., ८ वें चं.।
(१९) ४ थे बु. शु., ७ वें चं.।
(२०) बु. शु. के मध्य में ४ थे चं. हो।
(२१) ल. में शु., ७ वें गु., ६ ठे मं., ४ थे बु., ३ रे श.।
(२२) गुरुवार, ६ ठे सू. बु., ३ रे चं., १० वें मं., ल. में गु., ४ थे शु., ११ वें श.।
(२३) ३ रे मं., ८ वें शु., ७ वें बु., ६ ठे श., ल. में गु.।
(२४) ३।४ थे सू. गु. शु., ६ ठे मं. श.।
(२५) बु. गु. शु. केन्द्र में एक साथ या अलग २ हों।
(२६) श्रवणयुता विजयादशमी।

यात्रा-लग्न द्वारा विचार

राज्य-लाभ योग

१ ल. में गु., १०–११ वें पापग्रह ।

२ ७ वें बु. शु., ४ थे चं. ।

३ केन्द्र या त्रिकोण में बु. या गु. या शु. हो तो, शुभ है ।

दिशा में परिहार	वार का परिहार—
पूर्व में— घी द में–तिल, चावल पश्चिम में— मत्स्य उत्तर में— दूध	सू. दधि शकर आम चं. खीर मं. काँजी बु. रवड़ी गु. दधि शु. कच्चा दूध श. तिल-चाँवल

यात्रा-नक्षत्र का परिहार	भक्ष्य का भक्षण, अभक्ष्य का दर्शन-स्पर्श, अप्राप्य का ध्यान करे										
अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	श्ले.	म.	पूफा.	उफा
काँजी कुलथी	तिल चावल	उर्द	दूध दही	घी	दूध	मृग-मांस	मृग-रक्त	हवि खीर	नीलकंठ चाप मांस	मृग-मांस	चौगड़ा (खरगोश) मृग मांस
ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा.	उषा.	श्र.	ध.	श.
साठी चावल	प्रियंगु काकुन	पेठा पुआ	मसूर पक्षि दर्शन	अन्न फल	कच्छप माँस	मैना सारस का माँस	गोह माँस	शल पक्षी माँस	हवि मूँग खिचड़ी	मूँग चावल	जौ का चूर्ण
पूभा.	मछली–चावल			उभा.	चित्रान्न			रे.	दधि–भात		

तिथि का परिहार

१—अर्कपात	९—जल
२—चावल का धोवन	१०—गोमूत्र
३—घी	११—जौ
४—जौ की खीर	१२—दूध-आटा (दुधवरिया)
५—मूँग	१३—गुड़
६—हवि	१४—रुधिर
७—पुआ	१५ } ३० } —मूँग की दाल
८—नीबू	

प्रस्थान का नियम—

विप्र—यज्ञोपवीत।

क्षत्री—शस्त्र।

वैश्य—शहद।

शूद्र—आँवला या नारियल।

अथवा अपनी-अपनी प्रिय-वस्तु प्रस्थान में रख सकता है।

अपने घर से, एक घर का अन्तर देकर प्रस्थान रखना—गर्ग मत। अपने ग्राम या पुरी की सीमा को लाँघ कर दूसरी सीमा में प्रस्थान रखना—भृगु मत। एक वाण की दूरी पर प्रस्थान रखना—भरद्वाज मत। नगर से बाहर प्रस्थान रखना—वशिष्ठ मत है। (शेष पृष्ठ १५८ में)

४ हाथ का धनुष होता है। ५०० धनुष की दूरी पर प्रस्थान रखना चाहिये। कोई २०० धनुष की दूरी पर और कोई १० धनुष की दूरी पर प्रस्थान रखने को कहते हैं। राजमार्तण्ड में लिखा है कि—जिस दिशा को यात्रा करना हो, उसी दिशा को अपना मुख करले तो, प्रस्थान हो जाता है। प्रस्थान के बाद राजा १० रात्रि तक, सामन्त ७ रात्रि तक, साधारण मनुष्यों को ५ रात्रि तक से अधिक ठहरना, निषेध है। यदि ठहर जाय तो, पुनः मुहूर्त देखकर यात्रा करे। यात्रा के ७ दिन पूर्व से या १ दिन पूर्व से स्त्री-संग करना, यात्रा के ३ दिन पूर्व से दूध पीना और ५ दिन पूर्व से बाल बनवाना निषेध है। यात्रा के दिन मधु न खावे, तेल न लगावे, वमन-कर्म न करे। तेल की वस्तु, गुड़, पका माँस खाकर यात्रा न करे (रोगग्रस्त होता है)। स्त्री और ब्राह्मण का तिरस्कार करके यात्रा न करे (मरण होता है)। १२ योजन तक अल्प यात्रा, २५ योजन तक मध्य यात्रा, उपरान्त दीर्घयात्रा होती है। एक योजन, वर्तमान १० मील का होता है (देखिए जातक-दीपक ग्रन्थ)। अल्प यात्रा में योगिनी, दिग्शूल, पञ्चाङ्ग, काल-पाश का अल्प दोष होता है। मध्य में इन (योगिनी आदि) का समदोष तथा लग्नज दोष भी सम। दीर्घयात्रा मे दीर्घ (बड़ा) दोष होता है।

(शेष पृष्ठ १५९ में)

यात्रायां शकुनश्चैव उषो गर्गः प्रशसति । अंगिरा च मनोत्साहं विष्णुर्वाचं द्विजन्मनाम् ॥

शकुन द्वारा यात्रा करना—गुरु मत, प्रातःकाल यात्रा करना—गर्ग मत, मनोत्साह से यात्रा करना—अंगिरा मत और विप्र वाक्य से यात्रा करना—विष्णु मत है। विप्र—चन्द्र, तारा बल में। क्षत्री—योग बल में। चोर—शकुन बल में। शेष मानव—यात्रा मुहूर्त द्वारा यात्रा करना चाहिए। चोर के लिए मुहूर्त बताना, नीति-विरुद्ध है; अतएव शकुन-लेख (इस ग्रन्थ में) नहीं रखा गया।

मृ. में यात्रा कर आर्द्रा में ठहर कर, पुनर्वसु में चले तो विजय हो।

अनु.	,,	ज्येष्ठा	,,	मूल	,,	,,
ह.	,,	चि. स्वा.	,,	विशा.	,,	,,
ध. रे पुष्य	,,	१ रात सीमा में वास कर,		श. अ. श्ले.	,,	,,

प्रवेश-मुहूर्त

यदि प्रवेश और निर्गम एक ही दिन में हो तो, प्रवेश का ही मुहूर्त विचारना चाहिए। राजा को यात्रा से लौटकर अपने गृह में प्रवेश करना, चं. बु. गु. शु. श. वार को शुभ है। रो. मृ. उ. ३ चि. अनु. रे. नक्षत्र शुभ हैं। किसी के मत से पुष्य, ह. ध. श. भी शुभ हैं। रिक्ता तिथि, मघा नक्षत्र, रवि, भौमवार और चर-लग्न वर्जित हैं।

पुन. पु. स्वा. श्र. ध. श. में	प्रवेश हो	तो पुनः	शीघ्र यात्रा होती है।
भ., म. पूर्वा. ३,	,,	,,	नाश होता है।
आर्द्रा, श्ले. मू. ज्ये.	,,	,,	पुत्र नाश होता है।
कृ.	,,	,,	गृह-दाह होता है।
विशा.	,,	,,	स्त्री-मरण होता है।

स्थिर-लग्न या स्थिर-नवांश की लग्न हो, केन्द्र त्रिकोणार्थ में शुभग्रह या ३।११वें शुभग्रह हो। ३।६।११ वें पापग्रह हो। ४-८ वाँ भाव शुद्ध हो तो, शुभ है। जन्म लग्न से ८वाँ लग्न त्याज्य है।

१

१३१. प्रथम रजोदर्शन का शुभाशुभ समय—

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० १३।१५	च. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुष्य उ. ३ ह. चि. स्वा अनु. श्र. ध. श. रे.	अशुभ—भद्रा, निद्रा, संक्रान्ति, अमा, रिक्ता, नन्दा, द्वादशी, संध्या, रात्रि, व्यतीपात, वैधृति, रोगावस्था, ग्रहण, पिता का घर, कृष्ण-वस्त्र, कुदेश।
दिन समय में			शान्ति करने से एवं गु. शु. से युत व दृष्ट लग्न में शुभ होता है।
वै. ज्ये. आ. आश्वि. मार्ग. माघ. फा.	श्वेत वस्त्र में	लग्न २।३।५।६।७ ९।१२	मध्यम—१।११ तिथि, कृ. पुन. म. वि मू. नक्षत्र।
शुक्ल पक्ष विशेष श्रेष्ठ			

१३२. रजस्वला स्नान मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७ १०।१३	चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. मू. ध. रे.	अश्वि. रो. मृ. ह. स्वा. रे. नक्षत्र में स्नान करने से शीघ्र गर्भधारण होता है।
			'चतुर्थेऽहनि शुद्ध्यति ।' के अनुसार चौथे दिन स्नान सर्वदा करना चाहिए। किन्तु प्रथम बार ३ दिन के बाद, मुहूर्त देखकर स्नान करना चाहिए। [महाराष्ट्र में इसका विशेष महत्त्व है]

१३३. गर्भाधान मुहूर्त [प्रथम संस्कार] (देखिए पुरुष संयोग पृष्ठ सूची में)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१२।१३	चं. बु. गु. शु.	रो. मृ. उ. ३ ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श.	निषेध—तीन प्रकार के गण्डान्त, निधन तारा (७ वाँ), जन्मर्क्ष, अ. भ. म. मू. रे., ग्रहण, पात, वैधृति, श्राद्ध दिन तथा श्राद्ध का पूर्व दिन, परिघ का पूर्वार्ध समय, दिवा, संध्या, भद्रा, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्म राशि से अष्टम लग्न, पापयुक्त लग्न, स्त्री तथा पति की चन्द्र-तारा-अशुद्धि, संक्रांति और ८।१४। १५।३० तिथि, माता-पिता का ब्याह।
लग्न ४।५।६।१२ केन्द्र त्रिकोण में शुभ ३।६।११ वें पाप, सू.मं.गु. से दृष्ट लग्न में।		मध्यमर्क्ष— अ. पुन. पु. चि.	विषम राशि के नवांश के चन्द्र में रजस्वला दिन से पुत्रार्थी को—६।८।१०।१२।१४। १६ वीं रात्रि और कन्यार्थी को—५।७।६।११। १३।१५ वीं रात्रि शुभ है।

१३४. सीमन्त और पुंसवन मुहूर्त [२–३ संस्कार] प्रथम गर्भ में यह संस्कार होता है।

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।८ १०।११।१३ तथा कृष्ण १ भी।	सू. मं. गु.	अ. मृ. पुन. पु. ह. मू. अनु. पूभा श्र.	गर्भ से २।३ रे मास में पुंसवन, ४।६।८वें मास में सीमन्त। केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह, ३।६।११ वें पापग्रह। पुंग्रह का नवांश या लग्न शुभ है। मासेश की पुष्टता में करे। स्त्री राशि से भी चन्द्र-शुद्धि होनी चाहिये। दम्पति का चन्द्र-तारा-बल। मिथुन को छोड़, शेष विषम लग्न तथा विषम नवांश में। गर्भ-मासेश— १ – २ – ३ – ४ – ५ – ६ – ७ – ८ – ९ – १० शु., मं., गु., सू., के., श., बु., लग्नेश, [illegible], चं., सू,
	मध्यम चं. बु. शु.	मध्यम रो. उ. ३ रे.	

१३५. विष्णु-पूजन मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल पक्ष की १।२।३।५।७।१० ११।१२।१३।१५	सू. चं. मं. बु. गु. शु.	रोहिणी, पुष्य, श्रवण	शुभग्रह की या शुभयुत व दृष्ट लग्न में। ८ वाँ शुद्ध, केन्द्र त्रिकोण मे शुभग्रह, ३।६।११ वें पापग्रह, पुंनवांश या लग्न मे। दम्पति के चन्द्र-तारा-शुद्धि मे, गर्भ से ८ वें मास में, आधान-लग्नेश बली होने पर शुभ है। विषम राशि का नवांश, पुंनवांश होता है। सूर्य-मंगल-गुरु-राहु, पुरुष ग्रह होते हैं।

१३६. सूतिका गृह प्रवेश मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	अ. रो. मृ. पुन.	इस मुहूर्त को यथा सम्भव विचार करना चाहिए ।
२।३।५।७।१०	बु.	पु. उ. ३ ह. चि.	
११।१३।१५	गु.	स्वा. अनु. श्र.	श्रवणत्रयोत्तराहस्तत्रये पुष्यानुराधयोः । पुनर्भे रोहिणी युग्मे रेवती द्वितये तथा ॥ शुभाहे प्रसवे युक्ता सूतिका मन्दिरं विशेत् ॥
तथा	शु.	ध. श. रे.	
कृष्ण १ भी।			—मु. ग.

१३७. जातकर्म, नामकर्म [चतुर्थ-पंचम संस्कार]

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७ १०।११।१३ तथा कृष्ण १ भी।	सू. चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे.	जातकर्म तत्काल या ११।१२ वे दिन। नामकर्म विप्र का ११।१२ वें दिन, क्षत्री का १३।१६ वें दिन, वैश्य का १६।२० वें दिन, शूद्र का २२।३० वें दिन।
			नामकर्म १०।१२।१६।१८।२०।२२।३० वें दिन कन्या का और १।३।५।७।१०।११।१३ वें दिन पुत्र का करना चाहिए।
			केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह। ३।६।११ वें पापग्रह। त्रिक या ८।१२ वाँ भाव शुद्ध। शुभ लग्न या नवांश में शुभ है।
लग्न २।४।५।८।६ ११।१२ त्रिस्व-भावा शुभैर्युता	पूर्वाह्न में	पिता, उत्तराभिमुख हो सवस्त्र स्नान करे	यदि मृत बालक का जन्म हो तो, जातकर्म करने से मरणाशौच नहीं होता।

पुत्रजन्मनि यज्ञे च तथा संक्रमणे रवेः। राहोश्च दर्शने स्नानं प्रशस्तं नान्यथा निशि ॥-वशिष्ठ

नामकर्म—देवालय, वृक्ष, गज, अश्व, वापी, कूप, पुरुष, स्त्री, उपकारण, काव्य, कवि, पशु, प्रासाद आदि का करना चाहिए।

निषेध—चरलग्न, ४।८।६।१४।३० तिथि, मं श. वार, भद्रा, शकुनि, किंस्तुघ्न. पर्व तिथि, वैधृति, व्यतीपात, संक्रान्ति, ग्रहण, श्राद्धदिन, पक्षछिद्र।

१३८. मूलज्ञान—

रेवती, अश्विनी, श्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल; ये ६ नक्षत्र मूल कहाते हैं।

अमुक्त मूल—

मत	वशिष्ठ,	नारद,	अंगिरा,	गुरु,	अन्याचार्य
ज्येष्ठान्त घटी	१	४	१	१/२	६–५
मूलादि घटी	२	४	१	१/२	६–८

जन्म-दोष—गण्डान्तत्रय, परिघ, शूल, वैधृति, व्यतीपात, व्याघात, मूलर्च, कृष्ण १४–३० तिथि, माता-पिता के नक्षत्र में, बड़े भाई या बहिन के नक्षत्र में. यमघण्ट, वज्र, गण्ड, मृत्यु, भद्रा, संक्रान्ति, दग्धयोग, महापात, क्षय दिन, त्रीतर दोष।

त्रीतर दोष—यदि ३ कन्या के बाद पुत्र या ३ पुत्र के बाद कन्या जन्म हो तो, त्रिक दोष होता है। उपर्युक्त सभी दोषों की शान्ति करनी चाहिये।

दग्धयोग—रविवार को १२, चन्द्र ११, भौम ५, बुध ३, गुरु ६, शुक्र ८, शनि ६ तिथि में।

गण्डान्तत्रय—कर्क, वृश्चिक, मीन के अन्तिम नवांश में और मेष, सिंह, धनु के प्रथम नवांश में जन्म होने से लग्न-गण्डान्त दोष होता है।

तिथि दोष—दोनों पक्षों की ५–१०–१५ तिथि, ३० तिथि के अन्तिम दण्ड में जन्म हो तो, अनिष्ट होता है। वैशा. शु. ६, ज्ये. कृ. ४, आषा. शु. ८, श्रावण कृ. ६, भाद्र. शु. १०, आश्वि. कृ. ८, कार्ति. शु. १२, मार्ग. कृ. १०, पौष शु. २, माघ कृ. १२, फाल्गु. शु. ४, चैत्र कृ. २ इन तिथियों में जन्म होने से मृत्यु होती है। कृष्ण पक्ष की १४ में जन्म होने से कोई न कोई अनिष्ट अवश्य होता है।

गण्ड अरिष्टादि—

श्ले. म. का	मध्यकाल	रात्रि	गण्ड
ज्ये. मू. ,,	,,	दिवा	,,
रे. अ. ,,	,,	सन्ध्या	,,

श्ले. ज्ये. रे. की अन्तिम ४ घटी, अ., म., मू. के आदि ४ घटी गण्ड-काल होता है। अश्विनी का गण्डदोष १६ वर्ष में, मघा का ८ वर्ष में, मूल का ४ वर्ष में, श्लेषा का २ वर्ष में, ज्येष्ठा, रेवती का १ वर्ष पर्यन्त अनिष्ट फल का भय रहता है। यदि प्रातः और संध्या समय के संधिकाल में जन्म हो और संध्या गण्डदोष हो तो, बालक को अनिष्ट होता है। रात्रिकाल में जन्म हो और रात्रि गण्डदोष हो तो, माता को अरिष्ट होता है। दिवागण्ड में, दिन में जन्म हो तो, पिता के लिये दोष होता है। दिन मे, रात्रिगण्ड में जन्म हो या रात्रि में, दिवागण्ड मे जन्म हो तो, अरिष्ट नहीं होता। दिवागण्ड में कन्या का और रात्रिगण्ड में पुरुष का जन्म होने से अनिष्ट नहीं होता।

जातक पारिजात में—

वैशाख, श्रावण, फाल्गुन में	गण्डदोष का फल आकाश मे	माघ में गण्ड-दोष, मृत्युकारक होता है।
आषा. पौष, मार्ग. ज्येष्ठ. में	,, ,, ,, मर्त्यलोक में	
चैत्र भाद्र. आश्वि. कार्ति. में	,, ,, ,, पाताल में	

नक्षत्र-दोष—चित्रा पूर्वार्ध, पुष्य पूर्ण, पूर्वाषाढ़ पूर्ण (मतान्तर से २ चरण) में, जन्म होने मे क्रमशः बालक के माता, पिता, मामा के लिये अनिष्टकर होता है।

हस्त ३ पाद, मघा ३ पाद, माता, पिता के लिये अनिष्टकर। उत्तरा ३ का प्रथम पाद जातक के लिये अनिष्टकर। पूषा. पुष्य के प्रथम चरण में—पिता वा चाचा को अनिष्टकर। चि. वि. ह.—माता-पिता के लिये मृत्युदायी होता है। मृगशिरा के २५ से ३५ घटी के मध्य में जन्म होने से माता के लिये भयदायक है।

विषघटिका में अशुभफल

नक्षत्र —	पुष्य,	श्लेषा,	हस्त,	ज्येष्ठा,	मूल,	पूषा.,	रेव.
पाद—१	पिता,	शुभ,	जातक,	ज्येष्ठज,	पिता,	माता,	माता
२	माता,	धनभाव,	चाचा,	अनुज,	माता,	चाचा,	पिता
३	जातक,	माता,	माता,	माता,	धनभाव,	जातक,	जातक
४	मामा,	पिता,	पिता,	स्वयं,	उन्नति,	पिता,	भाई

इस विष-घटिका का अशुभ फल, लग्न में किसी बली शुभग्रह के रहने से नाश हो जाता है। जिस नक्षत्र में जन्म हो, वह जन्मर्क्ष, १० वाँ कर्मर्क्ष, १६ वाँ सांघातिक, १८ वाँ समुदाय, १६ वाँ आधान, २३ वाँ वैनाशिक, २५ वाँ जाति, २६ वाँ देश, २७ वाँ अभिषेक कहलाता है। यदि इनमें, पापग्रह की स्थिति हो तो शीघ्र मृत्यु और शुभग्रह के होने से शुभ होता है। गुरुवार के दिन, १० वें मुहूर्त में यमघण्ट होता है।

मूलवास :—	आषाढ़	भाद्रपद	आश्विन	माघ	में—स्वर्ग में (शुभ)
	चैत्र	श्रावण	कार्तिक	पौष	में—मर्त्य में (अशुभ)
	वैशाख	ज्येष्ठ	मार्गशीर्ष	फाल्गुन	मे—पाताल में (शुभ)

'मेषे च सिंहे धनु पूर्वभागे'—के अनुसार दिशा जानना।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
दीप,	जल,	शय्या	×	कांस्यपात्र	श्वेत वस्त्र	नाल	बालक का शिर

नोट—विशेष जानने के लिए, हमारे यहाँ के 'जातक-दीपक' ग्रन्थ में देखिए।

१३९. स्तन पान मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	अ. रो. मृ. पुन.	जातकर्मोक्तनक्षत्रे श्रवणे च पुनर्वसौ।
१।२।३।५।७	बु.	पु. ह. ३ हृ. चि.	त्यक्त्वा स्वाती स्तन्यपानं शुभं प्रोक्तं शुभेऽहनि।
१०।११।१३।१५	गु.	अनु. श्र. ध.	—मु. ग.
	शु.	श. रे.	

१४०. सूतिका क्वाथ (चरुआ) मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११।१२ १३।१५	सू. चं. बु. गु. शु.	अ. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे.	लग्न ३।६।६।१२ में शुभ है। लग्न से ७।८।६ वाँ भाव ग्रह-रहित में शुभ है। जन्मर्क्ष और दुर्योग वर्जित है। भैषज्यगदिते धिष्ण्ये वारे दुर्योगवर्जिते। आरोग्यहेतवे क्वाथः सूतिकायाश्च तच्छिशोः। —मु. ग.

१४१. सूतिका पथ्य मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१३।१५	सू. चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र ध. श. रे.	विशेष, अन्नप्राशन की भाँति जानिए। जन्म से पाँचवे दिन, 'जीवन्ती देवी' का और छठवें दिन 'षष्ठी देवी' का पूजन करना चाहिए। अन्नाशनोक्तनक्षत्रे शुभाहे सांशुमालिनि। हित्वा रिक्ता च दुर्योगं सूतिकापथ्यमीरितम् ॥ जन्मतः पंचमे घस्रे जीवन्त्याः पूजनं निशि। षष्ठेऽह्नि षष्ठिका पूज्या गीतैर्जागरणादिभिः ॥ —मु. ग.

१४२. सूतिका स्नान मुहूर्त (सूर्य पूजन भी) (मसवारा स्नान)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की १।२।३।५।७ १०।११।१३।१५	सू. मं. गु.	अ. रो. मृ. पुष्य उ. ३ ह. स्वा. अनु. रे.	पंचम भाव शुद्ध, शुभ युक्त व दृष्ट लग्न और भद्रादि के बिना शुभ है।
मध्यम ३०		मध्यम श्ले. पू. ३ ध. ज्ये. और चंन्द्र-शुक्र वार	पुनर्वसुद्वयं चित्रा विशाखा भरणी द्वयम्। मूलमार्द्रा मघा हेया श्रवणो शतभिस्तथा ॥ सोमःशुक्रो बुधः सौरिःप्रसूतिस्नानकर्मणि। हेया प्रतिपदा षष्ठी नवमी च तिथिस्त्रयः ॥

१४३. चूड़ी धारण मुहूर्त नं० ५ मुहूर्त का निषेध भी वर्जित है।

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	बु. गु. शु.	अ. ह. चि. स्वा. वि. अनु. ध. रे. — गुरु शुक्रोदय में और गुर्वादित्य के बिना, शुभ है	चूडी–चक्र [साभिजित् सूर्यभात्] ३ – ५ – ३ – ४ – ७ – २ – १ – २ – १ सू. मं. शु. बु. रा. श. गु. चं. के. अ. अ. शु. शु. अ. अ. शु. शु. अ. अ. = अशुभ शु. = शुभ

१४४. दुग्ध पान मुहूर्त

२१–३१ वें दिन अन्नप्राशनोक्त तिथिआदिकों में शुभ हैं। शंख में गौ का दूध भर कर पिलावे। राहु दिङ्मुख वर्जित, योगिनी और रुद्रमुख वर्जित है।

राहु—	पूर्व –	दक्षिण –	पश्चिम –	उत्तर	दिशा
	सू. गु.	चं. शु.	मं.	बु. शु.	वार

बालक–दन्त–जनन फल

गर्भ में	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मासों में
सर्व, नाश	स्वनाश	भ्रातृजनाश	भगिनीनाश	मातृनाश	ज्येष्ठजननाश	सुख	पितृसुख	पुष्ट	लक्ष्मीप्राप्ति	सुख	सुख	फल

१४५. दोलारोहण मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१३।१५	चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुष्य उ. ३ ह. चि. अनु. अभि. रे.	दोलाचक्र (सूर्यभात्) ५ – ५ – ५ – ५ – ७ अयोग्य, मृत्यु, कृशता, रोग, सुख
खट्वा-चक्र के प्रथम पाँच और अन्तिम सात शुभ, शेष अशुभ हैं		चन्द्र तारा बल में जन्म से १०-१२-१६-१८-२२-३२ वें दिन करे।	१२ वें दिन या बाद में खट्वारोहण का मु. देखे। खट्वा-चक्र(सूर्यभात्) आरोग्य (५) १ सुख (७) ५; रण ५; ५ मरण; ५ विकृति. दोलोक्तमे सुपर्यंकं जननी वा सुवासिनी। योगशायि हरिर्ध्यात्वा स्वापयेत्प्राक् शिरः शिशुम् ॥

१४६. निष्क्रमण (बालक को बाहर निकालने का) मुहूर्त [षष्ठ-संस्कार]

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१३ तथा कृष्ण १ भी कार्तिक शुक्ल २ वर्जित	सू. चं. बु. गु शु.	अ. मृ. पुन. पु. ह. अनु. श्र. ध. मध्यमर्क्ष रो. पू. ३ उ. ३ ज्ये. मू. श.	१२ वें दिन या ४ मास में यात्रा मुहूर्त की भाँति, उत्तरायण और गुरु शुक्रोदय में शुभ है। तुर्ये निष्क्रमणं मासि यात्रोक्तदिवसे स्मृतम्। जन्मतो द्वादशाहे वा कुर्यान्मङ्गलपूर्वकम्॥ —मु ग.

१४७. जलपूजन मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	चं. बु. गु. शु.	मृ. पुन. पु. ह. अनु. मू. श्र.	३० वाँ दिन, गुरु और शुक्र का अस्त, चैत्र, पौष, क्षयाधिमास आदि त्याज्य है। पुनर्वसुद्वये हस्ते मृगे मूलानुराधयोः। श्रवे गुरौ बुधे चन्द्रे सत्तिथौ जलपूजनम्॥ गुरौ शुक्रेऽस्तगे चैत्रे पौषे वा मलमासके। मासपूर्तौ विरुद्धाहे न कुर्याच्चु जलार्चनम्॥ —मु. ग. मसवारा स्नान के बाद किया जाता है।

१४८. कच्छाबन्धन (वस्त्रधारण) मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल पक्ष की	बु.	अ. रो. मृ. पुन.	कच्छाबन्धः सिते पक्षे सुदिने करपंचके ।
२।३।५।७।११	गु.	पु म. उ ३ ह.	ध्रुवर्क्षेऽदितियुग्मेऽश्विपितृपौष्णेन्दुवासरे ॥
१३।१५	शु.	चि. स्वा. वि.	—गणकमण्डन
		अनु. रे.	(मु. ग.)

१४६. बालक को भूमि में बिठाने का मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१२।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी	चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुष्य उ. ३ ह. अनु. ज्ये. मू. अभि.	चर लग्न में, ५ वें मास में, मं. बली में, पृथ्वी, वराह का पूजन करके भूमि में बिठाना चाहिए। भूमि में बिठाने का मन्त्र रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगत शिशुम्। आयुःप्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥ कटि सूत्र (करधनी = करडोरा) बाँधकर भूमि में बिठावे। उसके आगे पुस्तक, शस्त्र, धातु, रत्न आदि रखे। बालक, जिस वस्तु का स्पर्श करे, तो बालक, उसीसे आजीविका करेगा—जानना चाहिए।

१५०. अन्नप्राशन मुहूर्त (सप्तम–संस्कार) [ताम्बूल भक्षण भी]

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० १३।१५	चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे.	६-८-१०-१२ वें मास में पुत्र को, ५-७-९-११ वें मास मे पुत्री को करना चाहिए। २।३।४।५।६।७९।१०।११ लग्न में शुभ है।
तिथिक्षय और रात्रि वर्जित है।		जन्मर्क्ष वर्जित	केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह, दशम शुद्ध, ३।६।११ वें पापग्रह शुभ। ६।८।१२ वें चन्द्र, जन्म राशि और जन्म लग्न से अष्टम राशि की लग्न व नवांश त्याज्य है।
		चन्द्र तारा शुद्धि में शुभ	जन्म से २½ मास में ताम्बूल-भक्षण [इसी मुहूर्त के समान विचार] शुभ है।

अन्नप्राशन के लग्न-चक्र में स्थित ग्रहों का फल—

१ – ४ – ५ – ७ – ८ – ९ – १२ वें क्षीण या पूर्ण चन्द्र गु. बु. मं. सू. श. शु. हों तो—

ग्रह	चं. क्षीण	चं. पूर्ण	गु.	बु.	मं.	सू.	श. रा. के.	शु.
फल	भिखारी	यज्ञकर्ता	दीर्घायु	ज्ञानी	पित्तरोग	कुष्ठ रोग	अन्नक्लेश, वातरोग	भाग्यवान्

१५१. कर्णवेध मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शु २।३।५।७ १०।१२।१३।१५ कृ. १।२।३।५ ७।१०	चं. बु. गु. शु.	अ मृ. पुन. पु. उ. ३ चि. अनु. श्र. ध. रे.	२।३।४।६।७।६।१२ लग्न या नवांश में। ८ वाँ शुद्ध, १।२।४।५।७।६।१०।११ वें शुभग्रह, ३।६ ११ वें पापग्रह, शुभ है। उत्तरायण में विशेष शुभ है। हरिशयन में निषेध है। १२।१६ वें दिन या ६।७।८ वें मास या विषम वर्ष में करना चाहिए।
गुरु शुक्रोदय में जन्ममास,सम-वर्ष, जन्मर्क्ष त्याज्य	भद्रा चैत्र पौष कार्ति. फा. त्याज्य	चन्द्रतारा शुद्धि और पूर्वान्ह में शुभ; तथा तिथिक्षय त्याज्य	सूची-प्रमाण—सौवर्णी राजपुत्रस्य, राजती विप्रवैश्ययोः। शूद्रस्य त्वायसी सूची मध्यमा-ष्टांगुलात्मिका। कुमार, कुमारिका को मधुर पदार्थ देकर, पूर्वाभिमुख होकर, बालक का पहिले दाहिना फिर वाम तथा कन्या का—पहिले वाम, फिर दाहिना कर्ण-छेदन करे। तीसरे दिन गर्म जल से धोवे।

१५२. नासिका वेध मुहूर्त (कन्या को)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल पक्ष की	चं.	अ. मृ. पुन. पु.	कर्णवेधोक्तभे शस्तं कन्याया घ्राणवेधनम्।
२।३।५।७।१०	बु.	उ. ३ ह. चि. स्वा.	श्रुत्तराजलपस्वातौ पूर्वाह्णे शुक्लपक्षके॥
११।१२।१३।१५	गु.	अनु. श्र. ध.	—मु. ग.
पूर्वाह्न में	शु.	श. रे.	

१५३. दक्षिणायन, क्षयाधिमास, गुरुशुक्रास्त में वर्जित कर्म

देवप्रतिष्ठा, गृहप्रतिष्ठा, विवाह, अग्न्याधान, मुण्डन, जलपूजन, राज्याभिषेक, यज्ञोपवीत, वापी-कूप-तड़ागकार्य, यज्ञ, यात्रा, महादान, गुरुसेवा, दीक्षा, प्रथम बार तीर्थ स्नान, काम्यहवन, याग, व्रतोद्यापन, वधूप्रवेश, सोमयज्ञ, अष्टकाश्राद्ध, गोदान, केशान्त कर्म, नवान्नभक्षण, पौसरा, प्रथम श्रावणी कर्म, वेदव्रत, वृषोत्सर्ग, बालकों का अतिक्रान्त संस्कार, सन्यास, अग्निहोत्र, राजदर्शन, चातुर्मास्य यज्ञ, समावर्तन, कर्णवेध और दिव्य परीक्षा वर्जित है।

नोट—यदि चन्द्र बली, पूर्ण, त्रिकोण में, उच्च, स्वगृही, अपने षड्वर्ग में, शुभग्रह की राशि में, मित्रक्षेत्री, गोचर में शुभ हो तो, दुष्ट तारा में भी क्षौर तथा यात्रा शुभ है।

१५४. मुण्डन (चौड) कर्म मुहूर्त [अष्टम-संस्कार]

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल में २।३।५।७।१०-११।१३ कृष्ण में १।२।३।५।७ १०।११	चं. बु. गु. शु.	अ. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. शुक्ल पक्ष में चन्द्र- वार शुभ है	चन्द्र तारा शुद्धि में, गुरु शुक्रोदय में २।३।४।६।७।६।१२ लग्न या नवांश में। ८ वाँ शुद्ध या शुक्र हो तो शुभ, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह, १२ वें मेष के चं. के विना अन्य शुभग्रह, ३।६।११ वें पापग्रह शुभ हैं। सप्तम भाव में सू. मं. श. शु., लग्न से अष्टम लग्न, नक्षत्र और भद्रा त्याज्य है।

केन्द्रस्थ पापग्रह का फल—(चौलकर्म में)

क्षीण चन्द्र,	मंगल,	शनि,	सूर्य,	बुध-गुरु-शुक्र
मृत्यु,	शस्त्राघात,	पंगु,	ज्वर,	शुभ

विप्र,	क्षत्री,	वैश्य,	शूद्र,
रवि	मंगल	शनि	शनिवार—को भी मुण्डन करा सकता है।

१।२।३।५।७ वें वर्ष में, चैत्र छोड़, उत्तरायण में शुभ, ज्येष्ठ मास में जन्म हुए बालक का ज्येष्ठ मास में मुण्डन त्याज्य कराना है।

यदि बालक की माता के ५ मास से अधिक का गर्भ हो तो, मुण्डन ५ मास से पूर्व ही कर लेना चाहिये। यदि ५ वर्ष से अधिक उम्र का बालक हो तो, ५ मास से न्यूनाधिक का गर्भ होने पर भी, मुण्डन कराना शुभ है।

नान्दीश्राद्ध के बाद, यदि बालक की माता, रजोधर्म वाली या प्रसूतिका हो जावे तो, मुण्डन, यज्ञोपवीत और विवाह न करे या शान्ति करने के बाद करे—

शान्ति—एक मासे की सुवर्ण की लक्ष्मी-प्रतिमा बनाकर श्रीसूक्त से पूजन करे और प्रति ऋचा से खीर का हवन करना चाहिए। शुद्धि के बाद सुवर्ण और गोदान करना चाहिए।

१५५. अक्षरारम्भ (लेखनारम्भ) मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल पक्ष की २।३।५।६।१० ११।१२	चं. बु. गु. शु.	अ. रो. आर्द्रा पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. श्र. रे.	२।३।६।६।१२ लग्न या नवांश में। बु. गु. शु. स्वगृही या लग्न में वर्ती शुभग्रह हो। केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह ३।६।११ वें पापग्रह और पंचम में शुभग्रह शुभ हैं। यज्ञोपवीत के पूर्व–विप्र ५ वें वर्ष, क्षत्री ८ वें वर्ष, वैश्य ६ वें वर्ष कर सकता है।
भद्रा त्याज्य		चन्द्र, तारा और बुध की शुद्धि में	पंचम वर्ष में कुम्भ मास को छोड़कर उत्तरायण में, गणेश-लक्ष्मी, शारदा और विष्णु का पूजन करके प्रारम्भ करना चाहिए।

१५६. गणितारम्भ मुहूर्त (ज्योतिष)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल पक्ष में २।३।५।६।१० १२ कृष्ण पक्ष में २।३।५	बु. गु.	रो. आर्द्रा, पुष्य, हस्त, [illegible]राधा, शतभिषा, पूभा., रेवती	शतद्वयेऽनुराधार्द्रा रोहणी रेवती करा। पुष्ये जीवे बुधे कुर्यात्प्रारम्भ गणितादिषु ॥ —मु. ग.

१५७ व्याकरणारम्भ मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल पक्ष में	बु.	अ. रो. मृ.	रोहणी पंचके हस्तात्पुनर्भे मृगमेऽश्विभे।
२।३।५।६।१०	गु.	पुन. पु. ह. चि.	पुर्व्वे शुक्रे त्यदित्वारे शब्दशास्त्रम्पठेत्सुधीः॥
११	शु.	स्वा. चि. अनु.	—मु. ग.
कृष्ण पक्ष मे			इसमें 'हस्तात् पंचके' समझकर अर्थ करना चाहिए।
२।३।५			

१५८. न्याय शास्त्रारम्भ मुहूर्त (प्लीडरी-शिक्षा)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल में	बु.	अ. रो. पुन. पु.	त्र्युत्तरे रोहणी पुष्ये पुनर्में श्रवणे करे। अश्विन्यां शतमे स्वातौ न्यायशास्त्रादिकम्पठेत् ॥ —मु. ग.
२।३।५।६।१०	गु.	उ. ३ ह. स्वा.	
११।१२	शु.	श्र. श.	
कृष्ण में			
२।३।५			

१५६. धर्मशास्त्रारम्भ मुहूर्त (पुराणादि शिक्षा)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल में	बु.	अ. मृ. पुष्य, ह.	हस्तादिपंचके पुष्ये रेवती द्वितये मृगे ।
२।३।५।६।१०	गु.	चि. स्वा. वि. अनु.	श्रवत्रये शुभारम्भो धर्मशास्त्रपुराणयोः ॥
११।१२	शु.	श्र. ध. श. रे.	—मु. ग.
कृष्ण में			
२।३।५			

१६०. आयुर्वेदारम्भ मुहूर्त (हकीमी-डाक्टरी शिक्षा)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल में २।३।५।६।१० ११।१२ कृष्ण में २।३।५	सू. चं. मं.	अ. मृ. आर्द्रा, पुन. पु. श्ले. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. मू. श्र. ध. श. रे.	हस्तत्रयेऽनुराधायां पुनर्भे श्रवणत्रये । मूले चान्त्येऽश्विनी पुष्ये ज्येटाश्लेपार्द्रमे मृगे ॥ वैद्यविद्याकुजेऽब्जेऽर्के सुधीभिः कथितं शुभम् ॥ —मु. ग.

१६१. गारुडी विद्यारम्भ मुहूर्त (सर्प आदि मारने की विद्या)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल में	सू.	अ. मृ. आर्द्र, पुन.	वैद्यविद्योक्तनक्षत्रे ज्येष्ठाहीनेऽत्रगारुडो।
२।३।५।६।१०	चं.	पु. श्ले. ह. चि.	—मु. ग.
११।१२	मं.	स्वा. अनु. मू. श्र.	
कृष्ण में		ध. श. रे.	
२।३।५			

१६२. यवन विद्यारम्भ मुहूर्त (अंग्रेजी, अरवी-फारसी शिक्षा)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल में	सू.	भ. कृ. आर्द्रा, श्ले.	लग्न २।५।८।११ में तथा चं. युत या दृष्ट लग्न में शुभ है।
२।३।५।६।१०	मं.	म. पू ३ वि. ज्ये.	ज्येष्ठाश्लेषा मघा पूर्वा रेवती भरणी द्वये। विशाखार्द्रोत्तराषाढा शतभे पापवासरे॥
११।१२	श.	उपा. श. रे.	लग्ने स्थिरे सचन्द्रे च फारसीमारवीम्पठेत्॥
कृष्ण में			—मु. ग.
२।३।५			

१६३. जौहरी विद्यारम्भ मुहूर्त (रत्न–परीक्षा)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	पुन. ह. ज्ये.	पुनर्भे शतहस्तर्क्षे श्रवो ज्येष्ठा परीक्षणम्।
२।३।५।६।७	चं.	श्र. श.	रत्नानामष्टमीं भूतां हित्वा भौमशनैश्चरौ ॥
१०।११।१२	बु.		—मु. ग.
१३।१५	गु.		
	शु.		

१६४. जैन विद्यारम्भ मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	सू.	अश्वि. भर. पुन.	श्रवत्रये मघा पूर्वानुराधा रेवतीत्रये ।
२।३।५।६।७।१०	शु.	म. पू. ३ स्वा.	पुनर्भे स्वातिभे सूर्ये शुक्रे जैनागमं पठेत् ॥
११।१२।१३।१५		अनु. श्र. ध. श. रे.	—मु. ग.

१६५. शिल्प विद्यारम्भ मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की	चं.	अश्वि. रो. मृ.	हस्तत्रये श्रवणे यूत्त्वे त्र्युत्तरे रोहिणी मृगे।
२।३।५।६।७।१०	बु.	पुन. पु. उ. ३ ह.	रेवत्यामश्विनी पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः ॥
११।१२।१३।१५	गु.	चि. स्वा. अनु.	शस्ते तिथौ शुभे वारे शिल्पविद्यां समारभेत् ॥
	शु.	श्र. ध. श. रे.	—मु. ग.

३

१६६. यज्ञोपवीत मुहूर्त (नवम-संस्कार) उत्तरायण में शुभ

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल पक्ष में २।३।५।१० ११।१२ कृष्ण पक्ष में २।३।५	सू. चं. बु. गु. शु.	अ. मृ. पुष्य, ह. चि. स्वा. श्र. ध. रे.	पूर्वाह्न, बुधबल और चन्द्र तारा बल में शुभ है। २।३।४।५।६।७।६।१२ लग्न में। ३।६ ठे पापग्रह, २।३।७।१० वें चन्द्र, केन्द्र-त्रिकोण में शुभग्रह, ११ वें सभीग्रह, लग्न में सूर्य या पूर्ण चन्द्र, वृष या कर्क राशि का (लग्न में) शुभ है। ६।८ वें लग्नेश, च. गु. शु.। १२ वें चं. शु.। १।५।८ वें पापग्रह, ६।८।१२ वें शुभग्रह अशुभ हैं।
भद्रा और वेध त्याज्य		मध्यम ६ तिथि, मंगलवार, रो. आर्द्रा, पुन. श्ले. पू. ३ उ. ३ अनु. मू. श.	जन्मर्क्ष, जन्ममास, जन्मतिथि, जन्म लग्न में भी विप्र के ज्येष्ठ पुत्र का तथा क्षत्रिय और वैश्य के द्वितीय पुत्र का व्रतबन्ध होने से व्रती, विद्वान् होता है, अन्यथा अशुभ है।

गर्भ या जन्म से ८-११-१२ वें वर्ष में विप्रादि के शुभ हैं जोकि, द्विगुणित १६-२२-२४ वर्ष तक यज्ञोपवीत कर सकते हैं। ११-१२-१ सूर्य के चैत्र में, १-२ सूर्य के वैशाख में, २-३ सूर्य के ज्येष्ठ और आषाढ़ में और १०-११ सूर्य के माघ और फाल्गुन में शुभ है। मीनार्क चैत्र में विप्र का विशेष शुभ है।

चैत्रे मासि रवौ मीने विबलेऽपि गुरौ वटोः। व्रतबन्धः प्रशस्तः स्याच्चैत्रे मीनयुतः शुभः ॥

—बृहज्जातक

वर्णेश—विप्र,	क्षत्री,	वैश्य	।	शाखेश—ऋक्.	यजु.	साम.	अथ.
गु. शु.,	सू. मं.,	चं.	।	गुरु,	शुक्र,	मंगल,	बुध

शाखेश का वार, लग्न, गोचर-बल उत्तम होता है और शाखेश तथा सू. चं. गु.; जब ये बली हों तब, व्रतबन्ध शुभ होता है। शाखेश-वर्णेश, यदि शत्रुक्षेत्री, नीच या युद्ध में पराजित हो तो, अशुभ (व्रती, वेदादि से रहित) होता है।

रोगपंचक—गत तिथि में लग्न मिलाकर ९ से भाग दें, शेष में ८ बचे तो रोगपंचक, दाक्षिणात्य में प्रसिद्ध, यज्ञोपवीत में त्याज्य होता है।

रोगबाण—किसी राशि के ९।१८।२७ वें अंश पर सूर्य हो तो रोगबाण, उत्तरात्य में प्रसिद्ध, यज्ञोपवीत में त्याज्य होता है।

सप्तशलाका वेध चक्र

कृ. रो. मृ. आ. पु. पु. श्ले.

ध. श. पू. उ. रे. अ. भ.

म. पू. उ. ह. चि. स्वा. वि.

अ. श्र. उ. पू. मू. ज्ये. अनु.

चक्र में जब जिस नक्षत्र में यज्ञोपवीत हो तब ठीक उसी के सामने (नीचे या ऊपर) वाले नक्षत्र पर कोई ग्रह न होना चाहिए; अन्यथा वेध होता है। यदि अश्विनी पर यज्ञोपवीत हो तो, पूफा. में कोई ग्रह न होना चाहिए और यदि पूफा. मे यज्ञोपवीत हो तो, अश्विनी में कोई ग्रह न होना चाहिए। नीचे, चक्र में स्पष्ट है—

परस्पर वेधर्क्ष

अ.	रो.	मृ.	आर्द्रा.	पुन.	पुष्य	श्ले.	उफा.	ह.	चि.	श्र.	ध.	श.
पूफा.	अभि.	उषा.	पूषा.	मू.	ज्ये.	अनु.	रे.	उभा.	पूभा.	कृ.	वि.	स्वा.

सूर्य-चन्द्र-गुरु शुद्धि—   (यज्ञोपवीत-विवाह आदि के लिए)

वर का	दोनों का	कन्या का	फल
सूर्य	चन्द्र	गुरु	ग्रह
३।६।१०।११	१।२।३।५।६।७।६।१०।११	२।५।७।६।११	शुभ
१।२।५।७।६	अमासमीप, अस्त	१।३।६।१०	सम
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	अशुभ

गोचर ग्रह-शुद्धि

यज्ञोपवीत में वटु का सूर्य-चन्द्र-गुरु शुद्ध तथा विवाह में वर का सूर्य, दोनों का चन्द्र और कन्या का गुरु शुद्ध होना चाहिए। जन्म राशि से ३।६।१०।११ वें सूर्य शुभ, जन्मराशि से १।२।५।७।६ वें सूर्य मध्यम (सम) और जन्म राशि से ४।८।१२ वें सूर्य अशुभ होता है। इसी प्रकार चन्द्र और गुरु की भी शुद्धि-अशुद्धि उपर्युक्त चक्र द्वारा, सूर्य की भाँति समझिए।

रविशुद्धौ गृहकरणं रविगुरुशुद्धौ व्रतोद्वाहौ। चौरं ताराशुद्धौ सर्वं चन्द्राश्रितं कर्म॥—राजमार्तण्ड

सूर्य शुद्धि में गृहारम्भ, सूर्य–गुरु शुद्धि में यज्ञोपवीत और विवाह, तारा शुद्धि में मुण्डन तथा सभी कर्मों में चन्द्र–शुद्धि होनी चाहिए।

सूर्य-परिहार

उच्चराशिगतो भानुरुच्चराशिगतो गुरुः। रिष्फाष्टतुर्यगोऽप्येतौ नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत्॥

जब उच्चराशि (मेष) का सूर्य और उच्चराशि (कर्क) का गुरु होता है तब ४।८।१२ वें में भी शुभ माने गये हैं।

"द्वितीयपुत्राङ्कगतप्रभाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभप्रदः।"

जन्म राशि से २–५–९ वें सूर्य हो तो, १३ दिन छोड़कर, शेष दिनों में सूर्य शुभ माना गया है।

अनिष्टस्थानगे सूर्ये शुभराशिः पुरो भवेत्। त्रयोदशदिनं त्यक्त्वा शेषस्य शुभमादिशेत्॥—गर्गः

जन्म राशि से १।२।४।५।७।८।९।१२ वें (अनिष्ट स्थानीय) सूर्य हो और यदि आगे शुभग्रह की राशि का सूर्य होनेवाला हो तो, प्रारम्भ के १३ दिनों को छोड़कर, शेष दिनों का सूर्य, शुभ माना गया है।

त्रिषट्दशायेषु शुभो दिवाकरश्चतुर्थरिष्फाष्टगतस्तु निन्द्यः ।
शेषेषु पूज्यो गदितो विवाहे शुभाशुभत्वं गुरुवद्विचार्यम् ॥

जन्म राशि से ३।६।१०।११ वें शुभ, ४।८।१२ वें अशुभ तथा शेष में होने से सूर्य, पूज्य होता है अर्थात् सूर्य का (लाल) दान करने से शुभ माना जाता है। इस प्रकार सूर्य का शुभपन–अशुभपन, गुरु के समान विचार, किया जाना चाहिए। इस श्लोक में 'गुरुवत्' शब्द आया है, अतएव जबकि गुरु, उच्च आदि में गुरु का परिहार (आगे देखिए) होता है तब, गुरु के समान, उच्च आदि स्थिति में, सूर्य का भी परिहार हो सकता है। परिहार और दान से शान्ति करके मंगल कार्य किये जा सकते हैं। कहा गया है कि— "द्विरर्च्यौ द्वादशस्तुर्यस्थाष्टमस्त्रिगुणार्चनात् ।"

सूर्य–गुरु, यदि ४।१२ वें हो तो, द्विगुणित पूजा–दान तथा ८ वें हों तो, त्रिगुणित पूजा–दान करना चाहिए। जब गोचर-शुद्धि न हो सके तब अष्टकवर्ग शुद्धि देखना चाहिए—

अष्टवर्गविशुद्धेषु गुरुशीतांशुभानुषु । मतोद्वाहौ च कर्तव्यौ गोचरेण कदापि न ॥
अष्टवर्गेण ये शुद्धास्ते शुद्धाः सर्वकर्मसु । सूक्ष्माष्टवर्गसशुद्धः स्थूलाशुद्धिस्तु गोचरे ॥

सूर्य–चन्द्र–गुरु की शुद्धि, अष्टकवर्ग द्वारा होनी चाहिए। क्योंकि अष्टकवर्ग से सूक्ष्म–शुद्धि तथा गोचर से स्थूल–शुद्धि हो पाती है। अष्टकवर्ग का निर्माण, हमारे यहाँ के 'जातक–दीपक' ग्रन्थ में बताया गया है।

चन्द्र-परिहार—गर्भाधान, दान, युद्ध, विवाह, रति, राज्याभिषेक, यात्रा, अन्नाशन, व्रतबन्ध, व्रतोपवास और सीमन्त में १२ वाँ चन्द्र भी ग्राह्य है। २।५।६ वाँ चन्द्र, शुक्ल पक्ष में तथा ४।८।१२ वाँ चन्द्र, कृष्ण पक्ष में शुभ होता है।

गुरु-परिहार—उच्च, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, स्वनवांश, वर्गोत्तम में गुरु हो तो ४।८।१२ वाँ भी ग्राह्य है। नीच या शत्रुक्षेत्री हो तो, शुभ होने पर भी त्याज्य है। स्थित राशि के नवांश में ग्रह 'वर्गोत्तमी' होता है।

रजस्वला यदा कन्या गुरुशुद्धिं न चिन्तयेत्। अष्टमेऽपि प्रकर्तव्यो विवाहस्त्रिगुणार्चनात्॥
दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्याशुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः॥

—मु. मा., पीयूषधारा (व्यास)

रजस्वला होने के बाद, यदि कन्या का विवाह हो तो, गुरु-शुद्धि देखना आवश्यक नहीं। केवल लग्न, चन्द्र और तारा-शुद्धि में विवाह हो सकता है। मुहूर्तगणपति में कहा गया है कि—

'ज्ञेया गुरुबला गौरी रोहिणी भानुमद्बला। कन्या चन्द्रबला ग्राह्या ततो लग्नबलेतरा।'

इस प्रकार परिहार और दान-पूजा को विद्वान् द्वारा भली भाँति समझकर, मंगल-कार्य करना चाहिए।

निषेध—कृष्णपक्ष, प्रदोष, ७।१३ तिथि, अनध्याय, कर्कांश, पापांश, शनिवार, रात्रि, अपराह्न, पूर्वदिन संध्या में मेघगर्जन, गलग्रह, रिक्ता, व्यतीपात, वैधृति, गुर्वादित्य।

प्रदोष—१२ तिथि को अर्धरात्रि के पूर्व १३ तिथि का प्रवेश होने से प्रदोष

६	,,	१½ प्रहर रात्रि के पूर्व	७ ,,	,,
३	,,	१ प्रहर ,,	४ ,,	,,

गलग्रह—१।४।७।८।९।१३।१४।१५।३० तिथियाँ।

अनध्याय—आषाढ़ शु. १०, ज्येष्ठ शु. २।१५, पौष शु. ११, माघ शु. ४।७।१२, चैत्र के दोनों पक्ष की ३ और पूर्णिमा, १।८।१४।१५।३० तिथियाँ, संक्रान्ति, ग्रहण।

लग्न-चन्द्र नवांशेश फल—

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न नवांशेश
क्रूर,	जड़,	पापी,	चतुर,	षट्कर्मी,	यज्ञकर्ता-धनी,	मूर्ख	फल

सू.	चं.	मं.	बु. गु. शु.	श.	चन्द्र नवांश
दरिद्र,	दुःखी,	दरिद्र	विद्याभ्यासी	दरिद्र	फल

विशेष—यदि पुनर्वसु और श्रवण के चौथे चरण में चन्द्र हो तो, धनी होता है।

केन्द्रस्थ ग्रह फल—

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
राजसेवी	वैश्यवृत्ति	शस्त्रवृत्ति	पाठक	प्राज्ञ	धनी	म्लेच्छ सेवी

यदि चं. गु. शु. में से कोई भी सूर्य के साथ हो तो गुणहीन, भौम के साथ हो तो हिंसक, शनि के साथ हो तो निर्लज्ज, अन्यथा चतुर होता है। यदि चन्द्र, शुक्रांश में हो और शुक्र, त्रिकोण मे हो तथा गुरु, लग्न मे हो तो व्रती, वेदवक्ता होता है। यदि चन्द्र, शनि के नवांश में हो और त्रिकोण में शुक्र तथा लग्न में गुरु हो तो, निर्लज्ज होता है।

शाखानुसार—वार और नक्षत्र, यज्ञोपवीत में विशेष शुभ होते हैं।

शाखा	वार	नक्षत्र
ऋक्	गु.—	मृ. आर्द्रा. श्ले ह. चि. स्वा. मू. पू. ३
यजु	शु.—	रो. मृ. पुन. पु. उ. ३ ह. अनु. रे.
साम	मं.—	अश्वि. आर्द्रा. पुष्य उ. ३ ह. श्र. ध.
अथ.	बु.—	अश्वि. मृ. पुन. पु. ह. अनु. ध. रे.

१६७. छुरिका वन्धन मुहूर्त

क्षत्रिय तथा शूद्रों के लिये विवाह के पूर्व—

चैत्र के विना, यज्ञोपवीत के मास तिथि आदि में, भौमास्त एवं भौमवार को छोड़कर, किन्तु मंगल-शुद्धि होने पर शुभ है। —मु. ग.

१६८. केशान्त मुहूर्त (डाढ़ी वनवाना)

विप्र	क्षत्री	वैश्य	
१६	२२	२४	वें वर्ष में शुभ है।

मुण्डनोक्त मुहूर्त में करना चाहिए।

(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकर्म (६) निष्क्रमण (७) अन्नप्राशन (८) चौड (९) उपनयन (१०-११-१२-१३) चारो वेदों का आरम्भ (१४) समावर्तन (स्नान) (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि कर्म।

—संस्कार-दीपक (सुमन्तु, गौतम)

१६६–१७०. विद्यारम्भ मुहूर्त (चारो वेदों का आरम्भ और समावर्तन मुहूर्त) ❀

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
शुक्ल में	सू.	अ. रो. मृ. आर्द्रा	वेदारम्भ और समावर्तन का मुहूर्त, यज्ञोपवीत की भाँति होता है या उसी दिन होता है। २।३।६।६।१२ लग्न में, केन्द्र-त्रिकोण मे शुभग्रह, ३।६।११ वें पापग्रह, २।३।११ वें शुभग्रह शुभ हैं।
२।३।५।६।१०	चं	पुन. पु. श्ले. पू. ३	यज्ञोपवीत के बाद, उत्तरायण या कन्यार्क (आश्विन के नवरात्र) में, बुध की प्रबलता में, अनध्याय रहित समय में, गणेश-सरस्वती का पूजन करके विद्या (वेद) प्रारम्भ करना चाहिए।
११।१२	बु.	उ. ३ ह. चि. स्वा.	अनध्याय तिथि—११ ज्योतिष का, १२ व्याकरण का, १।८।१३।१४।१५।३० सर्व का।
कृष्ण में	गु.	अनु. मू. श्र. ध.	
२।३।५	शु.	श. रे.	
भद्रा वर्जित			

❀ [१०–११–१२–१३–१४ संस्कार]

१७१. वर-वरण मुहूर्त (लग्न=फलदान)			(वर के चन्द्र-बल में)
तिथि	**वार**	**नक्षत्र**	**विवरण**
दोनों पक्ष की १।२।३।५।६।७ ८।१०।११।१२ १३।१५	चं. बु. गु. शु.	कृ. रो. मृ. पुन. म. पू. ३ उ. ३ ह चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे.	पुण्याहे च विवाहर्क्षे चित्रावस्वग्निविष्णुभे । लब्ध्वा चन्द्रबलं दद्यान्निश्चय सत्यया गिरा ॥ वरण-प्रतिज्ञा यदि त्व पतितो न स्यात्सर्वदोषविवर्जितः । तुभ्यं कन्यां प्रयच्छामि द्विजदेवाग्निसन्निधौ ॥ पीले केश, न्यूनाधिकांगी, रोगिणी, रोम रहित या अधिक रोम, कठोर भाषण करने और कंजे नेत्रवाली कन्या के साथ विवाह, जहाँ तक हो सके, न करे। जिस वर या कन्या को देखकर नेत्र और मन को प्रसन्नता हो, ऐसे दम्पति संयोग से सिद्धियाँ होती हैं। किन्तु प्रवाहात्मक निर्णय न करना चाहिए।
रिक्ता, अमा और शुक्ल प्रतिपदा वर्जित		—मु. ग.	

१७२. कन्या वरण (कन्या के चन्द्र-बल में)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की १।२।३।५।६।७ ८।१०।११।१२ १३।१५ रिक्ता, अमा और शुक्ल प्रतिपदा वर्जित	चं. बु. गु. शु.	कृ. रो. मृ. पुन. म. पूर्वा ३, उ. ३ ह. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे.	विवाहोदितभे पूर्वा धनिष्ठा कृत्तिका श्रवे। कुमारीवरयोः कार्यं वरणञ्च शुभेऽहनि॥ —मु. ग. माता-पिता के गोत्र के ७ पीढ़ी के भीतर की न हो, दूसरे ने न ग्रहण की हो, वर से छोटी आयु की हो, आरोग्य हो, जिसके भाई हो, असमान प्रवरवाली हो, भिन्न ऋषि गोत्र वाली हो, विकलांग न हो, मधुर नाम वाली, हंस या गज गति वाली हो, रोम-केश-दाँत छोटे हो, कोमलांगी हो, ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए।

१७३. दलन–कण्डन–मृदाहरण आदि का मुहूर्त (भद्रा त्याज्य)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की १।२।३।५।६।७।८ १०।११।१२ १३।१५	चं. बु. गु. शु.	कृ. रो. मृ. म. उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र ध. रे.	हल्दी चढ़ना, कूटना, पीसना, गीत, कलश, चित्रकारी, वेदी, मण्डप लीपना आदि का यह मुहूर्त है।
			कण्डन = कूटना। दलन = दरना। मृदाहरण = मागरमाटी। हरिद्रालेप।
वर–कन्या के घर में, अपने–अपने चन्द्र–बल में	या सर्व दिन	विवाह के पूर्व-कार्य (दलनादि), विवाह दिन से ३।६।६ वें दिन पूर्व, नहीं करना चाहिए एवं सर्वदा चन्द्र–शुद्धि आवश्यक नहीं है। मण्डप के दिन या दूसरे दिन मातृका पूजन, पितृ-निमन्त्रण करना चाहिए। वर का तैल कर्म, मातृकापूजन के पूर्व किया जाता है। पृष्ठ १०१ में से तैल कर्म का मुहूर्त देख लीजिए। कन्या का तैल कर्म, बारात आ जाने पर होता है।	

१७४. मण्डप के स्तम्भ स्थापन—				मंगलवार को मण्डप (खम्भ) गाड़ना और पंचक में मण्डपाच्छादन निषेध है।
५।६।७ के सूर्य में		ईशान कोण में	प्रथम स्तम्भ	
८।९।१०	,,	वायव्य	,,	
११।१२।१	,,	नैर्ऋत्य	,,	
२।३।४	,,	आग्नेय	,,	

चण्डायुध— '...अन्ते च यद्विष्ण्यं तच्चण्डायुधपातितम् ।'

—मु. ग. (पातदोषे)

भद्रा के अन्त में जो नक्षत्र हो, वह नक्षत्र 'चण्डायुध' कहाता है।

युंजीप्रीति—रे. से मृ. तक पूर्व भाग। आर्द्रा से अनु. तक मध्यभाग। ज्ये. से उभा. तक अन्त भाग। जब एक ही भाग में वर-कन्या के नक्षत्र होते हैं तब, युंजी (परस्पर) प्रीति होती है।

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७।८ १०।११।१२ १३।१५ और कृष्ण १ भी	सर्व दिन	रो. मृ. म. उ. ३ ह. स्वा. अनु. मू. रे.	मेष, वृषभ, मिथुन, वृश्चिक, मकर, कुम्भ के सूर्य में। मेष का चैत्र में, वृश्चिक का कार्तिक में और मकर का पौष में भी शुभ है। देवशयन वर्जित और उत्तरायण विशेष शुभ है। [पृष्ठ २०६ के द्वारा] वर के लिये सूर्य। कन्या को गुरु, दोनों को चन्द्र, शुद्ध होना चाहिए।
कृष्ण १३ से चन्द्रक्षय और भद्रा वर्जित			पञ्चान्धकाणलग्नानि, मासशून्याश्च राशयः। गौडमालवयोस्त्याज्या अन्यदेशे न गर्हिताः॥

विवाह लग्न के दोष

	पंगु	अन्ध (काण)	बधिर
दिवा	११ धननाश	१।२।५ वैधव्य	७।८ दरिद्र
रात्रौ	१२ धननाश	३।४।६ संतान कष्ट	६।१० दरिद्र

लग्नेश से या गुरु से युत या दृष्ट लग्न शुभ है।

विवाह लग्न के शुभयोग—

लग्न से	३।६।८।११	सू. श. रा. के.	शुभ
,,	३।६।११	मं.	,,
,,	२।३।११	चं.	,,
,,	१।२।३।४।५।६।९।१०।११	बु. गु.	,,
,,	१।२।४।५।९।१०।११	शु.	,,

(बृहज्ज्योतिःसार)

विवाह लग्न के अशुभ योग—

लग्न से	१२ वें	भाव में	श. चं.	अशुभ
,,	१०	,,	मं.	,,
,,	३	,,	शु.	,,
,,	१	,,	चं., पापग्रह	,,
,,	६	,,	लग्नेश, चं., शु.	,,
,,	८	,,	लग्नेश, चं., मं., शुभग्रह	,,
,,	७	,,	सर्वग्रह	,,

विशेष—गुरु-शुक्रोदय में और दिनत्रयात्मक बाल-वृद्धत्व के बिना शुभ है।

नवांशेश—नवांश राशि को या लग्नेश लग्न को या लग्नेश-नवांशेश की अन्योन्य दृष्टि हो तो, वर के लिये शुभ है। एवं लग्न-नवांशेश के, सप्तम नवांशेश की दृष्टि, सप्तम भाव के नवांश राशि पर हो या लग्नेश, सप्तम भाव को देखे या लग्नेश और सप्तम नवांशेश की परस्पर दृष्टि हो तो, कन्या के लिये शुभ है।

यदि बु. गु. शु. १।४।५।६।१० वें भाव में हो तो अब्द, ऋतु, तिथि, मास, नक्षत्र, पक्ष, दग्धतिथि, अंध-पंगु-बधिर लग्न, पापग्रह या चन्द्र से युक्त लग्न या त्याज्य नवांशादि का दोष नष्ट हो जाता है।

सू. ११ वें या बु. गु. शु. सप्तम को छोड़कर, अन्य केन्द्र या त्रिकोण में, ३।६।१०।११ वें चन्द्र या वर्गोत्तमी लग्न हो तो, सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

३।६।७।१२ लग्न मे या मीनांश में विवाह होने से कन्या, पतिव्रता होती है।

जन्म मास, जन्म तिथि, जन्म नक्षत्र, जन्म दिन में, आद्य गर्भ का कोई संस्कार न करना चाहिये। दूसरे गर्भ की सन्तति का विवाह, सन्तति-दायक होता है।

गोधूलि लग्न—(अर्थ पृष्ठ २२३ में)

यदा नास्तंगतो भानुर्गोधूल्या पूरितं नभः। सर्वमंगलकार्येषु गोधूलिश्च प्रशस्यते ॥
अर्धास्तात्पूर्वमप्यूर्ध्वं घटिकार्धन्तु गोरजः। स कालो मंगले श्रेयान् विवाहादौ शुभप्रदः ॥
निदाघे त्वर्धबिम्बेऽर्के पिण्डीभूते हिमागमे। मेघकाले तु पूर्णास्ते प्रोक्तं गोधूलिकं शुभम् ॥
प्राच्यानां कलिङ्गानां मुख्यं गोधूलिक स्मृतम्। गन्धर्वादिविवाहेषु वैश्योद्वाहे च योजयेत् ॥

रात्रौ लग्नं यदा नास्ति तदा गोधूलिकं शुभम् । शूद्रादीनां बुधः प्राहुर्न द्विजानां कदाचन ॥५
यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयकः । गोधूलिकः स विज्ञेयः शेषा धूलिमुखाः स्मृता ॥६
लग्नशुद्धिर्यदा न स्याद्यौवने समुपस्थिते । तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥७ज्योतिर्निबन्ध

गोधूलि में त्याज्य—अष्टमे जीवभौमौ च बुधश्च भार्गवोऽष्टमे ।
लग्ने षष्ठाष्टगश्चन्द्रो गोधूले नाशकस्तदा ॥८ अर्थ पृष्ठ २२४ में

षष्ठेऽष्टमे मूर्तिगते शशांके, गोधूलिके मृत्युमुपैति कन्या ।
कुजेऽष्टमे मूर्तिगतेऽथवास्ते, वरस्य नाशं प्रवदन्ति गर्गाः ॥९

षष्ठाष्टमे चन्द्रजचन्द्रजीवे, क्षोणीसुते वा भृगुनन्दने वा ।
मूर्तौ च चन्द्रे नियमेन मृत्युर्गोधूलिकं स्यादिह वर्जनीयम् ॥१०

कुलिकं क्रान्तिसाम्यं च लग्ने षष्ठाष्टमे शशी ।
तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पंचदोषैश्च दूषितः ॥११

गोधूलि का ज्ञान और लग्न की शुद्धि (पूर्वोक्त श्लोकों के अर्थ)

(१)—जबकि, सूर्य अस्त न हुआ हो और वन से लौटते हुए गायों (पशुओं) के द्वारा धूलि उठकर आकाश में भर गयी हो, वह समय (गोधूलि) सभी मंगल कार्यों में प्रशंसनीय है। (२)—सूर्य के बिम्ब के आधे भाग के अस्त होने के पहिले, आधी घटी (१२ मिनट) का 'गोरज' नामक सुसमय, विवाहादि मंगल कार्य में कल्याणकारी होता है। (३)—ग्रीष्म में अर्ध बिम्ब के समय, शीत में पूर्ण बिम्ब दृश्य हो किन्तु धूप न हो और वर्षा में बिम्ब के पूर्ण अस्त होने पर 'गोधूलि' समय शुभ होता है। (४)—पूर्व देश, कलिंग देश, गन्धर्व-विवाह और वैश्यों के विवाह के लिए 'गोधूलि' समय ही मुख्य मानना चाहिए। (५)—जब रात्रि में विवाह लग्न न हो अथवा शूद्रों का विवाह हो, तब 'गोधूलि' समय शुभ होता है (द्विजों के लिए कदापि नहीं)। (६)—जिस दिन गोधूलि लग्न से २।३।११ वें चन्द्र हो, उसे 'गोधूलि' कहते हैं अन्यथा 'धूलिमुख' कहा जाता है। (७)—जब लग्न-शुद्धि (रात्रि में) न हो और दम्पती की युवावस्था हो तब, निश्चय ही चारों वर्णों के लिए 'गोधूलि' समय श्रेष्ठ होता है (ज्योतिर्निबन्ध मत)।

गोधूलि में त्याज्य

(८)—जब गोधूलि-लग्न से ८ वें मंगल, बुध, गुरु, शुक्र में से कोई हों और १।६।८ वें चन्द्र हो तब, गोधूलि समय शुभ नहीं होता। (६)—गोधूलि-लग्न से १।६।८ वें चन्द्र होने से कन्या के लिए तथा १।७।८ वें मंगल होने से वर के लिए अशुभ होता है। (१०)—यदि चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र में से कोई, गोधूलि लग्न से ६।८ वें हो अथवा लग्न में चन्द्र हो तो 'गोधूलि-लग्न' वर्जित है। (११)—कुलिक, क्रान्तिसाम्य, १।६।८ वें चन्द्र हो तो, इन पाँच दोषों से दूषित 'गोधूलि-लग्न' वर्जित है।

कुलिक योग—

सूर्ये च सप्तमी सोमे पष्ठी भौमे च पंचमी। बुधे चतुर्थी देवेज्ये तृतीया भृगुनन्दने ॥
द्वितीया वर्जनीया च प्रतिपच्च शनैश्चरे। कुलिकाख्यो हि योगोऽयं विवाहादौ न शस्यते ॥

१ शनि, २ शुक्र, ३ गुरु, ४ बुध, ५ भौम, ६ चन्द्र, ७ रवि. (तिथि-वार में) कुलिक योग, विवाह आदि में दूषित होता है।

लग्न के दोष और अपवाद—

जन्म राशि और जन्म लग्न मे विवाह अशुभ है। किन्तु जन्म लग्न या जन्म राशि का स्वामी और विवाह लग्न का स्वामी एक हो या मित्रता हो तो, दोष नहीं है।

यदि विवाह लग्न ४।६।८।१०।१२ राशि की हो तो (जन्म राशि या जन्म लग्न से) अष्टम लग्न का दोष नहीं।

यदि अष्टम घर का नवांश या अष्टमेश, लग्न मे हो या जन्मलग्न या जन्मराशि से १० वीं लग्न या लग्नेश या उसका नवांशेश, लग्न में हो तो, अशुभ है।

कर्तरी—लग्न से १२ वें मार्गी पापग्रह और २ रे वक्री पापग्रह हो तो, कर्तरी दोष होता है।

कर्तरी दोष कारक क्रूरग्रह, अपने शत्रु या नीच राशि के या अस्त हों तो, कर्तरी दोष नहीं होता। शुक्र, यदि शत्रु या नीच राशि मे हो तो, षष्ठस्थ शुक्र का दोष नहीं। भौम, यदि अस्त, नीच, शत्रु क्षेत्री हो तो, दशमस्थ का दोष नहीं। चन्द्र, नीच या नीचांश में हो तो, ६।८।१२ वें स्थित चन्द्र का दोष नहीं।

विवाह लग्न के दश दोष

लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, बाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि।

(१) लत्ता दोष—

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रह
१२	७	३	२२	६	२४	८	२०	ग्रहर्क्ष से पीछे नक्षत्र में विवाह
१७	२२	२६	७	२३	५	२१	९	विवाहर्क्ष से आगे नक्षत्र में ग्रह

तत्त्व यह है कि, जिस नक्षत्र में विवाह हो, उस नक्षत्र से आगे १७ वें नक्षत्र पर सूर्य, २६ वें नक्षत्र पर मंगल, ७ वें नक्षत्र पर बुध, २३ वें नक्षत्र पर गुरु, ५ वें नक्षत्र पर शुक्र, २१ वें नक्षत्र पर शनि और ९ वें नक्षत्र पर राहु हो तो, लत्तादोष होता है। इसी प्रकार पूर्णिमा नक्षत्र से आगे ७ वें या पीछे २२ वें नक्षत्र पर चन्द्र होने से लत्तादोष होता है। (प्रायः कृष्ण ५–६–७ तिथि को होना सम्भव है और प्रायः चन्द्र का लत्ता नहीं देखा जाता)।

लत्ता सारणी

विवाहर्च	रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा	उभा.	रे.	भहर्च
सूर्य	पूषा.	उषा.	उभा.	अ.	भ.	रो.	आर्द्रा	पुष्य	म.	स्वा.	वि.	१२ वें
चन्द्र	पूभा.	उभा.	रो.	आर्द्रा	पुन.	श्ले	पूफा.	ह.	स्वा.	पूषा.	उषा.	७ ,,
मंगल	भ.	कृ.	पुष्य	म.	पूफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श.	पूभा.	३ ,,
बुध	म.	पूफा.	वि.	ज्ये.	मू.	उषा.	ध.	पूभा.	रे.	मृ.	आर्द्रा	२२ ,,
गुरु	उभा.	रे.	मृ.	पुन.	पुष्य	म.	उफा.	चि.	वि.	उषा.	श्र.	६ ,,
शुक्र	पुष्य	श्ले.	चि.	वि.	अनु.	मू.	उषा.	ध.	पूभा.	कृ.	रो.	२४ ,,
शनि	श.	पूभा.	कृ.	मृ.	आर्द्रा	पुष्य	म.	उफा.	चि.	मू.	पूषा.	८ ,,
राहु	उफा.	ह.	ज्ये.	पूषा.	उषा.	ध.	पूभा.	रे.	भ.	पुन.	पुष्य	२० ,,

(२) पात दोष—

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतीपात, गण्ड, शूल योगों के अन्त में, जो विवाह नक्षत्र हो वह, पात से दूषित है।

पात सारणी

विवाह नक्षत्र	रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
सूर्य के नक्षत्र	आर्द्रा	मृ.	अ.	कृ.	भ.	कृ.रो	भ.	रो.	भ.	भ.	अ.
	पुन.	आर्द्रा	मृ.	पुष्य	आर्द्रा	पुष्य	आर्द्रा	श्ले.	पुन.	पूफा.	म.
	पूफा.	म.	श्ले.	पूफा.	म.	ह.	पूफा.	ज्ये.	वि.	उफा.	पूफा.
	स्वा.	चि.	ह.	वि.	स्वा.	श्र.	पूषा.	मू.	अनु.	वि.	स्वा.
	मू.	ज्ये.	ज्ये.	पूषा.	श.	ध.	उषा.	ध.	उषा.	पूषा.	मू
	श.	ध.	रे.	उभा.	पूभा.	रे.	पूभा.	रे.	पूभा.	श.	ध.

यदि विवाह नक्षत्र रोहिणी हो तो, उस समय आर्द्रा, पुन. पूफा. स्वाती, मूल, शतभिषा नक्षत्र पर सूर्य न होना चाहिए; अन्यथा पातदोष होता है।

(४) विवाह में पंचशलाका द्वारा वेध विचार—
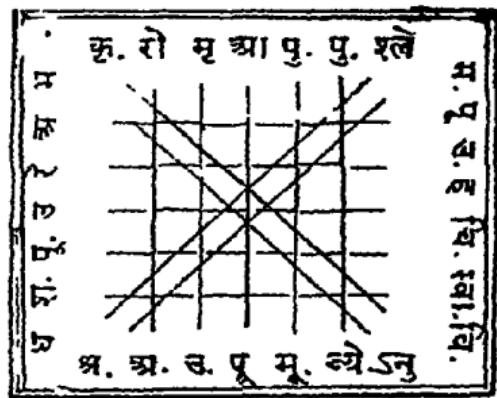
राशि ६।६।४० से ६।१०।५३।२० तक अभिजित् ।

वेध की अशुभता. एक मास के बाद प्रकट होती है।

वेध

प्रथम —चतुर्थ चरण का, और द्वितीय–तृतीय चरण का होता है। शुभ वेध में चरण का त्याग और अशुभ वेध में पूर्ण नक्षत्र ही त्याज्य है।

पंचशलाका वेध सारणी

विवाह नक्षत्र	रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
वेध नक्षत्र	अभि.	उषा.	श्र.	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	मृ.	ह.	उफा.

वधूप्रवेशने दाने वरणे पाणिपीडने। वेधः पंचशलाकाख्योऽन्यत्र सप्तशलाककः।

वधूप्रवेश, दान, वरण, विवाह में पंचशलाका से तथा अन्य कार्यों में सप्तशलाका में वेध देखना चाहिए।

यदि लग्नेश लाभ में हो तो, वेध दोष नहीं होता अथवा चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो अथवा चन्द्र को छोड़, अन्य शुभग्रह लग्न में या शुभग्रह के होरा में हो तो, वेध दोष नहीं होता।

(५) जामित्र—लग्न या चन्द्र से ७ वें कोई ग्रह हो तो, जामित्र दोष होता है। यह स्थूल जामित्र है। जो ग्रह, सप्तम में हो उससे ५५ वें नवांश पर लग्न या चन्द्र हो तो, अशुभ सूक्ष्म जामित्र दोष होता है।

एक मत—विवाहर्क्ष से १४ वें नक्षत्र पर ग्रह हो तो, जामित्र होता है।

जामित्र सारणी

विवाह नक्षत्र	रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
जामित्र नक्षत्र	अनु.	ज्ये.	ध.	पूभा.	उभा.	अ.	कृ.	मृ.	पुन.	उफा.	ह.

(६) बाण दोष— बृहज्ज्योतिःसार

पंचक, बाण—शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से गततिथि मे लग्न जोड़कर ९ से भाग देने पर यदि १ बचे तो मृत्युबाण (मृत्युपंचक) दोष मे विवाह अशुभ है। यह दाक्षिणात्य मे विशेष प्रसिद्ध है। यदि सूर्य २।११।२०।२९ वें अंश पर हो तो मृत्युबाण विवाह मे निषेध तथा प्राचीन मत, उत्तरात्य मे प्रसिद्ध है। मृत्युबाण—बुधवार तथा प्रातः सायंकाल मे विशेष अशुभ है।

(शेष पृष्ठ २३६ में)

पंचक बाण सारणी

सूर्यांश	१	२	४	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१९	२०	२२	२४	२६	२८	२९
बाण	मृ.	अ.	नृ.	चो	रो.	मृ	अ.	नृ.	चो.	रो.	मृ.	अ.	नृ.	चो.	रो.	मृ.	अ.
कार्य	वि.	गृ.	रा.	या.	व्र.	वि.	गृ.	रा.	या.	व्र.	वि.	गृ.	रा.	या.	व्र.	वि.	गृ.

मृ. = मृत्यु	अ. = अग्नि	नृ. = नृप	चो. = चोर	रो. = रोग	बाण वर्जित
वि. = विवाह	गृ. = गृहारम्भ	रा. = राजसेवा	या. = यात्रा	व्र. = व्रतबन्ध	कार्य में

(७) एकार्गल—सूर्यर्क्ष से अभिजित् सहित चन्द्रर्क्ष तक गिनकर, यदि सूर्यर्क्ष से चन्द्रर्क्ष विषम हो और उस विषम नक्षत्र के समय व्याघात, गण्ड, व्यतीपात, विष्कुम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड; इनमें से कोई योग हो तो, खार्जूर (एकार्गल) दोष होता है।

(८) उपग्रह—सूर्यर्क्ष से ५।७।८।१०।१४।१५।१८।१९।२१।२२।२३।२४।२५ वें चन्द्रर्क्ष हो तो, उपग्रह दोष होता है यह कुरु, वाह्लीक देश में त्याज्य है।

(९) क्रान्ति साम्य—पृष्ठ १३८ में देखिये।

(१०) दग्धा तिथि—(पृष्ठ १३५ में देखिए नीचे वाली)

लत्ता मालवके देशे पात कोशलके तथा। (पातश्च कुरुजाङ्गले)
एकार्गलं च कश्मीरे, वेध सर्वत्र वर्जयेत् ॥

युति, वेध, जामित्र, बाण, दग्धा; ये पाँच बड़े दोष हैं। इनके परिहार में विवाह लग्न का निश्चय करना चाहिए।

दशयोग—

अश्विनी से चन्द्रर्क्ष तक, अश्विनी से सूर्यर्क्ष तक गिनकर जोड़े, इसमें २७ का भाग दे तो, शेष में क्रमश फल :—

०	१	४	६	१०	११	१५	१८	१९	२०	शेष
वायुभय	मेघभय	अग्निभय	राजभय	चौरभय	मृत्युभय	रोगभय	वज्रभय	कलह	धननाश	फल

शेष बचे हुए समांक का आधा कर १४ जोड़े (विषमांक हो तो, उसमें १ जोड़कर आधा करे) अश्विन्यादि से उस योग या अर्धांक पर आगत नक्षत्र जाने। फिर चौदह रेखा सीधी खींचे, उसमें आगत से (अभिजित सहित) प्रारम्भ करे, जो ग्रह जिस नक्षत्र पर हो लिखे, चन्द्र भी लिखे तब यदि चन्द्र से किसी ग्रह का वेध हो तो, शुभ नहीं होता।

यदि सूर्य-चन्द्र बली हों तो एकार्गल, उपग्रह, पात, लत्ता, जामित्र, कर्तरी, उदयास्त आदि दोष नष्ट होते हैं।

संक्रान्ति—मेष-तुला-कर्क-मकर के सूर्य संक्रान्ति के पूर्वापर (आगे-पीछे) एक-एक दिन तथा संक्रान्ति दिन त्याज्य है । एवं अन्यान्य सूर्य संक्रान्तियों में १६-१६ घटी पूर्वापर त्याज्य हैं। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की संक्रान्ति में, त्याज्य घटी देखिये—

सूर्य	की संक्रान्ति पर	३२ या ३३	घटी	पूर्वापर की त्याज्य है
चन्द्र	,,	२	,,	,,
मंगल	,,	६	,,	,,
बुध	,,	२ या ६	,,	,,
गुरु	,,	८४ या ८८	,,	,,
शुक्र	,,	६ या ६	,,	,,
शनि	,,	१५० या १६०	,,	,,
ऋतु परिवर्तन पर	...	६६	,,	,,

तिथिनक्षत्रयोगानां सन्धौ द्विघटिका त्याज्या ।

वाण-पंचकदोष परिहार—(पृष्ठ २३२ का शेष)

रात्रि को चौर व रोग, दिन में नृप, सर्वदा अग्नि और सन्ध्याओं में मृत्यु पंचक वर्जित हैं। शनिवार को नृप, बुधवार को मृत्यु, मंगल को अग्नि व चौर और रविवार को रोग पंचक वर्जित है।

गण्डान्त—ज्ये. रे. श्ले. के अन्त्य की २ घटी, अ. मू. म. के आदि की २ घटी, नक्षत्र-गण्डान्त है। ४।८।१२ लग्न के अन्त्य की ½ घटी, १।५।९ लग्न के आदि की ½ घटी, लग्न-गण्डान्त हैं। ५।१०।१५ (पूर्णा तिथि) के अन्त्य की १ घटी, १।६।११ (नन्दा तिथि) के आदि की १ घटी, तिथि-गण्डान्त है।

क्रूराक्रान्त—जिस नक्षत्र को पापग्रह ने भोग किया, या भोग करने वाला हो तो उसमें जब चन्द्र होकर आगे निकल जाय, तब क्रूराक्रान्त का दोष नष्ट होता है।

ग्रहण—चौथाई ग्रहण के उपरान्त में ३ दिन, अर्ध में ४ दिन, पौन में ६ दिन, सम्पूर्ण में ८ दिन त्याज्य हैं और इसी प्रकार क्रमशः ग्रहण के पूर्व १½, २, ३, ४ दिन त्याज्य है।

विषघटी

कृत्तिका, पुनर्वसु, मघा, रेवती की—	३० घटी के उपरान्त	४ घटी	विषघटी होती हैं।
रोहिणी	,, ४०	४ ,,	,,
आश्लेषा	,, ३२	४ ,,	,,
अश्विनी	,, ५०	४ ,,	,,
उत्तराफाल्गुनी, शतभिषा	,, १८	४ ,,	,,
पुष्य पूफा. चित्रा उषा.	,, २०	४ ,,	,,
आर्द्रा. हस्त	,, २१	४ ,,	,,
पूर्वाभाद्रपदा	,, १६	४ ,,	,,
भरणी, पूषा. उभा.	,, २४	४ ,,	,,
अनुराधा श्रवण धनिष्ठा	,, १०	४ ,,	,,
मूल	,, ५६	४ ,,	,,
मृ. वि. स्वा. ज्ये.	,, १४	४ ,,	,,

चन्द्रो विषघटी दोष हन्ति केन्द्रत्रिकोणगः। लग्नं विनाशुभैर्दृष्टः केन्द्रे वा लग्नपस्तथा ॥

यदि चन्द्र, केन्द्र–त्रिकोण में हो, अशुभदृष्ट लग्न न हो अथवा लग्नेश, केन्द्र में हो तो, विषघटी का दोष नहीं होता।

विवाह–लग्न में त्याज्य दोष—

उत्पात के बाद ७ दिन त्याज्य, महापात (क्रान्तिसाम्य), दग्धा तिथि, दुष्टयोग, चं. गु शु. का अस्त, अयन, क्षयर्द्धि तिथि, गण्डान्त, भद्रा, संक्रान्ति, लग्न और नवांश के स्वामियों का अस्त, लग्नेश, नवांशेश और चन्द्र की ६।८ वें या पापग्रह के षड्वर्ग में स्थिति, चन्द्र और लग्न क्रूराक्रान्त तथा क्रूरयुक्त, चण्डीश, चण्डायुध मुहूर्त, खार्जूर, दशयोग, जामित्र, लत्ता, वेध, बाण, उपग्रह, पापकर्तरी, तिथिवार नक्षत्रोद्भव दुष्टयोग, अर्धयाम, कुलिक, वारदोष, क्रूराक्रान्त और क्रूरभुक्त, क्रूरगन्तव्य ये नक्षत्र, तथा ३ प्रकार (दिव्य–भौम–आन्तरिक्ष) के ग्रहण, उत्पातों से हत और केतूदय के नक्षत्र, सायंकाल में उदित नक्षत्र, ग्रह–भिन्न तथा युद्ध नक्षत्र, ग्रहयुक्त लग्न के दोष, विवाहादि शुभ कार्यों में वर्जित हैं।

कुयोग—तिथिवारोत्पन्न, तिथिनक्षत्रोत्पन्न, वारनक्षत्रोत्पन्न, तिथिवार नक्षत्रोत्पन्न होते हैं। केवल हूण–वंग–खश देश में कुयोग वर्जित हैं। देश–ज्ञान के लिए हमारे यहाँ के 'जातक–दीपक' ग्रन्थ को देखिए।

वार–तिथि योग—

वार	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	
ति.	१२	११	५	३	६	८	९	दग्ध योग
ति.	४	६	७	२	८	९	७	विष योग
ति.	१२	६	७	८	९	१०	११	हुताशन योग
ति.	७			१				संवर्त योग

तिथि–नक्षत्र योग—(सार्पयोग)

१२ —	१ —	२ —	५ —	३ —	११ —	१३ —	७ —	९ —	८ —	६	तिथि
श्ले.,	उषा.,	अनु.,	म.,	उ. ३,	रो.,	चि. स्वा.,	ह. मू.,	कृ.,	पूभा.,	रो.	नक्षत्र

वार–तिथि–नक्षत्र योग—

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वार
५	६	७	८	९	१०	११	तिथि
ह.	मृ.	अश्वि.	अनु.	पुष्य	रे.	रो.	नक्षत्र

मास मे शून्य तिथि—इनमें दर्शान्त मास ग्रहण करना ।

भाद्रपद	श्रावण,	वैशाख,	पौष,	आश्विन,	मार्गशीर्ष,	चैत्र	मास के
१।२,	३।२,	१२,	४।५,	१०।११,	७।८,	८।६	दोनों पक्षों की

कार्तिक	आषाढ़	फाल्गुन	ज्येष्ठ	माघ		
५	६	४	१४	५	कृष्ण पक्ष की	—शून्य तिथि
१४	७	३	१३	६	शुक्ल पक्ष की	

मास में शून्य लग्न और शून्य नक्षत्र

चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	क्वाँ.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	मास
११ र. रेव.	१२ चि स्वा.	२ उपा. पुष्य	३ पूफा ध.	१ उपा. श्र.	६ श. रे.	८ पूभा.	७ म. कृ.	६ वि. चि.	४ आर्द्रा अ. ह.	१० श्र. मू.	५ भ. ज्ये	शून्य लग्न शून्यर्क्ष

अर्धयाम—

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार का
४	७	२	५	८	३	६	वाँ प्रहरार्ध (अर्धयाम)

दिवा भद्रा यदा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिने । तदा विष्टिकृतो दोषो न भवेत्सर्वसौख्यदा ॥

पूर्वदल की भद्रा दिनसंज्ञक और परदल की भद्रा रात्रिसंज्ञक होती है। यदि दिनसंज्ञक भद्रा, रात्रि मे हो अथवा रात्रिसंज्ञक भद्रा, दिन में हो तो, भद्रा-दोष नहीं होता। मेष–वृष–कर्क–मकर की भद्रा स्वर्ग मे (शुभफल), मिथुन–कन्या–तुला–धनु की भद्रा पाताल में (धनलाभ) और सिंह–वृश्चिक–कुम्भ–मीन के चन्द्रमा के समय वाली भद्रा का वास मृत्युलोक मे होने से (सर्वकार्य विनाशिनी भद्रा) वर्जित है। आगे लिखे गये चक्र में (नाभि और पुच्छ की भद्रा समय में) आवश्यकता मे कार्य कर सकते हैं।—शीघ्र बोध

भद्रा—

	पूर्वदल मे	परदल मे	
शुक्ल पक्ष की	८।१५	४।११	तिथि के
कृष्ण ,,	७।१४	३।१०	
	दिन	रात्रि	—संज्ञक

भद्रा अंग विभाग—

घटी	५	१	१०	५	६	३	= ३० घटी का अनुपात
अंग	मुख	कण्ठ	हृदय	नाभि	कटि	पुच्छ	
फल	कार्यनाश	मृत्यु	धननाश	बुद्धि[illegible]	कलह	जय	

तिथि में शून्य लग्न

१	— ३	— ५	— ७	— ६	— ११	— १३	तिथि में
७।१०,	५।१०,	३।६,	४।६,	४।५,	६।१२,	२।१२	शून्य लग्न

शून्य तिथि, शून्य मास, शून्य लग्नादि मध्य-देश में त्याज्य हैं। अन्यत्र नहीं।

रवियोग—सूर्यर्क्ष से ४।६।९।१०।१३।२० वाँ चन्द्रर्क्ष हो तो, रवियोग शुभ है; यह अनेक दोषों को नाश करता है।

उत्पातादि योग (वार-नक्षत्र योग)—

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वार
वि.	पूषा.	[illegible]	रे	रो.	पुष्य	उफा.	उत्पात (अशुभ)
अनु.	उ[illegible]	[illegible]	अ.	मृ.	श्ले.	ह.	मृत्यु (अशुभ)
ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	आर्द्रा	म.	चि.	काण (अशुभ)
म.	वि.	आर्द्रा	मू.	कृ.	रो.	ह.	यमघण्ट योग ,,
उफा.	पूषा.	म.	श्ले.	पुष्य	पुन.	आर्द्रा	क्रकच (अशुभ)
मृ.	श्र.	उभा.	कृ.	पुन.	पूफा.	स्वा.	सिद्धि (शुभ)

ध्वांक्ष, [illegible], वज्र के आदि की ५ घटी
काण, [illegible] ,, २ ,,
पद्म, लुम्ब ,, ४ ,,
} त्याज्य हैं।

१७६. गुर्वादित्य—

गुरुक्षेत्रगते सूर्ये सूर्यक्षेत्रगते गुरौ।
विवाहं न प्रशंसन्ति कन्यावैधव्यकृद् भवेत् ॥ —आग्नेय पुराण

९–१२ राशि का स्वामी गुरु होता है; अतः इन राशियों में सूर्य होने से विवाह नहीं होता। एवं सिंह राशि का स्वामी सूर्य है; अतः इस राशि पर गुरु होने से विवाह वर्जित है। यह योग कन्या को विधवा करता है। यह एक प्रकार है। दूसरा प्रकार यह है कि, जिस राशि पर गुरु हो और उसी में सूर्य भी हो अर्थात् सूर्य-गुरु, एक राशि या एक नक्षत्र में हो तो, गुर्वादित्य होता है। इस समय में विवाहादि शुभ कार्य वर्जित हैं।

गुरुः सूर्यात्पृथक् भूत्वा पुनश्चेत् क्रियते युतिः।
गुर्वादित्योद्भवो दोषो न भवेद्वै कदाचन ॥ —बृहज्ज्योतिःसार

यदि गुरु, सूर्य के साथ से अलग होकर, पुनः आगे की राशि में योग करे तो, पुनः गुर्वादित्य का दोष नहीं होता। "गुर्वादित्ये दशाहानि"—अर्थात् गुर्वादित्य के प्रारम्भ के १० दिन छोड़कर, शेष दिनों में गुर्वादित्य का दोष नहीं होता।

१५७. सिंहस्थ गुरु व्यवस्था—

उद्यानचूड़ाव्रतवन्धदीक्षाविवाहयात्रा च वधूप्रवेशः।
तडागकूपत्रिदशप्रतिष्ठा बृहस्पतौ सिंहगते न कुर्यात्॥

अपवाद वचनानि

(१) सिंहराशौ तु सिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः।
सर्वदेशेष्वयं त्याज्यो दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ —ज्योतिर्निबन्ध, राजमार्तण्ड

(२) सिंहेऽपि भगदैवत्ये गुरौ पुत्रवती भवेत्।
अत्यन्तसुभगा साध्वी धनधान्यसमृद्धिता॥ —राजमार्तण्ड

(३) सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोऽथ गोदोत्तरतश्च यावत्।
भागीरथी याम्यतटे हि दोषो नान्यत्र देशे तपनेऽपि मेषे॥ —मुहूर्त चिन्तामणि

(४) गुर्वादित्ये दशाहानि गुरौ सिंहे त्रिमासिकम्।
अतीचारे च वक्रे च अष्टाविंशतिवासरान्॥

(५) गोदावर्युत्तरतो यावद् भागीरथी तटं याम्यम्।
तत्र विवाहो नेष्टः सिंहस्थे देवपतिपूज्ये॥ —पीयूषधारा में लल्लाचार्य

(६) मेषेऽर्के सह व्रतोद्वाहौ गंगागोदान्तरेऽपि च ।
सर्वःसिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिङ्गे गौडगुर्जरे ॥ —वृहज्ज्योतिःसार

(७) भागीरथ्युत्तरे कूले गौतम्या दक्षिणे तटे ।
विवाहो व्रतबन्धो वा सिंहस्थेज्ये न दुष्यति ॥ —पंचूपधारा में वशिष्ठ

(८) मंगलानीह कुर्वीत सिंहस्थो वाक्पतिर्यदा ।
भानौ मेषगते सम्यक् इत्याहुः शौनकादयः ॥

(९) सिंहस्थेऽपि मघासंस्थं गुरुं यत्नेन वर्जयेत् ।
अन्यत्र सिंहभागेषु विवाहादिर्विधीयते ॥ —ज्योतिर्निबंध

(१०) गोदाभागीरथीमध्ये नोद्वाहः सिंहगे गुरौ ।
मघास्थे सर्वदेशेषु तथा मीनगते रवौ ॥ —पराशर

(११) मघागतो मालवके निषिद्धः पूर्वागतो पूर्वदिशि प्रदुष्टः ।
वृहस्पतिश्चोत्तरपादसंस्थो देशेष्वशेषेषु नर्मदः स्यात ॥ —संस्काररत्नमाला

(१२) सिंहराशिस्थिते जीवे मेषेऽर्के तु न दूषणम् ।
आवश्यके विवाहादौ सर्वदेशेष्वपि स्मृतम् ॥ —मुहूर्त गणपति

(१३) मघादिपंचपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः ।
गंगागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥

(१४) गोदावरीसौम्यतटप्रवेशाद्भागीरथीयाम्यतटं च यावत् ।
सिन्धुप्रपातं सचिवे हिलेये चोद्वाहमाहुः परतो मघायाम ॥

(१५) मघां त्यक्त्वा यदा गच्छेत्फाल्गुनीं च बृहस्पतिः ।
पुत्रिणी धनिनी कन्या सौभाग्यसुखमश्नुते ॥

(१६) माघ्यां (माघमासीय पौर्णमास्यां) यदा मघा न स्युस्तदा सिंह गुरुरकारण-
मिति । अकारणं विवाहेऽनिषेधक इत्यर्थः ॥
"विशेषवाक्यैः सामान्यवचनस्य बाधकत्वं भवति ।"

सिंहस्थ व्यवस्था त्रिधा—

(१) सिंहांश सहित, (२) सिंहांश रहित, (३) केवल सिंहस्थ । प्रथम मे तो सभी देश में विवाह निषेध है । दूसरी में सभी देश में विवाह विधान है । तीसरी में गंगा और गोदावरी के मध्य मे निषेध है ।

सारांश

'सिंहस्थ-गुरु विवाह में निषेध' ऐसी धारणा-इसलिए बनी है कि, धनु-मीन का स्वामी 'गुरु' है और सिंह का स्वामी 'सूर्य' है। जब जब धनु-मीन का सूर्य होता है तब-तब विवाह नहीं होते। ठीक इसी प्रकार जब सिंह का गुरु हो तब भी विवाह न होना चाहिए—यह एक सीधा-सा सिद्धान्त मानकर अनेक आचार्यों ने धनु-मीन के सूर्य की भांति, सिंह के गुरु का निषेध लिखा है। सिंह के गुरु में जो गुरु-वर्ष (लगभग १३ मास) है उसे पाप-वर्ष और काल-मृत्यु-योग-वर्ष माना है। सिंह के गुरु में कन्या-विवाह में कन्या के मृत्यु-योग न बताकर कन्या का वैधव्य-योग बताया है। गुरु-दोष के कारण, कन्या के लिए बड़ी हानि होती है।

सूर्य तो, धनु-मीन में एक-एक मास मात्र रहता है; परन्तु सिंह में गुरु, एक वर्ष रहता है। तब क्या, सम्पूर्ण एक वर्ष तक ऐसा दोष बना रहेगा, क्या कभी न्यूनाधिक न रहेगा ? ऐसा प्रश्न रखकर विचारक आचार्यों ने ध्यान दिया, तब निर्णय किया कि, कलिंग, गौड़, गुर्जर में सम्पूर्ण वर्ष भर सिंहस्थ गुरु दोष माना जाय (श्लोक ६) दूसरे आचार्य ने कहा कि, इसी दोष स्थानों में गंगा से गोदावरी तक का मध्यभाग भी

सम्मिलित कर दिया जाय (श्लोक ५) तीसरे ने कहा कि, मघा में गुरु रहने पर मालवा देश में निषेध माना जाय; और पूफा में गुरु रहने पर पूर्वीय देश (पूर्वी पाकिस्तान, उड़ीसा आदि) में निषेध माना जाय, जिसने कि प्रथम-कथित वाक्य की पुष्टि की (श्लोक ११) चौथे ने कहा कि, गंगा-गोदावरी के मध्यदेशों में केवल सिंहांश मात्र का समय दोष युक्त माना जाय। अन्यत्र शब्द से स्थान न लेकर, सिंहांश को छोड़कर शेष सिंह के भाग में दोष न माना जाय (श्लोक ३) ऐसी व्यवस्था सुनकर बड़ा वितण्डावाद बढ़ गया; तब पुनः चौथे ने एक संशोधन रखा कि, मघादि पंच पाद तक गुरु, सर्वत्र निषेध माना जाय और शेष भाग में गंगा-गोदावरी के मध्य देश छोड़कर (अन्यत्र) दोषकारी न माना जाय (श्लोक १३) किन्तु साथ ही एक बात और है, मेष के सूर्य समय में गंगा-गोदावरी के मध्यभाग में भी विवाह हो सकते हैं, अर्थात् सिंहस्थ-गुरु का दोष, मेष के सूर्य समय में न माना जाय (श्लोक ६)

इस प्रकार से सिंहस्थ गुरु की व्यवस्था चार भागों में बँट गयी। (१) सिंहांश सहित (२) सिंहांश-रहित (३) केवल सिंहस्थ (४) मेष के सूर्य में। प्रथम में तो सर्वत्र निषेध। द्वितीय और चतुर्थ में सर्वत्र विधान। तृतीय में गंगा-गोदावरी के मध्य में निषेध

है। इन चारों व्यवस्थाओं से स्पष्ट हो जाता है कि, प्रत्येक आचार्यों का मत मान लिया गया है। किसी का विरोध नहीं। जिन पंचांगों में विवाह-लग्न दी जाती हैं वे, गंगा-गोदावरी के मध्य भाग को छोड़कर, अन्य स्थानों के लिए हैं तथा जिन पंचागों में विवाह-लग्न नहीं दी जाती; वे गंगा-गोदावरी के मध्य-भाग को प्रमुखता देकर, सिंहस्थ गुरु में निषेध सूचित करते हैं।

वास्तव में धर्मशास्त्र या प्राचीनता के विशेष पोषकों को चाहिए कि, सिंह का सम्पूर्ण गुरु निषेध मानना, सर्वोत्तम है, वह भी सर्वत्र के लिए। यदि ऐसा न कर सको तो, मघादि पंच पाद में गुरु का निषेध मानना और शेष में विधान मानना, मध्यम-प्रकार है, यह भी सर्वत्र के लिए है, परन्तु कम से कम गंगा-गोदावरी के मध्य और मालवा प्रदेश में तो, अवश्य ही मानना चाहिए। हाँ, मेष के सूर्य में गंगा-गोदावरी-मध्य में भी विधान मानना (जो कि माना ही जाता है)। तीसरा, सिंह के गुरु में सिंहांश तो, सर्वत्र निषेध माना जाय और मघागत मालवा में तथा पूफागत पूर्व भारत में निषेध मानना, अधम प्रकार है। उत्तम, मध्यम, अधम आदि, तीन प्रकार हैं। सरल ढंग से कार्य करना, आवश्यकता में कुछ कठिनता से कार्य करना, अत्यन्त आवश्यकता

में बड़ी ही कठिनताओं से कार्य करना आदि तीन प्रकार हो जाते हैं। यदि किसी को सर्वोत्तम ढंग मानना है तो, सम्पूर्ण सिंह के गुरु का समय 'त्याज्य' मानिए; अन्यथा पूर्वोक्त मध्यम और अधम प्रकार मात्र 'त्याज्य' मानिए।

१७८. मकरस्थ गुरु व्यवस्था—नीचत्वादिति

(१) मगधे गौडदेशे च सिन्धुदेशे च कौंकणे।
विवाहादिशुभे त्याज्यो नान्यस्मिन्नकगे गुरौ ॥१ —मुहूर्त गणपति

(२) रेवापूर्वे गण्डकीपश्चिमे च शोणस्योदक् दक्षिणे नीच इज्यः।
वर्ज्यो नायं, कौंकणे मागधे च गौडे सिन्धौ वर्जनीयः शुभेषु ॥२—मुहूर्त चिन्तामणि

मकर के गुरु के समय में मगध, गौड, सिन्धु देश, कौंकण में विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित हैं। अन्य स्थानों में नीच के गुरु में भी विवाह आदि करना वर्जित नहीं। १।

नर्मदा के पूर्व, गण्डकी के पश्चिम, शोणभद्र के उत्तर-दक्षिण में नीचस्थ गुरु समय, विवाह आदि में वर्जित नहीं है।

१७६. लुप्त संवत्सर—

देवपूज्योऽतिचारेण दशमासात्पुरा यदि । राश्यन्तरगते भूयो ऋतकुम्भचतुष्टयात् ॥
प्राग्राशौ यदि नो याति लुप्तसंवत्सरस्तदा । गंगानर्मदयोर्मध्ये देशे सोऽत्यन्तनिन्दितः ॥—मु. ग.

यदि गुरु, दश मास के भीतर, दूसरी राशि में चला जावे (अतिचार करे), परन्तु कुम्भ, मीन, मेष, वृष को छोड़कर अन्य राशियों में जावे, अनन्तर अपनी पूर्व राशि में न आवे तो, लुप्त संवत् होता है (एक वर्ष में जब गुरु, तीन राशि में रहता है तब लुप्त संवत् होता है), इस लुप्त संवत् में गंगा–नर्मदा के मध्यवर्ती देश में, विवाहादि वर्जित हैं।

१८०. गुण–मिलान—

[वर्ण आदि के गुण–मिलान, पंचांग–द्वारा जानिए]

जिनकी जन्म राशि ज्ञात न हो तो उनके व्यवहार नाम से विचार करना चाहिए, अर्थात् दोनों की जन्मराशि से या दोनों के व्यवहार नाम से ही विचार करना चाहिए। द्वितीय विवाह और शूद्र के लिए व्यवहार (पुकारने वाले) नाम से ही विचार करना योग्य है। जब सद्भकूट (परस्पर १।३।४।७।१०।११ वीं राशियों) में १६ गुण तक अधम, २० गुण तक मध्यम और ३० गुण तक उत्तम होते हैं। तब दुष्ट भकूट (परस्पर

२।४।६।८।६।१२ वीं राशियों) में २० गुण तक अधम और २५ गुण तक मध्यम होते हैं। प्रायः १७ से अधिक गुणों में सम्बन्ध किये जाते हैं। किन्तु ग्रह-मैत्री के गुण होने पर १७ से कम गुणों में भी विवाह होते हैं।

मुख्यता—

विप्र के लिए	नाडी और ग्रहमैत्री शुद्धि परमावश्यक	
क्षत्री ,,	गण और वर्ण	,,
वैश्य ,,	तारा और भकूट	,,
शूद्र ,,	वर्ग और नृदूर	,,

न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विद्वादशे नैव षडष्टके वा।
ताराविरुद्धे नवपंचमे वा मैत्री यदा स्यात् शुभदो विवाहः॥
मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापि स्याद् गणानां न दोषः।
खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम्॥ —बृहज्ज्योतिःसार

यदि दोनों की राशीश मैत्री हो तो वर्ग, वर्ण, गण, योनि, द्विर्द्वादश, षडष्टक, तारा-अशुद्धि, नवपंचम का दोष नहीं होता (विवाह करना, शुभ होता) है। यदि दोनों के राशि-स्वामी की मित्रता हो या राशि-नवांशेश की मित्रता हो तो, गण का

दोष नहीं होता। सद्भकूट से राशीश–शत्रुता का विनाश होता है और राशीश–मित्रता से दुष्ट भकूट का विनाश होता है। ऐसा ही वाक्य—

गणदोषो योनिदोषो वर्णदोषः षडष्टकम् ।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत् ॥ —बृहज्ज्योतिःसार

जब दोनों की राशीश–मैत्री (या राशि नवांशेश मैत्री) होती है तब गण, योनि, वर्ण और षडष्टक का दोष नहीं होता।

जब दोनों की राशि एक ही हो या राशीश–मित्रता हो या नाडी और तारा की शुद्धि हो या राशिनवांशेश की मित्रता हो तो, दुष्ट भकूट का दोष नहीं होता। दुष्ट भकूट में द्विर्द्वादश, नवम–पंचम, षडष्टक होते हैं।

द्विर्द्वादश—

मीन + मेष, वृष + मिथुन, कर्क + सिंह, सिंह + कन्या, कन्या + तुला, वृश्चिक + धनु, मकर + कुम्भ में (वर–कन्या या कन्या–वर की राशियों में) शुभ है। परन्तु मेष + वृष, मिथुन + कर्क, तुला + वृश्चिक, धनु + मकर, कुम्भ + मीन में (वर–कन्या की या कन्या–वर की राशियों में) अशुभ है।

द्विर्द्वादशं शुभं प्रोक्तं मीनादौ युग्मराशिषु ।
मेषादौ युग्मराशौतु निर्धनत्वं न संशयः ।। —पीयूषधारा

केवल सिंह-कन्या राशि के दम्पती हो तो, द्विर्द्वादश शुभ होता है ।

नवम-पंचम—

मेष-सिंह, वृष-कन्या, मिथुन-तुला, सिंह-धनु, तुला-कुम्भ, वृश्चिक-मीन, धनु-मेष, मकर-वृष में नवम-पंचम शुभ है । इनमें राशीश-मित्रता और तत्त्व-मित्रता है ।

वरस्य पंचमे कन्या कन्यायाः नवमे वरः ।
एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम ।। —बृहज्जातक, बृहज्ज्योतिःसार

अर्थात् वर की राशि से ५ वीं राशि कन्या की हो और कन्या की राशि से ६ वीं राशि वर की हो तो, पुत्र-पौत्र को सुखकारक विवाह होता है । तब क्या, कन्या की मेष और वर की सिंह होने पर नवम-पंचक अशुभ माना जावे ? नहीं, क्योंकि—

मीनालिभ्यां युते कीटे कुम्भे मिथुनसंयुते ।
मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवपंचमे ।। —पीयूषधारा

अर्थात् मीन एवं वृश्चिक को कर्क से, कुम्भ को मिथुन से, मकर को कन्या से अशुभ नवम–पंचम होता है। इनमें परस्पर मित्रता न होकर, मित्र–सम हो जाते हैं अतएव अशुभ नवम–पंचक बताया गया है। किन्तु जहाँ दोनों परस्पर मित्र ही हों, वहाँ अशुभ नवम–पंचम नहीं होता, जैसे मेष–सिंह। 'वरस्य पंचमे कन्या'— के विरुद्ध भी वाक्य हैं। यदि इसे विशेष वाक्य मान लिया जावे तो, वृश्चिक राशि की कन्या से कर्क राशि के वर का मिलान ठीक हो जायगा, तब 'मीनालिभ्यां' क्यों लिखा गया। सारांश यह है कि, परस्पर मित्रता ही होना चाहिए, मित्र–सम में नवम–पंचम शुभ नहीं। हाँ, वर–कन्या क्रमशः मेष–सिंह में हों (सिंह–मेष में न हों) तो विशेष शुभ है ऐसा भावार्थ लेकर 'वरस्य पंचमे कन्या' लिखा गया है। परन्तु मेष–सिंह या सिंह–मेष, परस्पर अशुभ नवम–पंचम नहीं हैं।

द्विर्द्वादश, नवम-पंचम के शब्द-विन्यास से पता चलता है कि, ग्रन्थकारों का भावार्थ इस प्रकार कहा जा सकता है कि, जब कन्या से दूसरी या नववीं राशि का वर हो और परस्पर मित्र हों तो, विशेष शुभ हैं। और जब कन्या की राशि से १२ वीं या ५ वीं राशि का वर हो और परस्पर मित्र हों तब केवल शुभ होता है; क्योंकि,

पुंसो गृहात्सुतगृहे सुतहा च कन्या धर्मे स्थिता सुतवती पतिवल्लभा च ।
द्विर्द्वादशे धनगृहे धनहा च कन्या रिःफे स्थिता धनवती पतिवल्लभा च ॥

—ज्योतिः प्रकाश (पीयूषधारा)

यदि वर से पाँचवीं राशि की कन्या हो तो सुत हानि और यदि वर से ६ वीं राशि की कन्या हो तो सुतवती तथा पति प्रिया होती है। इसी प्रकार वर से दूसरी राशि की कन्या हो तो धननाश और यदि वर से १२ वीं राशि की कन्या हो तो धनवती तथा पतिप्रिया होती है। इस श्लोक से 'वरस्य पंचमे कन्या' का विरोध पड़ता है अतएव यदि 'वरस्य नवमे कन्या कन्याया पंचमे वरः।'—ऐसा पाठ कर दिया जावे तो, दोनों की एकवाक्यता हो जायगी। 'वरस्य पंचमे कन्या' ऐसा पाठ पाया जाता है, जो कि अशुद्ध हो गया है। हाँ, दोनों पाठ तभी शुद्ध माने जा सकते हैं जबकि मेष-सिंह या सिंह-मेष के वर-कन्या हों अर्थात् दोनों की परस्पर मैत्री हो, यही सारांश है।

राशिनाथविरुद्धेऽपि सबलावंशकाधिपौ ।
तन्मैत्रे च कर्तव्यः दम्पत्योः शुभमिच्छता ॥

यदि ग्रह–मैत्री न हो तो, नवांश–मैत्री होनी चाहिए। सारांश यह कि, दोनों। की तारा–शुद्धि, लग्न-लग्नेश, लग्ननवांशेश, चन्द्रराशीश, चन्द्रराशि–नवांशेश और एकाधिपत्य में से कोई अवश्य होना चाहिए।

षडष्टक—

शुभ	अशुभ	
मेष–वृश्चिक	वृष–धनु	एकाधिपत्य तथा ग्रह-मित्रता में शुभ; अन्यथा राशीश-शत्रुता में अशुभ षडष्टक होता है।
मिथुन–मकर	कर्क–कुम्भ	
सिंह–मीन	कन्या–मेष	
तुला–वृष	वृश्चिक–मिथुन	
धनु–कर्क	मकर–सिंह	
कुम्भ–कन्या	मीन–तुला	

यदि कन्या की सम राशि से छठी विषम राशि वर की हो तो, मित्र षडष्टक होता है। इसी प्रकार कन्या की विषम राशि से आठवीं समराशि का वर हो तो भी

मित्र षडष्टक होता है। परन्तु कन्या की सम राशि से आठवीं वर की या वर की विषम राशि से छठी राशि कन्या की हो तो शत्रु षडष्टक होता है। यदि मित्र षडष्टक हो तो शुभ तथा शत्रु षडष्टक हो तो अशुभ विवाह होता है। जब राशि मित्रता, एकाधिपत्यता, राशिनवांशेश मैत्री, तारा-शुद्धि, राशिवश्यता में से कोई हो तो, षडष्टक का दोष नहीं होता।

सप्तक—

मृगः कुलीरेण घटेन सिंहो वैरप्रदः स्याच्छनिसप्तकोऽयम्।

विषम—सप्तक शुभ। सम सप्तक अशुभ। मेष-तुला. मिथुन—धनु, विषम सप्तक हैं। वृष-वृश्चिक, कन्या-मीन सम-सप्तक हैं। किन्तु इन सबों में ७—७ गुण, एक समान होते हैं। अतएव इसका साधारण विचार है। विषम सप्तक या सम सप्तक (दोनों ही) में अपने-अपने तत्त्वों के आधार पर मित्र ही हैं। इनमें राशि तत्त्व की मित्रता पर ध्यान रखा गया है (राशीश—मित्रता पर नहीं)।

तत्त्व—

मेष—सिंह—धनु = अग्नि । मिथुन—तुला—कुम्भ = वायु।

वृष—कन्या—मकर = पृथ्वी। कर्क—वृश्चिक—मीन = जल।

अग्नि से वायु की और पृथ्वी से जल की परस्पर मित्रता, प्रसिद्ध है।

चतुर्थ-दशम—

तुलामृगेणाथ वृषेण सिंहो मेषेण कीटो मिथुनेन मीनः।
चापेन कन्या घटमेन चालिर्दौभाग्यदैन्ये दशतुर्यकेऽस्मिन् ॥

तुला-मकर, वृष-सिंह, मेष-कर्क, मिथुन-मीन, धनु-कन्या, कुम्भ-वृश्चिक का अशुभ होता है; और शेष का शुभ होता है। परन्तु प्रत्येक चतुर्थ-दशम में ७-७ गुण, एक समान बताये गये हैं। यथा—मेष से कर्क-मकर का, वृष से सिंह-कुम्भ का, मिथुन से कन्या-मीन का, कर्क से तुला-मेष का, सिंह से वृश्चिक-वृष का, कन्या से धनु-मिथुन का, तुला से मकर-कर्क का, वृश्चिक से कुम्भ-सिंह का, धनु से मीन-कन्या का, मकर से मेष-तुला का, कुम्भ से वृष-वृश्चिक का, मीन से मिथुन-धनु का।

त्रिरेकादश—

यह सर्वदा शुभ होता है। इस प्रकार स्व, सप्तक, चतुर्थ-दशम, त्रिरेकादश को शुभ मानकर सबों में ७-७ गुण रखकर सद्भकूट कर दिया गया है। शेष द्विर्द्वादश, नवम-पंचम, षडष्टक को अशुभ भेद से शून्य गुण कर दिये गये हैं।

मृत्युः षट्काष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ।
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत ॥ मु. चि.

अशुभ षडष्टक जैसे मेष-कन्या में मृत्यु, अशुभ नवम-पंचम जैसे मीन-कर्क में सन्तान हानि और अशुभ द्विर्द्वादश (जैसे मेष-वृष) मे दरिद्रता होती है ।

ग्रन्थान्तर में पाया जाता है कि, दोनों की लग्नों मे परस्पर षडष्टक न होना चाहिए । लग्नों का द्विर्द्वादश साधारण माना गया है । लग्नों का त्रिकोण, बहुत शुभ माना गया है । लग्नों का स्व-सप्तक भी विशेष शुभ होता है ।

(१) वर का सप्तमेश, जिस राशि में हो यदि, उसी राशि की कन्या हो तो विवाह शुभ है।
(२) वर के सप्तमेश की राशि या सप्तमेश की उच्च-नीच राशि की कन्या से विवाह शुभ है।
(३) वर के शुक्रस्थ राशि की कन्या से विवाह शुभ है ।
(४) वर की सप्तमस्थ राशि में कन्या की राशि हो तो शुभ है ।
(५) वर के लग्नेशस्थ राशि मे कन्या की राशि हो तो शुभ है ।

वर (अश्विनी)	कन्या (भरणी)
ता. १६।७।१६११ ई.	ता. ११।२।१८२४ ई.

वर कुंडली	कन्या कुंडली
११ (लग्न); १२; १०; ९; ८; ७ गु. के.; ६; ५ शु.; ४ सू. बु.; ३; २; १ चं. मं. रा. श.	४ (लग्न); ५ रा.; ३; २; १ चं.; १२ शु.; ११ के.; १० सू. बु.; ९; ८ मं. गु.; ७ श.; ६
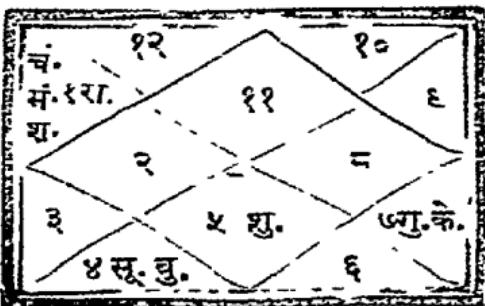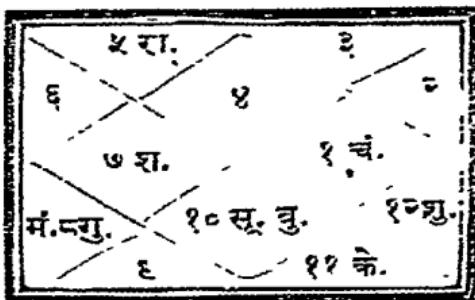
इन दोनों मे, लग्नों से षडष्टक दोष है। किन्तु दोनों की राशि, एक ही है। पृष्ठ २६१ के नियम दो से, वर के सप्तमेश की उच्च (मेष) राशि अथवा नियम ५ से वर की लग्नेशस्थ (मेष) राशि वाली कन्या से सम्बन्ध करना शुभ है।

नाड़ी-विचार—

त्रिपर्व गणना

(कनिष्ठिका) आदि नाडी—अ., आ., पुन., उफा., ह., ज्ये., मू. श., पूभा.
(अनामिका) मध्य नाडी—भ., मृ., पु., पूफा., चि., अनु., पूषा., ध., उभा.
(मध्यमा) अन्त्य नाडी—कृ., रो., श्ले., म., स्वा., वि., उषा., श्र., रे.

नक्षत्र तीन प्रकार के हैं द्विपाद, त्रिपाद और चतुष्पाद। जब दोनों की एक ही नाडी हो तो, मृत्यु होना लिखा गया है। परन्तु एक नाड़ी होने से सन्तान योग नहीं होने पाता—ऐसा भी विशेषज्ञों का मत है। कोई एक नाडी के अर्थ, एक गोत्र भी मानते हैं, कोई एक नाडी को एक-सा रक्त मानते हैं जो कि एक-सा रक्ताणु, सन्तानोत्पत्ति में बाधक माना गया है। एक आचार्य का मत है कि, आदि-आदि नाड़ी और अन्त्य-अन्त्य नाड़ी, गोदावरी के दक्षिण देशों में तथा क्षत्री-वैश्य के लिए अशुभ नहीं होती; परन्तु मध्य-मध्य नाड़ी (एक सी) होने पर मृत्युयोग बताया गया है। 'निधनं मध्यमनाड्यां दम्पत्योर्नैव पार्श्वैकनाड्योः।' षडष्टक और नाड़ी विचार में जो 'मृत्यु' शब्द दिया है उसका अर्थ 'मरण' न होकर 'निन्दार्थ वाची' है। 'ब्रह्महापि नरः पूज्यो

यदि स्याद्विपुलं धनम् ।'—इस वाक्य में धन स्तुति है (ब्रह्महा-स्तुति नहीं) धनी पूज्य है (ब्रह्महा पूज्य नहीं)। ब्रह्महा तो, सर्वदा निन्दनीय रहेगा। नाडी दोष के चार अपवाद आगे देखिए।

(१) राश्यैके चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाडी दोषो नो गणानां दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ॥

यदि दोनों की राशि एक ही हो और नक्षत्र विभिन्न हों तो नाड़ी और गण का दोष नहीं होता। यदि दोनों का नक्षत्र एक ही हो और राशि विभिन्न हो तो भी नाड़ी और गण का दोष नहीं। यदि नक्षत्र भी दोनों का एक हो और राशि भी दोनों की एक ही हो तो, नक्षत्र के चरणों की भिन्नता निम्न-प्रकार से होना चाहिए।

आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चादिमम् ।
द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम् ॥
एवं भांशव्यधो येषां जायते वरकन्ययोः ।
तेषां मृत्युर्न संदेह, शेषांशाः स्वल्पदोषदाः ॥ पीयूषधारा

नक्षत्रों के प्रथम से चतुर्थ चरण का तथा चतुर्थ से प्रथम चरण का और द्वितीय से तृतीय चरण का तथा तृतीय से द्वितीय चरण का वेध होता है। जिन वर-कन्या का इस प्रकार का वेध हो तो, उनका मरण (अनिष्ट फल) होता है, इसमें सन्देह नहीं। शेष चरणों के वेध, स्वल्पदोषकारक होते हैं। यदि एक का प्रथम चरण हो तो दूसरे का द्वितीय या तृतीय चरण होना चाहिए। यदि एक का द्वितीय चरण हो तो दूसरे का प्रथम या चतुर्थ चरण होना चाहिए। यदि एक का तृतीय चरण हो तो दूसरे का प्रथम या चतुर्थ चरण होना चाहिए। यदि एक का चतुर्थ चरण हो तो, दूसरे का द्वितीय या तृतीय चरण होना चाहिए। ऐसी स्थिति मे वेध रहित, सापवाद नाडी शुद्धि कहनी चाहिए।

(२) चतुष्पात्दकन्यका ऋक्षं गणयेदश्विभादिकम्।
त्रिभं सव्यापसव्येन भिन्नं पर्व सुखावहम्॥
कन्यकर्क्षं त्रिपाच्चेत्स्याद् गणयेत्कृत्तिकादिकम्।
चतुर्भिः पर्वभिस्तद्वदभिजित्तारकान्वितम्।
कन्यकर्क्षं द्विपाच्चेत्स्याद् गणयेत्सौम्यभादिकम्।
पंचभिस्त्वत्वरोहे तु पंचमांगुलिवर्जिते॥ — गर्ग (पीयूषधारा)

चतुष्पाद नक्षत्र—अश्विनी भरणी रोहणी आर्द्रा पुष्य श्लेषा मघा पूफा. हस्त स्वाती अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूषा. श्रवण शतभिषा उभा. रेवती

त्रिपाद नक्षत्र—कृत्तिका, पुनर्वसु, उफा., विशाखा उषा पूभा.

द्विपाद नक्षत्र—मृगशिरा, चित्रा. धनिष्ठा

यदि कन्या का चतुष्पाद नक्षत्र हो तो, त्रिपर्व (कनिष्ठिका, अनामिका, मध्यमा) में क्रमोत्क्रम से अश्विनी से प्रारम्भ कर गणना करे; यदि एक ही अंगुली पर दोनों के नक्षत्र आ जावें तो नाड़ी दोष होता है और यदि दोनों के नक्षत्र विभिन्न अंगुली पर आ जावें तो, नाड़ी दोष नहीं होता। इस पद्धति का प्रचार सर्वत्र है। जैसा कि पृष्ठ २६३ मे लिखा जा चुका है।

यदि कन्या का त्रिपाद नक्षत्र हो तो चतुः पर्व (कनिष्ठिका. अनामिका, मध्यमा, तर्जनी) में क्रमोत्क्रम से, कृत्तिका से प्रारम्भ कर (पृष्ठ २६७) अभिजित् युक्त गणना करे, यदि दोनों के नक्षत्र, एक अंगुली पर न आवें तो, नाड़ी-शुद्धि कहनी चाहिए।

चतुः पर्व गणना

(कनिष्ठिका)	—	कृ.	म	पूफा.	ज्ये	मू.	पूभा.	उभा.
(अनामिका)	—	रो.	श्ले.	उफा.	अनु.	पूषा.	श.	रे.
(मध्यमा)	—	मृ.	पुष्य.	ह.	वि.	उषा.	ध.	अ.
(तर्जनी)	—	आर्द्रा.	पुन.	चि.	स्वा.	अभि.	श्र.	भ.

यदि कन्या का द्विपाद नक्षत्र हो तो पंच पर्व (कनिष्ठिका, अनामिका, मध्यमा, तर्जनी, अंगुष्ठ) मे क्रम से मृगशिरा से प्रारम्भ कर गणना करे, परन्तु उत्क्रम गणना मे अंगुष्ठ छोड़ दे। शेष ४ ही पर्व म गणना करे तो, जब विभिन्न अंगुली में दोनों के नक्षत्र आवें तब नाड़ी-शुद्धि कहनी चाहिए।

पंच पर्व गणना

(कनिष्ठिका)	—	मृ.	ह.	चि.	श्र.	ध.	रो.
(अनामिका)	—	आर्द्रा	उफा.	स्वा.	उषा.	श.	कृ.
(मध्यमा)	—	पुन.	पूफा.	वि.	पूषा.	पूभा.	भ
(तर्जनी)	—	पुष्य.	म.	अनु.	मू.	उभा.	अ.
(अंगुष्ठ)	—	श्ले.	०	ज्ये.	०	रे.	०
		क्रम	उत्क्रम	क्रम	उत्क्रम	क्रम	उत्क्रम

प्रथम (त्रिपर्व) प्रकार की गणना से फल बताया गया है कि, दोनों की मध्य नाडी में पतिनाश तथा आदि-आदि और अन्त्य-अन्त्य नाड़ी में स्त्रीनाश हो सकता है।

चतुर्नाडी त्वहल्यायां पांचाले पंचनाडिका। त्रिनाडी सर्वदेशेषु वर्जनीया प्रयत्नतः॥

चतुपर्व गणना अहल्या देश में, पंचपर्व गणना पांचाल देश में और त्रिपर्व गणना (अहिल्या-पांचाल देश छोड़कर) सर्वत्र करना चाहिए।

(३) रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते॥

(४) शुक्रः सौम्यो तथा जीवः एक राशीश्वरो यदि।
नाडीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः॥

रोहिणी, आर्द्रा, मृगशिरा, ज्येष्ठा, पुष्य, रेवती, उभा. में दोनों के नक्षत्र हों तो नाड़ीदोष नहीं होता। बुध-गुरु-शुक्र में से कोई एक ग्रह, यदि दोनों का राशीश हो तो, नाड़ीदोष नहीं होता। इस प्रकार ४ मतों से नाडी का अपवाद लिखा गया है फिर भी पाँचवाँ प्रकार, दान द्वारा नाड़ी-शुद्धि का भी उल्लेख है—

दोषानुपत्तये नाड्या मृत्युञ्जयजपादिकम् । विधाय ब्राह्मणाश्चैव तर्पयेत्काञ्चनादिना ॥
हिरण्मयीं दक्षिणां च दद्याद्वर्णादिकूटके । गावोऽन्नं वसनं हेम सर्वदोषापहारकम् ॥

—पीयूषधारा—बृहज्जातक

षडष्टक दान—गाय, बैल, ब्राह्मण को भोजन नवम पंचम दान—काँसा, चाँदी, गाय, बैल द्विर्द्वादश में दान—ब्राह्मणतर्पण, ताम्र, सुवर्ण एक नाड़ी दान—गौ, सुवर्ण. अन्न,वस्त्र, शिवजप	दान यथाशक्ति और यथा इच्छा से करना चाहिए ।

नृदूर—कन्या से द्वितीय नक्षत्र पति का हो तो पतिनाश
स्वामी से „ सेवक „ नौकरी हानि
ऋणदाता से „ ऋणग्राही „ धननाश ब्रह्मयामल (बृ.ज्यो.)

किन्तु कन्या का नक्षत्र यदि शत. हस्त स्वाती अश्वि. कृत्ति. पूषा. मृग. मघा हो या ग्रहमैत्री या योनिमैत्री हो तो, नृदूर दोष नहीं । यह नृदूर दोष, दक्षिण देश में ही विचारणीय है । अन्यत्र आवश्यकता नहीं ।

वर्ग—रेखा वाले वर्गों में परस्पर शत्रुता है। शूद्र जाति के लिए यह वर्ग विचार बताया गया है। वर-कन्या के नाम के प्रथम अक्षर का वर्ग लेना चाहिए।

कन्या के वर्ग	वर—के वर्ग
अवर्ग	तवर्ग
कवर्ग	पवर्ग
चवर्ग	यवर्ग
टवर्ग	शवर्ग
तवर्ग	अवर्ग
पवर्ग	कवर्ग
यवर्ग	चवर्ग
शवर्ग	टवर्ग

१८१. ग्रह-मिलान—
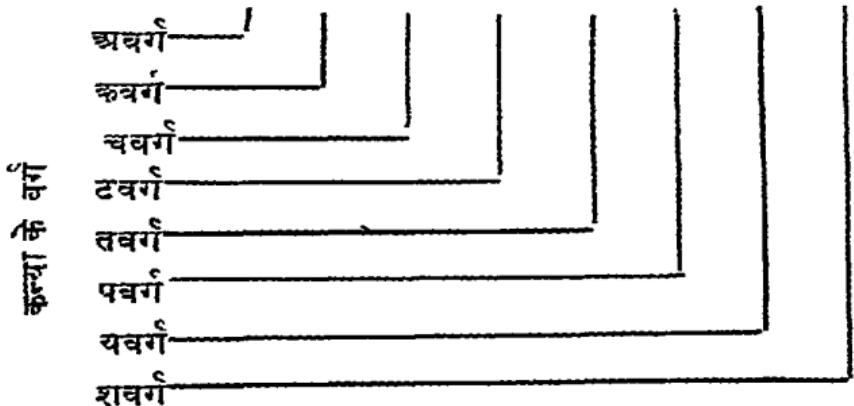
(१) लग्नाद्विधोर्वा यदि जन्मकाले महीसुतो वा शनिराहुकेतवः ।
व्ययाष्टतुर्ये प्रथमे कलत्रे कन्या वरं हन्ति वरश्च कन्याम् ॥

(२) शनिर्भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत् ।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत् ॥

वर और कन्या की कुण्डली में, लग्न तथा चन्द्रमा से १-४-७-८-१२ वें भाव में सूर्य, मंगल, शनि, राहु-केतु हों तो, वह मंगली-कुण्डली होती है ।

(३) शुक्रः खलान्तर्गतः सखलः सिताद्वा पापा व्ययाष्टरिपुगाः रमणी हराः स्युः ।

केवल वर की कुण्डली में शुक्र से १-२-६-७-८-१२ वें सूर्य, मंगल, शनि, राहु-केतु हो तो, वह वर की कुण्डली मंगली होती है । इसी प्रकार के योग—

(४) जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा ।
अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते ॥

(५) अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे ।
द्यूने मृगे कर्कि चाष्टौ भौमदोषो न विद्यते ॥

(६) सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवा भौमे ।
वक्रनीचारिगृहस्थे वास्तेऽपि न कुजदोषः ॥

(७) राशिमैत्रं यदायाति गणैक्यं वा यदा भवेत् ।
अथवा गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते ॥

(८) पार्थोनो (कन्या) दयगे रवौ रविसुतो मीनस्थितो दारहा ॥

(९) षष्ठे च भवने भौम राहुः सप्तम सम्भवः ।
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति ॥

(१०) सप्तमस्थो यदा राहुः पापयुग्मेन वीक्षितः ।
पत्नीयोगस्तदा न स्याद्भूतापि म्रियतेऽचिरात् ॥

(११) द्यूनकुटुम्बगतौ यदि पापौ दारवियोगजदुःखकरौ तौ ।
तादृशयोगजदारयुतश्चेज्जीवति पुत्रधनादियुतश्च ॥

(१२) लग्नव्ययाम्बुनिधनास्तकुजो मिथोऽत्रः स्त्रीणां मदाष्टमखलो विधवात्वकारी ॥
(१३) धनावसानस्मरयानरंध्रगो धरासुतो जन्मनि यस्य दारहा ।
तथैव कन्याजनिजन्मलग्नतो यदि क्ष्मासूनुरनिष्टदः पतेः ॥
(१४) न मंगलो चन्द्रभृगुद्वितीये, न मंगली पश्यतियस्य जीवः ।
न मंगली केन्द्रगते च राहुर्न मंगली मंगलराहुयोगे ॥
(१५) उपग्रहैः सितचतुरस्र संस्थितैर्मध्यस्थिते भृगुतनयेऽथवोभयोः ।
सौम्यग्रहैरसहिते न निरीक्षिते वा जायावधो दहननिपातपाशजः ॥
(१६) केन्द्र में चं. या चं. मं. साथ हो तो, भौम दोष नहीं होता ॥

[श्लोक ४ से १५ तक का सारांश]

(४) लग्न से १।४।७।८।१२ वें शनि हो तो, भौम (मंगली) दोष नहीं होता। (५) यदि मंगल, मेष का लग्न में, धनु का व्यय में, वृश्चिक का चतुर्थ में, मकर का सप्तम में, कर्क का अष्टम में हो तो, भौम का दोष नहीं होता। (६) लग्न या सप्तम में बलवान् गुरु या शुक्र हों अथवा लग्न से १।४।७।८।१२ वें वक्री, नीच या शत्रुगृही

(निर्बल) मंगल हो तो, भौम दोष नहीं होता (इस श्लोक में 'अस्तेऽपि' शब्द आया है, अपि शब्द से उपलक्षण मान कर १।४।८।१२ वाँ स्थान भी ग्रहण किया गया है) (७) जब राशिमैत्री (ग्रहमैत्री) हो अथवा गणैक्य (एक गण या गण-शुद्धि) हो, अथवा अधिक गुण (उत्तम गुण) हो तब भौम दोष नहीं होता। (८) लग्न में कन्या राशि का सूर्य हो और मीन का सप्तम में शनि हो तो; स्त्री का विनाश होता है। (९) षष्ठ में मंगल, सप्तम में राहु, अष्टम में शनि हो तो, स्त्री का विनाश होता है। (१०) सप्तम में राहु हो और उसे दो पापग्रह देखते हों, तो विवाह नहीं होता, यदि विवाह हो भी जाय तो, शीघ्र ही स्त्री की मृत्यु होती है। (११) धन और सप्तम भाव में पापग्रह हो तो स्त्री का वियोग दुःख होता है। यदि ऐसा ही योग, स्त्री की भी कुण्डली में हो (दोनों के हो) तो, पुत्र-धन-स्त्री का सौख्य होता है। (१२) लग्न से १।४।७।८।१२ वें मंगल (प्रथम श्लोक की भाँति वर या कन्या के) हो तो, परस्पर एक दूसरे को हानिकारक होता है। यदि कन्या के सप्तम-अष्टम में पापग्रह हो तो विधवा योग करता है। (१३) यदि लग्न से २।४।७।८।१२ वें मंगल (वर या कन्या के) हो तो, परस्पर एक दूसरे को हानिकारक होता है। (१४) चन्द्र-शुक्र, धन भाव में या मंगल पर गुरु की दृष्टि हो या केन्द्र में राहु हो या मंगल-राहु का योग हो तो मंगली दोष नहीं होता।

(१५) यदि शुक्र से ४।८ वें क्रूरग्रह हो तो उसकी स्त्री, अग्नि से जलकर मरती है। यदि शुक्र पापग्रहों के मध्य में हो तो स्त्री, ऊँचे स्थान से गिरकर मरती है। यदि पाप मध्य शुक्र, शुभयुक्त–दृष्ट न हो तो स्त्री फाँसी लगाकर मरती है।

यदि द्विस्वभाव राशि के शुक्र की पापयुति हो तो, स्त्री का शोक अवश्य होता है। यदि शुक्र के त्रिकोण में पापग्रह हो तो, स्त्री को क्लेश होता है। यदि सप्तमेश, त्रिक वा त्रिकेश से सम्बन्धित हो तो, परस्पर एक दूसरे को हानिकर होता है। सप्तमभाव या सप्तमेश का सम्बन्ध यदि त्रिक, त्रिकेश, पापग्रह से हो तो दम्पति को परस्पर हानिकर होता है यदि ऐसा योग, पति के हो तो स्त्री को और यदि स्त्री के हो तो पति को कष्टकारक होता है। 'यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा स्यात्तस्य तस्यातिवृद्धिः।'—के अनुसार, यदि मंगल कन्या–मेष का व्यय में, तुला–वृष का लग्न में, सिंह–मकर का चतुर्थ में, मेष–वृश्चिक का सप्तम में हो तो मंगली दोष नहीं होता; क्योंकि ऐसी स्थिति में मंगल, सप्तमभाव की वृद्धि ही करेगा, हानि नहीं।

(क) मंगली योग विचार में लग्न से १।२।४।७।८।१२ वें भावों में कोई पापग्रह वर की पत्रिका में हों तो कन्या को और यदि कन्या की पत्रिका में हों तो वर को कष्टकारक होता है।

(ख) केवल वर की पत्रिका में, शुक्र पर विचार करना चाहिए। शुक्र से १।२।४।५।७
८।६।१२ वें कोई पापग्रह हो तो, कन्या को कष्टकारक होता है।

इस प्रकार परस्पर मंगली योग कारक ग्रहों की एक संख्या बना ले, परन्तु कन्या के समान या कन्या से अधिक संख्या वर की कुण्डली में हों तभी, विवाह करना चाहिए। वर से अधिक (बली) अशुभ योग, कन्या की कुण्डली में हों तो, विवाह न करना चाहिए।

'तादृशे कुजे' अर्थात् दोनों का एक-सा मंगल रहना चाहिए। यथा-विषस्य विषमौषधम् या उष्णोनोष्णम् है। जब कन्या के विधवा योग देखे जाँय, तब वर की पत्रिका में भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। विधवा योग के नाशक, वर की पत्रिका में—'पुत्रस्थे मदनाधिपे वितनयो जायाविहीनोऽथवा।' अर्थात् सप्तमेश, पंचम में हो तो, स्त्री या पुत्र से रहित होता है। यदि ऐसे योग में वृश्चिक-धनु का शनि, पंचम में हो तो, स्त्री-सन्तान (दोनों) से युक्त रहता है। पंचम में वृष का चन्द्र भी स्त्री-पुत्र का सुखदायक होता है। यदि सप्तमेश, नीच का पंचम में हो तो स्त्री-पुत्र का सुख होता है। लग्नेश-सप्तमेश एकही ग्रह हो या लग्नेश-सप्तमेश का योग हो तो, स्त्री सुख अवश्य होता है।

१८२. विधवा योग

(१) क्रूरव्योमचरः स्त्रीणामष्टमस्थो विलग्नतः। नीचारिपापवर्गेषु यदि मृत्युकरः पतेः ॥
(२) द्व्याद्यिपापयुते भौमे सप्तमे वाष्टमे स्थिते। बालवैधव्ययोगः स्यात्कुलनाशकरी वधूः ॥
(३) जन्मलग्नादष्टमस्थे क्रूरे गगनगामिनि । वैधव्यमाप्नुयात्कन्या यदुक्तं बृहज्जातके ॥
(४) सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीडितौ । तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः ॥
(५) सप्तमेशोऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः। पापाश्रययुतो वाला वैधव्यं लभते ध्रुवम् ॥
(६) लग्नाच्चन्द्रादन्यतमे पापे सप्तमेऽष्टमे विधवा ॥
(७) भौमर्क्षे राहौ सप्तमेऽष्टमे व्यये वा विधवा ॥
(८) द्यूने राहौ कुलदोषदा दुःखार्ता ॥
(९) द्यूनगे पापे विवाहोत्तरं सप्तमाब्दे विधवा ॥
(१०) षष्ठाष्टमेशौ षष्ठगतौ व्यये पापस्तदापि विधवा ॥
(११) सप्तमे रन्ध्रेशे पापदृष्टेंऽशे नवोढा रण्डा ॥
(१२) कुजेऽष्टमे कुलटा ॥ रन्ध्रगे शनौ पतिरोगी ।
(१३) अष्टमे जीवे शुक्रे वा नष्टगर्भा मृतवत्सा वा ॥

(१४) सत्स्वर्थगेषु मरणं स्वयमेव तस्याः। सौम्यै रन्ध्रगतैः समेति तरुणी प्रागेव मृत्युं पतेः॥
(१५) रन्ध्रेशांशपतौ खले च विधवा निसंशयो भामिनी।
(१६) कामासक्तमनस्विनी च विधवा पापद्वये सप्तमे।

[विधवा योगों का सारांश]

(१) यदि कन्या के अष्टम भाव में नीच या शत्रु या पाप वर्गी कोई क्रूरग्रह हो तो विधवा योग होता है। (२) यदि कन्या के सप्तम–अष्टम में दो या अधिक पापग्रहों से युक्त मंगल हो तो शीघ्र विधवा होकर, कुलनाश करती है। (३) यदि कन्या के अष्टम में क्रूरग्रह हो तो वैधव्य योग होता है। (४) यदि कन्या के सप्तमेश–अष्टमेश, षष्ठ या व्यय में पापपीड़ित हों तो, वैधव्य होता है। (५) यदि कन्या के सप्तमेश, अष्टम में और अष्टमेश, सप्तम में पापयुक्त हो तो वैधव्य योग होता है। (६) लग्न या चन्द्रमा से सप्तम–अष्टम में पापग्रह हो तो वैधव्य योग होता है। (७) मेष–वृश्चिक का राहु, ७।८।१२ वें भाव में हो तो वैधव्य योग होता है। (८) सप्तम में राहु हो तो कुल को दूषित करने वाली, दुःखार्त कन्या होती है। (९) सप्तमस्थ पापग्रह हो तो, विवाह से ७ वें वर्ष में विधवा होती है। (१०), षष्ठेश–रन्ध्रेश, षष्ठ भाव में हो और व्यय में-

पापग्रह हो तो विधवा योग होता है। (११) सप्तम में, अष्टमेश पापनवांशस्थ या पापदृष्ट हो तो नवोढावस्था में विधवा होती है। (१२) अष्टम में मंगल हो तो कुलटा होती है और यदि अष्टम में शनि हो तो, रोगी पति होता है। (१३) अष्टम में गुरु या शुक्र हो तो गर्भपात या सन्तान की मृत्यु होती है (कन्या पत्रिका द्वारा देखिए) (१४) धन या अष्टम भाव में शुभग्रह हों तो उस कन्या की मृत्यु, पति के रहते हुए, हो जाती है। (१५) अष्टमेश का नवांशपति, यदि पापग्रह हो तो, विधवा होती है। (१६) यदि सप्तम भाव मे दो पापग्रह हों तो अत्यन्त कामासक्ता, मनमानी करने वाली और विधवा होती है।

वैधव्य योग शान्ति

(१७) जन्मोत्थं च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतं,
सावित्र्या उतपिप्पलं च सुतया दद्यादिमां वा रहः।
सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटं,
दद्यात्तां चिरजीविने न भवेद्दोषः पुनर्भूर्भवः॥

(१७) इस प्रकार के जन्मकालीन विधवा योगों को देखकर, सावित्री व्रत, अर्क-विष्णु-पिप्पल-कुम्भ में से किसी के साथ विवाह कर दे तो, वैधव्य योग का

दोष मिट जाता है। उपरान्त कन्या, सौभाग्यवती रहेगी। ग्रन्थों में अनेक योग हैं। जिनसे अशुभ योग नष्ट होकर, शुभ योग बन जाते हैं। उन पर भी विशेषज्ञों द्वारा निर्णय ले लेना चाहिए।

एक बात का अन्धविश्वास दूर कीजिए कि, हमारे पण्डितजी ने जो कह दिया, वही ठीक है? चाहे पण्डितजी का अध्ययन थोड़ा ही हो। व्याकरण, तर्क, ज्योतिष, साहित्य आदि के विशेष ज्ञान द्वारा ही, ज्योतिष-क्षेत्र के श्लोकों का अर्थ, भावार्थ जाना जा सकता है, अन्यथा नहीं।

मेरा अनुभव

चूँकि पुरुष का शुक्र और स्त्री का मंगल, क्रमशः वीर्य और रज का कारक होता है। अतएव पुरुष की पत्रिका में सप्तमेश और शुक्र की शक्ति देखना चाहिए; इसी प्रकार स्त्री की पत्रिका में सप्तमेश और मंगल की शक्ति देखना चाहिए। शक्ति तो अपने-अपने लिए आवश्यक है ही, किन्तु यह भी ध्यान रखे कि, एक की शक्ति, दूसरे को मारक तो नहीं है [कम से कम स्त्री की शक्ति, पुरुष के लिए मारक तो नहीं है—

ऐसी धारणा तब तक रहेगी; जब तक स्त्री-स्वतन्त्रता या विधवा विवाह का पूर्ण रूप न आ जायगा]।

अभी तक जो पद्धति, मिलान की बतायी गयी है, वह प्राचीन है, उसके कुछ प्रकरण आवश्यक भी हैं, अतएव उस प्रकार से तो देख ही लीजिए। उसके बाद जो हमने 'शक्ति' शब्द का उपयोग किया है, उसे देखने के लिए, जातक ग्रन्थों के अनुसार, वर-कन्या की पत्रिका द्वारा दोनों के सप्तमेश और शुक्र-मंगल के राश्यादि स्पष्ट कर उनका सप्तवर्गज (होरा आदि) बल, बना लेना चाहिए। फिर देखिए कि, कन्या का सप्तमेश और मंगल बलिष्ठ है या वर का सप्तमेश और शुक्र [यदि सप्तमेश ही मंगल या शुक्र हो तो, उनका बल दूना कर दीजिए]। यदि वर की अपेक्षा, कन्या बलिष्ठ है तो, विवाह न करे और यदि कन्या की अपेक्षा वर बलिष्ठ है तो, विवाह अवश्य करना चाहिए।

दूसरी बात यह देखना चाहिए कि, वर-कन्या के सप्तमेश और शुक्र-मंगल की दशाएँ। यदि ये ग्रह (सप्तमेश-मंगल-शुक्र), अशुभ दशा में हों तो, अशुभ फल होना, प्रसिद्ध ही है अन्यथा शुभ फल होगा। ग्रहों की दशा जानने का सरल प्रकार,

'जातक–दीपक' ग्रन्थ में स्पष्ट दिया गया है। चन्द्र के समान, सभी ग्रहों की दशा जानना चाहिए। प्रत्येक ग्रह, अपने राश्यादि स्पष्ट द्वारा एक नक्षत्र बनाता है; यथा शुक्र—४।१७।२३।० है। और—४।१३।२०।० तक मघा नक्षत्र तथा ४।२६।४०।० तक पूफा. नक्षत्र होता है। यह शुक्र ४।१७।२३।० होने से पूफा. नक्षत्र में हुआ, और पूफा. नक्षत्र में विंशोत्तरी दशा द्वारा शुक्रदशा होती है। तब ४।१७।२३।० वाला शुक्र, अपनी (शुक्र) ही दशा में होने से बलिष्ठ माना जायगा। इसी प्रकार सप्तमेश सूर्य ३।३।३।० होने से पुनर्वसु (गुरु दशा) का होगा, जोकि वर्गोत्तमी भी है। पृष्ठ २६२ में दी गयी वर की पत्रिका के सप्तमेश और शुक्र (दोनों) शुभ शक्ति रखने के कारण कुण्डली बलिष्ठ हो गयी है। इसी प्रकार कन्या की पत्रिका के सप्तमेश (शनि) और मंगल भी देखिए—शनि ६।११।२३।२ मंगल ७।२०।५।२ है। शनि हुआ स्वाती (राहुदशा) में और मंगल हुआ ज्येष्ठा (बुधदशा) में। इस वर की अपेक्षा, कन्या के दोनों ग्रह, निर्बल हैं; अतएव विवाह करना श्रेष्ठ है।

दोनों में कभी रोग न हो, कभी कोई दुःख न हो, सन्तान सुख, धन सुख, मैत्री सुख आदि पूर्ण रहे, घर में स्वर्गीय सुख हो—ऐसी भावना से फल का अनुसन्धान

कर, वर-कन्या का चुनाव हो तो, वर्तमान वातावरण, ऐसा कभी न होने देता; जिस कारण दुःख न हो, सुख ही मिले, वे सुख के कारणों की अपेक्षा, दुःख के कारणों का पालन अधिक किया जा रहा है। प्रत्येक कुण्डली मिलान कराने वाला, वैयक्तिक प्रश्न रखता है कि, सन्तान होंगी या नहीं ? और प्रत्येक राष्ट्र-संचालक, समष्टि इच्छा रखता है कि, सन्तति-निरोध। भावों के परमाणुओं का बीज, दोनों को कष्टप्रद बन रहा है। रोग अवश्य हो, इसके लिए विज्ञ जनता, जानती है कि, कितने प्रयोग अनुभवार्थ किये जा रहे हैं। आपके सभी ग्रह, बलिष्ठ तो हैं नहीं अर्थात् सर्वदा आप निरोगी हैं नहीं, फिर केवल विवाह के समय, मंगली-मिलान मात्र का हल्ला मचाकर कितनी सफलता चाहते हैं। केवल जन्म-चक्र मात्र से दीर्घायु योग बता देना, कितने आश्चर्य की बात है, जिसका जानना, सरल नहीं, अत्यन्त कठिन है। विवाह-सम्बन्धी कुण्डली मिलान का प्रचार, दो-चार आना या अधिक एक रुपया दक्षिणा के द्वारा किया जाता है। तब न तो विचार होता है और न कर ही सकते हैं। एक कुण्डली मिलान में दो मिनट समय लगाकर गुण बताया कि, मिलान हो गया। ५ मिनट समय लगाया कि, ग्रह-मिलान हो गया। कभी तो १० मिनट में १० कुण्डली देखकर बता दी जाती हैं कि, अमुक-अमुक ठीक है। एक रुपया मिलान में खर्च,

और सौ रुपया आतिशबाजी में खर्च, बस विवाह हो गया, कुछ गड़बड़ी हुई तो, यारों ने कहा कि, अरे मिलान ठीक न हुआ। वर्तमान में मिलान कराना, एक तमाशा बन गया है। यदि ठीक प्रकार से सांगोपांग वर-कन्या के मिलान को समझा जाय तो, कुछ अनुमान हो जाना सम्भव है: परन्तु ऐसा करने में कई दिनों का समय, अवश्य लगेगा। कुण्डली भी ठीक इष्ट से लेकर, ग्रहस्पष्ट, दशा, सप्तवर्गजवल युक्त होना चाहिए; अन्यथा, कटु अनुभवों का बढ़ते जाना, अनिवार्य है। अतएव कम से कम, इस लघुग्रन्थ में दिये गये योगों पर ध्यान देकर मिलान कीजिए, तो सम्भव है कि, अधिक सफलता मिलेगी।

वर्तमान में जब-जब वर-कन्या के गुण या ग्रह मिलान का प्रश्न आता है; तब-तब देखा यह जाता है कि, साधारण पण्डितजन, ग्रन्थों के साधारण वचनों को देखकर अपनी व्यवस्था दे देते हैं। किन्तु ग्रन्थों में वर-कन्या के चुनाव सम्बन्धी अनेक स्थल पर विस्तार से बहुत वर्णन किया गया है; जो कि इस लघु ग्रन्थ में सम्पूर्ण लेख तो नहीं दे सके। फिर भी ग्रह और गुण मिलान का एक अच्छा ढंग बता दिया गया है। गुण-मिलान में जब ग्रह-मैत्री या अंश मैत्री हो जाती है, तब नाड़ी को

छोड़कर शेष सम-सप्तक, चतुर्थ-दशम, नवम-पंचम, षडष्टक, वर्ण, वश्य, योनि, तारा और गण के दोष नष्ट हो जाते हैं। किसी एक ही ग्रन्थ के एक वाक्य मानना और उसी ग्रन्थ के दूसरे विशेष वाक्य न मानना—ऐसा हठ, अनेक विचारकों में पाया जाता है। जो पण्डित नामधारी 'वैयर्थ्यापत्तिः—का तर्क पूर्ण अर्थ नहीं समझते, उनके समक्ष कोई विशेष वाक्य काम नहीं दे पाते। उस समय साधारण वाक्यों को हठ-पूर्वक मान्यता दे देना, वर्तमान के अल्पज्ञ पण्डितों का एक मुख्य विषय हो गया है। कारण, शास्त्रों को वे, अपनी ज्ञान-मान्यता पर स्थिर कर लेते हैं। पूँछो तो, वर्गोत्तम शब्द समझते नहीं और कहेंगे कि, प्रमाण देकर समझाओ। अपवाद शब्द को तो, एक 'नगण्य' शब्द मानते हैं जो कि ज्योतिष के मुहूर्त क्षेत्र में अपवाद शब्द, विशेष वाक्य शब्द के अर्थ में उपयोग किया जाता है। विना अपवाद के कभी एक भी मुहूर्त या मिलान हो ही नहीं पाता। अतएव हमें उन पण्डितों से कहना है कि, जब कोई बाधा, ग्रह या गुण के मिलान की आ पड़े, तब किसी ज्योतिष-मर्मज्ञ से सलाह अवश्य ले लेना चाहिए। अभी लेखक, प्रकाशक, इतनी विकाश-सहायता नहीं पा सके हैं कि, किसी एक विषय का सांगोपांग सम्पूर्ण प्रकाशन, हिन्दी भाषा में सबके समक्ष ला सकें। इस ओर प्रवृत्ति की गयी है जो कि, धीरे-धीरे पाठकों को दृष्टिगोचर होगी। एक बात उन सज्जनों को

यह भी जानना चाहिए कि, एक साधारण विचार और एक विशेष विचार है, जो कि सभी (भोक्ताओं की मान्यता से) पण्डित नहीं कर पाते। वर्तमान में प्रायः सर्वत्र अशुद्ध जन्मपत्रिका तथा केवल जन्म-चक्र मात्र कन्या-वर चुनाव के लिए आता है और उन पर प्रश्न किया जाता है—दाम्पत्य सुख, आयु, भाग्य, सन्तान आदि का। जो कि १०–१५ मिनट में इन सबों का निर्णय दे देना, असम्भव सा है। तब ऐसी स्थिति में कुण्डली न मिलाना ही अच्छा है; ज्योंही मन भर जाय, त्योंही झट से विवाह कर लेना चाहिए।

यदि कुण्डली द्वारा मिलान की मान्यता भी रखी जाय, तो एक तिहाई कुण्डली की मान्यता, दूसरी तिहाई कुलज की मान्यता, तीसरी तिहाई वर-कन्या की परस्पर शिक्षा-दीक्षा पर ध्यान रखना चाहिए। परन्तु प्रायः यह मुख्य देखने में आया है कि, जितनी लेन-देन (दहेज) को मान्यता दी जाती है, उसका शतांश भी ज्योतिष द्वारा विचार में नहीं दिया जाता। तब ऐसी स्थिति में कितने श्रम का विचार किया जा सकता है?

१८३. नपुंसक योग

ये योग उस समय अवश्य देखना चाहिए, जबकि अज्ञानावस्था में विवाह होता है। वर्तमान में जबकि १८ वर्ष की कन्या और २५ वर्ष के वर की ज्ञानावस्था में विवाह होने लगे हैं; तब भी कभी इन योगों की आवश्यकता पड़ जाती है। प्रायः धनी व्यक्तियों में संकोच-लज्जा से भर कर कुछ ऐसी ही स्थिति आ जाती है, तब इन योगों की बड़ी ही आवश्यकता पड़ती है। प्रारम्भ के सात योग, आयुर्वेद में छह प्रकार के बताये गये नपुंसक भेद के समान हैं।

(१) विषम में सूर्य, सम में चन्द्र हो और परस्पर दृष्टि हो।
(२) विषम में शनि, सम में बुध हो और परस्पर दृष्टि हो।
(३) विषम में भौम, सम में सूर्य हो और परस्पर दृष्टि हो।
(४) विषम में बुध, सम में शनि हो और परस्पर दृष्टि हो।
(५) विषम में लग्न-चन्द्र, सम में भौम हो और परस्पर दृष्टि हो।
(६) विषम में चन्द्र, सम में बुध हो और भौम से दृष्ट हो।
(७) विषम में शुक्र, सम में चन्द्र हो और परस्पर दृष्टि हो।
(८) लग्न-चन्द्र-शुक्र पुरुष (विषम) राशि के नवांश में हो।
(९) शुभ दृष्टि रहित शुक्र-शनि, दशम या अष्टम में हों।

(१०) शुक्र-शनि या नीच शनि, व्यय या षष्ठ में हो तो क्लीव सदृश हो।

(११) लग्नेश, षष्ठेश, राहु और बुध एक साथ हों तो क्लीववत्।

(१२) शुक्र-शनि का द्विद्वादश योग हो तो, क्लीव सदृश होता है।

(१३) चन्द्र सम में और बुध विषम में भौम से दृष्ट हो।

(१४) लग्न सम में और चन्द्र विषम राशि या विषम नवांश में, भौम से दृष्ट हो।

(१५) लग्न सम में और चन्द्रविषम राशि या विषम नवांश में, सूर्य से दृष्ट हों।

(१६) शुक्र, वक्रीग्रह की राशि में हो तो पति, स्त्री को प्रसन्न नहीं कर पाता।

(१७) स्वगृही लग्नेश, सप्तमस्थ शुक्र को देखे तो पति, स्त्री को प्रसन्न नहीं कर पाता।

(१८) शनि-चन्द्र एक साथ, मंगल से ४।१० वें हो तो, संभोग में असमर्थ होता है।

(१९) तुला के चन्द्र पर मं. या सू. या श. की दृष्टि हो।

(२०) सप्तमेश, शुक्र के साथ, षष्ठ में हो तो, उसकी स्त्री नपुंसक या जातक अपनी स्त्री के प्रति क्लीव होता है।

(२१) यदि लग्न ३।६ राशि की हो और उसमें षष्ठेश बैठा हो और बुध से दृष्ट या युत हो तो, स्त्री-पुरुष, दोनों क्लीव होते हैं।

(२२) ३।६ लग्न में षष्ठेश, मं. या श. के साथ हो तो, नपुंसक होता है।

नोट—नपुंसक योगों मे (परस्पर दृष्टि में) गड़बड़ी है। अतः मेरे विचार से (जहाँ जातक-दृष्टि सम्भव न हो) वहाँ यदि जैमिनि-मत से दृष्टि ग्रहण की जावे तो, ये योग मिलना, सम्भव होगा।

१८४. विषकन्या के १२ योग :—

(१) रविवार, आश्लेषा, द्वितीयामें जन्म
(२) शनिवार, कृत्तिका सप्तमी „
(३) भौमवार, शत. द्वादशी „
(४) शनिवार, श्लेषा द्वितीया „
(५) भौमवार, शत. सप्तमी „
(६) रविवार, विशाखा द्वादशी „
(७) शनिवार, शत. द्वितीया „
(८) भौमवार, कृत्तिका सप्तमी „
(९) रविवार, श्लेषा द्वादशी „
(१०) दो शुभग्रह लग्न में, एक पाप-ग्रह दशम में, दो पापग्रह षष्ठ में।
(११) ६ वें मं., लग्न में श., ५ वें सू.।
(१२) दो शुभग्रह लग्न में शत्रुगृही हों, तथा साथ मे एक पापग्रह भी हो।

परिहार—लग्न या चन्द्र से सप्तम का स्वामी शुभग्रह हो तो, विष-कन्या का दोष मिट जाता है।

सावित्र्यादिव्रतं कृत्वा वैधव्यविनिवृत्तये।
अश्वत्थादिभिरुद्वाह्य दद्यात्ता चिरजीविने ॥

१८५. सोमो ददद् गन्धर्वाय गन्धर्वो दददग्नये । रयिं च पुत्राश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् ।
—(विवाह-मन्त्र)

कन्या का भोग २ वर्ष सोम, २ वर्ष गन्धर्व, २ वर्ष अग्निदेव करते हैं।

अष्टवर्षा भवेद् गौरी नववर्षा च रोहिणी ।
दशवर्षा भवेत्कन्या तदूर्ध्वं च रजस्वला ॥ —काशिनाथ
तद्वर्षाद् द्वादशात्काले वर्तमानमसृक् पुनः ।
जरापक्वशरीराणां याति पंचाशतः क्षयम् ॥ —सुश्रुत
'अथास्मै पंचविंशतिवर्षाय द्वादशवर्षां पत्नीमावहेत्'
ऊनषोडशवर्षायामप्राप्तः पंचविंशतिम् ।
यथा धत्ते पुमाङ्गर्भः कुक्षिस्थः स विपद्यते ॥
जातो वा न चिरं जीवेत् जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः ।
तस्मादत्यन्तबालायां गर्भाधानं न कारयेत् ॥ —आयुर्वेद
उत्कृष्टायाभिरूपाय वराय सदृशाय च ।
अप्राप्तामपि तां तस्मै कन्या दद्याद्यथाविधिः ॥ —मनु

स्वयम्वर—

त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कन्या ऋतुमती सती। ऊर्ध्वन्तु कालादेतस्माद्विन्देत सदृशं पतिम्।

ऋतुधर्म के ३ वर्ष पश्चात्, कन्या स्वयम्वर कर सकती है। स्त्री का समवर्ष में तथा पुरुष का विषम वर्ष में विवाह करना शुभ है।

१८६. ज्येष्ठ विचार—

१ ज्येष्ठ उत्तम, २ ज्येष्ठ मध्यम, ३ ज्येष्ठ अधम हैं। एक मत है कि, यदि ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्णिमा न हो तो, ज्येष्ठ मास का दोष नहीं। कोई आचार्य कहते हैं कि कृत्तिका नक्षत्र में सूर्य हो तभी तक ज्येष्ठ मास का निषेध है। रोहिणी में ज्येष्ठ मास शुभ है। ज्येष्ठ सन्तान का अर्थ, आदि गर्भ है। किन्तु 'त्रिज्येष्ठं नैव कारयेत्।"

किसी आचार्य ने ज्येष्ठ मास के समान, मार्गशीर्ष में भी ज्येष्ठ सन्तानों का विवाह निषेध किया है।

भुक्त्वा समुद्वहेत् कन्यां सावित्रीग्रहणं तथा। उपोषितः सुतां दद्यादागताय वराय च॥

भोजन करके कन्या-ग्रहण और गायत्री मन्त्र-ग्रहण करना चाहिए। परन्तु उपवास करके कन्यादान करना चाहिए।

१८७. निषेध व्यवस्था—

त्रिपौरुष कुल में पुत्र विवाह के बाद ६ मास तक कन्या का विवाह न करे। और पुत्र या कन्या के विवाह के बाद ६ मास तक मुण्डन न करे। और दो सगे भाइयों के साथ-साथ दो सगी बहिनों का विवाह न करे। और दो सगे भाई या दो सगी बहिनों का विवाह ६ मास के भीतर न करे। और शुभ कार्य के बाद ६ मास तक श्राद्धादि तिल तर्पण न करे। हाँ, आवश्यकता में कन्या के विवाह के बाद ६ मास के भीतर भी पुत्र का विवाह कर सकते हैं या संवत् बदलने पर कर सकते हैं। इसी प्रकार विवाह के बाद ६ मास तक यज्ञोपवीत और यज्ञोपवीत के बाद ६ मास तक मुण्डन नहीं करना चाहिए।

कन्या या वर के त्रिपौरुष कुल में वाग्दान के बाद किसी की मृत्यु हो जाय, तो एक मास बाद शान्ति (और्ध्वदेहिक क्रिया) करके विवाह करना चाहिए। किसी का यह भी मत है कि सूतकान्त में शान्ति करके विवाह करना चाहिए।

१८८. वधू-प्रवेश मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७।८ १०।११।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	चं. गु. शु. श.	अ. रो. मृ. पुष्य उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. म. मू. श्र. ध. रे.	स्थिर या शुभ लग्न में। विवाह के बाद २।४।५।६।७।८।१०।१२।१४।१६ वें दिन, उपरान्त विषम दिनों में, विषम मासों में, विषम वर्षों में वधू-प्रवेश शुभ है। ५ वर्ष के बाद सम-विषम का विचार नहीं। नवीन घर में वधू-प्रवेश कराना, वर्जित है। चन्द्र-बल में शुभ है।
भद्रा रहित	बु. आव-श्यके	वेध रहित नक्षत्र में शुभ।	१८९. मण्डप-विसर्जन— विवाह दिन से २।४।५।७ वें दिन, भद्रा-रहित सोम, बुध, शुक्र और गुरुवारों में शुभ है।

१६०. नूतन वधू द्वारा पाककर्म

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष क्री. १।२।३।५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५	चं. बुं. गु. शु.	कृ. मृ. उ. ३ ज्ये. श्र. ध. श. रे.	स्थिर लग्न। ४ थे शुभग्रह या शुद्ध, ८ वाँ भाव शुद्ध, ७ वे बली ग्रह हो। भाव शुद्ध = ग्रह-रहित भाव।

१६१. वधू-वास—

पतिगृह में ज्येष्ठ में	वधू का वास हो तो	ज्येष्ठ को	हानि
,, आषाढ़	,	सास	,,
,, पौष	,,	ससुर	,,
,, अधिमास	,,	पति	,,
पितागृह में चैत्र में कन्या का	,,	पिता	,,

१६२. पुरुष-संयोग मुहूर्त

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१२।१३	चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. ह. स्वा. रे.	देखिये गर्भाधान मुहूर्त पृष्ठ १६३ में
भद्रारहित और चन्द्रताराशुद्धि तथा गुरु-शुद्धि में शुभ		ऋतुधर्म के ८ वें दिन से सम दिनों में १६ दिन तक।	नान्दीश्राद्ध—यज्ञ, विवाह, मुण्डन, व्रतबन्ध में २१, १०, ३, ३ दिन पूर्व कर सकता है। यज्ञ में वरण, व्रत में संकल्प, विवाह में नान्दीश्राद्ध, श्राद्ध में पाक बन जाने पर, 'कार्य प्रारम्भ' समझा जाता है। विना गोत्र उच्चारण किये, नान्दी श्राद्ध करना चाहिए।

१६३. द्विरागमन मुहूर्त (नवीन घर में नवोढा का प्रवेश, वर्ज्य है)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१३।१५ तथा कृष्ण १ भी।	चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे.	मेष—वृश्चिक—कुम्भ के सूर्य मासों में, सू. चं. गु. शुद्धि में, गुरु-शुक्रोदय में, २।३।६।७।१२ लग्न में और १।३।५ (विषम) वर्ष में शुभ है। (पीछे या बायें शुक्र रहे, ऐसी दिशा में वधू की विदाई कराकर यह यात्रा करना चाहिए। शुक्र विचार आगे देखिए)
भद्रा, दिशा-शूल वर्जित			

शुक्र, सम्मुख या दाहिने हो तो बालक, गर्भिणी और नवोढा की यात्रा वर्जित है। बालक को विपत्ति, नवोढा को वन्ध्यत्व और गर्भिणी को गर्भकष्ट होता है। नवोढ़ा को वैधव्य, केवल द्विरागमन यात्रा में होता है।

भृगु, अंगिरा, वत्स, वशिष्ट, कश्यप, अत्रि और भरद्वाज गोत्र वालों के लिये, सम्मुख शुक्र का कोई दोष नहीं है। नगर प्रवेश, देशोपद्रव, देवप्रतिष्ठा, तीर्थयात्रा, राजपीडित दशा में, नववधू प्रवेश या सयानी (प्रौढ़ा) कन्या हो तो, सम्मुख या दाहिने शुक्र का दोष नहीं या अन्ध-शुक्र में यह यात्रा करना चाहिए। यदि चन्द्र, रे. अ. भ. कृ. रो. मृ. नक्षत्रों में हो तो, अन्ध शुक्र होता है।

अस्तंगते गुरौ शुक्रे सिंहस्थे वा बृहस्पतौ। दीपोत्सववलेनैव कन्या भर्तृगृहं विशेत्॥
उपचयगते(३।६।१०।११)जीवे भृगौ केन्द्रमुपागते। शुद्धे लग्ने शुभाक्रान्ते गन्तव्यं भर्तृमन्दिरे॥

चाहे गुरु-शुक्र का अस्त हो, चाहे सिंह का गुरु हो, परन्तु आवश्यकता में ऋतुमती विवाहिता कन्या, दीवाली के दिन, पतिगृह में जा सकती है। ऐसी यात्रा लग्न से ३।६।१०।११ वें गुरु, केन्द्र मे शुक्र, शुभयुक्त शुभ लग्न में, पतिगृह में कन्या को जाना चाहिए।

१६४. त्रिरागमन मुहूर्त (रवन)　　(यात्रावत् 'मासिकं द्रव्य'गकर्मणि')

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।७।१० ११।१३।१५ और कृष्ण १ भी	चं. बु. गु. शु.	अ. मृ. पुन. पुष्य ह. अनु. श्र. ध. रे.	राहु-शुद्धि १।५।६ सूर्य में राहु पूर्व में रहता है २।६।१० ,, ,, दक्षिण ,, ३।७।११ ,, ,, पश्चिम ,, ४।८।१२ ,, ,, उत्तर ,, यह सम्मुख एवं दाहिना त्याज्य है।
		भद्रा, शूल, चन्द्र और योगिनी शुद्धिमें	कन्या के लिये— विवाहे गुरुशुद्धिः स्याच्छुक्रशुद्धिर्द्विरागमे । त्रिरागमे राहुशुद्धिश्चन्द्रशुद्धिश्चतुर्गमे ॥
		यात्रा मुहूर्त देखिए	

१६५. खट्वा मुहूर्त (पृष्ठ ६८ में भी देखिए)

तिथि	वार	नक्षत्र	विवरण
दोनों पक्ष की २।३।५।६।७।८ १०।११।१२ १३।१५	चं. बु. गु. शु.	अ. रो. पुन. पु. उ. ३. ह. अनु.	कन्या संक्रान्ति का प्रथम पक्ष, धन-मीन संक्रान्ति और शुभ योगों में खाट बनवाना शुभ है। मृताशौच, भद्रा, वैधृति, पितृपक्ष, श्रावण-भाद्रपद में खाट बांधना (बिनना) वर्जित है। (खाट बनवाने में) खट्वा चक्र (सूर्यभात्) ५ । ८ । ११ । ४ शु. अ. शु. मृ.

१६६. विविध-विषय

(१) मास-प्रयोग—

विवाहादौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावनस्मृतः।
वार्षिके पितृकार्ये च मासश्चान्द्रोऽभिधीयते॥

विवाह आदि सौरमास में, यज्ञ आदि सावन मास में और वार्षिक पितृकार्य चान्द्रमास (कृष्णादि) में प्रयोग करना चाहिए। कृष्णादि चान्द्रमास ही जन्ममास, चौल आदि कर्मों में वर्जित हैं।

गर्भे वाधुर्षिके भृत्ये श्राद्धकर्मणि मासिके।
सपिण्डीकरणे नित्ये नाधिमासं विवर्जयेत्॥ —मुहूर्त मार्तण्ड

गर्भाधान, व्याज कार्य, नौकरी, प्रेतकर्म, मासिक कर्म, सपिण्डन, नित्यकर्म में अधिमास, नहीं छोड़ा (ग्रहण किया) जाता है।

(२) होली का फल—

यदि पूर्वी वायु चले तो, राजा-प्रजा को सुख। दक्षिणा वायु चले तो, दुर्भिक्ष। पश्चिमा वायु चले तो तृण और सम्पत्ति की वृद्धि। उत्तरा वायु चले तो, धान्य-वृद्धि। यदि धूम, सीधे आकाश को जावे तो, राजगढ़ (किला) छूट (टूट) जाता है (राजभंग होता है)।

(३) शुक्र का उदय फल—

चैत्र—मेघ, पशु, धन का सुख	आश्विन—सर्व सम्पत्ति
वैशाख—राजविग्रह	कार्तिक—शुभ
ज्येष्ठ—महावृष्टि	मार्गशीर्ष—शुभ
आषाढ़—मध्यम वृष्टि	पौष—छत्रभंग
श्रावण—पशुनाश	माघ—छत्रभंग
भाद्रपद—अन्नवृद्धि	फाल्गुन—अन्न मन्दा

(४) राशि-ग्रहण—

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत्॥
विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत्॥
जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामभं नामधिष्ण्यतः। व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदः॥

देशकार्य, ग्रामकार्य, गृहकार्य, युद्ध, नौकरी, व्यापार में नामराशि की प्रधानता होती है। विवाह, सर्व मंगल कार्य, यात्रा, ग्रह–गोचर में जन्मराशि की प्रधानता होती है। विवाहादि के गुण मिलान के समय, दोनों के जन्म नक्षत्र से अथवा दोनों के नित्य नाम नक्षत्र से विचार करना चाहिए। एक का जन्म नक्षत्र और दूसरे का नित्य नाम नक्षत्र द्वारा करने से, दोनों में से किसी की हानि होती है।

(५) प्रत्येक शुभ कार्य में निषेध—

जन्म के मास-तिथि-नक्षत्र-दिन आदि, भद्रा, वैधृति, व्यतीपात, अमावास्या, श्राद्धदिन, तिथि की क्षय–वृद्धि, क्षय–अधिमास, कुलिक, अर्धयाम, महापात (क्रान्ति–साम्य) और केवल विष्कुम्भ, वज्र योगों के आदि की ३–३ घटी त्याज्य है।

(६) साधारण लग्न–शुद्धि—

८।१२ वाँ भाव शुद्ध (ग्रह-रहित), जन्म राशि या जन्म लग्न से ३।६।१०।११ वीं (उपचय) राशि की लग्न—(शुभयुक्त या इष्ट) हो और कार्य लग्न से ३।६।११ वें चन्द्र हो तो, सम्पूर्ण कार्यों का प्रारम्भ करना, शुभ माना गया है।

(७) कार्य में ग्रह-बल—

गोचर द्वारा ग्रह-बल देखा जाता है। राजदर्शन में सूर्य, सम्पूर्ण कार्यों मे चन्द्र, युद्ध (मुकदमा) में मंगल, शास्त्र-पठन में बुध, विवाह में गुरु, यात्रा में शुक्र, दीक्षा में शनि का बल होना चाहिए। तारा मे अधिक चन्द्र, चन्द्र से अधिक सूर्य और सूर्य से अधिक भौमादि ग्रहों का बल शुभ होता है।

(८) ग्रहण-फल—

जन्म राशि से ३।६।१०।११ वें राशि पर ग्रहण हो तो शुभ, २।५।७।६ वें पर हो तो मध्यम तथा १।४।८।१२ वें पर हो तो अशुभ होता है।

(६) आषाढ़-पूर्णिमा को सायंकाल मे वायु, जिस दिशा में चले; उसका फल—

(१) आषाढमासस्य च पौर्णमास्यां सूर्यास्तकाले यदि वाति वातः।
पूर्वस्तदा सस्ययुता च मेदिनी, नन्दन्ति लोका जलदायिनो घनाः॥

(२) 'वन्हि कोणे वन्हिभीतिः पश्चिमे च जलाद्भयम्।'
'कृशानुवाते मरणं प्रजानामन्नस्यनाशः खलु वृष्टिनाशः।'

(३) 'याम्ये मही सस्यविवर्जितास्यात्परस्परं यान्ति नृपा विनाशम्॥'

(४) आषाढे पूर्णिमायां चेदनिलो वाति नैर्ऋतः ।
अनावृष्टिर्धान्यनाशो जलं कूपे न दृश्यते ॥
नैशाचरो वाति यदाऽन्नघातो नवारिदोपक्षयकारि भूरि ।
तदा मही सस्यविवर्जिता स्यात्क्रन्दन्ति लोकाः क्षुधया प्रपीडिताः ॥

(५) आषाढमासे यदि पौर्णमास्यां सूर्यास्तकाले यदि वारुणोऽनिलः ।
प्रवाति नित्यं सुखिनः प्रजाः स्युर्जलान्नयुक्ता वसुधा तदा स्यात् ॥

(६) आषाढे पूर्णिमायां तु वायव्ये यदि मारुतः ।
धर्मशालस्तदा लोको धनं धान्यं गृहे गृहे ॥
'वायव्यवाते जलदागमः स्यादन्नस्य नाशः पवनोद्यता द्यौः ।'

(७) सौम्येऽनिले धान्यजलाकुला धरा नन्दन्ति लोका भयदुःखवर्जिताः ।

(८) आषाढे पूर्णिमायां तु ईशान्ये वाति मारुतः ।
सुखिनो हि तदा लोका गीतवाद्यपरायणाः ॥
ईशानवृद्धौ बहुवारिपूरिता धरा च गावो बहुदुग्धसंयुताः ।
भवन्ति वृक्षाः फलपुष्पदायिनो वातेऽभिनन्दन्ति नृपाः परस्परम् ॥

वायु परीक्षा के अर्थ

पूर्व—धन-धान्य की वृद्धि, मेघ द्वारा सुवृष्टि, प्रजा को सुख।
आग्नेय—अग्निभय, प्रजानाश, अनावृष्टि, अन्ननाश।
दक्षिण—अन्ननाश, नृपनाश (राजा को पीड़ा)।
नैर्ऋत्य—अनावृष्टि, अन्ननाश, भूख पीड़ा, प्रजा-क्रन्दन।
पश्चिम—जलभय, प्रजा को सुख, जल-अन्न वृद्धि।
वायव्य—प्रजा में धार्मिक आचार, धन-धान्य वृद्धि, वायु-वृष्टि से अन्ननाश।
उत्तर—जल-धान्य युक्त प्रजा आनन्दित होती है।
ईशान—मंगलाचार, बहुवृष्टि, दूध, फल, पुष्प वृद्धि, राजाओं को आनन्द।

पूर्ण अषाढ़ी में सदा सायंकाल सुजान।
पूरब उत्तर ईश की वायु करे कल्यान॥
अग्नि याम्य नैऋत्य की अति दुर्भिक्ष बखान।
पश्चिम अरु वायव्य की मध्यम कहे प्रमान॥

संख्या के नाम

(१) एक, चन्द्र, इन्दु, भू, कु, रूप, अब्ज, आद्य, इल, आत्मा।
(२) द्वि, दृश, नेत्र, द्वय, अश्वि, अक्षि, भुज, यम, युगुल, पक्ष, दल, बाहु, अयन, युग्म।
(३) त्रि, अनल, अग्नि, राम, शिवनेत्र, वैश्वानर, त्रय, वन्हि, गुण, काल।
(४) चतु, वेद, अब्धि, युग, सागर, समुद्र, नदीश, वर्ण, आश्रम, पदार्थ।
(५) पंच, शर, बाण, इषु, विशिख, अक्ष, पत्रिन, गति, पाण्डव, प्राण, यज्ञ, कन्या. भूत, गव्य।
(६) षट्, अंग, रस, शास्त्र, तर्क, ऋतु, राग, अलिपद, वेदाङ्ग।
(७) सप्त, अद्रि, शैल, नग, ऋषि, मुनि, अश्व, स्वर, गिरि, ताल, लोक, वार।
(८) अष्ट, नाग, वसु, गज, करि, सिद्धि, योग, याम, प्रहर, दिग्गज।
(९) नव, गो, नंद, अंक, दुर्गा, ग्रह, निधि, भूखण्ड, भक्ति।
(१०) दश, दिशा, आशा, दोष।
(११) एकादश, शिव, रुद्र, शंकर।
(१२) द्वादश, सूर्य, इन, अरुण, भूषण, राशि।

(१३) त्रयोदश, काम, विश्व, अनंग, मनोज, किरण, नदी। (२२) द्वाविंशति, भुज-भुज।
(१४) चतुर्दश, शिव, शक्र, मनु, भुवन, विद्या, रत्न, लोक। (२३) त्रयोविंशति।
(१५) पञ्चदश, तिथि, शरच्चन्द्र, शरभू। (२४) चतुर्विंशति, जिन।
(१६) षोडश, नृप, इष्टि, शृंगार, कला, संस्कार। (२५) तत्त्व।
(१७) सप्तदश, शैलेला, अत्यिष्टि। (२७) भ, ऋक्ष, नक्षत्र।
(१८) अष्टादश, धृति, पुराण, अष्टि। (३२) रद, दन्त।
(१९) एकोनविंशति, नवेला, अतिधृति, अत्यष्टि। (३३) देव, सुर।
(२०) विंशति, नख, कृति। (६४) कला।
(२१) एकविंशति, प्रकृति, वैश्व, भूपक्ष, प्रकृति। (०) अभ्र, गगन, शून्य, ख, आकाश।

मासों के नाम—

चै.	मधु
वै.	माधव, राधेय, राधस्
ज्ये.	शुक्र
आ.	शुचि
श्रा.	नभस्
भाद्र	नभस्य, प्रौष्ठपद
आ.	इष, आश्वयुक्
का.	ऊर्ज, बाहुल
मार्ग.	तनूज, सहस्
पौष	सहस्य
माघ	तपस्
फा.	तापस्, तपस्य, अन्त्य

इसी प्रकार नक्षत्रों के नाम, नक्षत्र और वार की ध्रुवादि संज्ञा, तिथियों के स्वामी और युगादि-मन्वादि तिथियाँ, सूची से पृष्ठ जान कर पढ़िए।

क्रम	दिन मुहूर्त	नक्षत्र	रात्रि मुहूर्त	नक्षत्र
१	शिव	आर्द्रा	शिव	आर्द्रा
२	सर्प	श्लेषा	अजैकपाद	पूभा.
३	मित्र	अनु.	अहिर्बुध्न्य	उभा.
४	पितृ	मघा	पूषा	रेव.
५	वसु	धनि.	दस्र	अश्वि.
६	अम्बु	पूषा.	यम	भर.
७	विश्वेदेव	उषा.	अग्नि	कृत्ति.
८	अभिजित्	अभि.	ब्रह्मा	रोहि.
९	ब्रह्मा	रोहि.	चन्द्र	मृग.
१०	इन्द्र	ज्येष्ठा	अदिति	पुन.
११	इन्द्राग्नी	विशा.	गुरु	पुष्य
१२	निशाचर	मूल	विष्णु	श्रव.
१३	जलेश	शत.	सूर्य	हस्त
१४	अर्यमा	उफा.	त्वष्टा	चित्रा
१५	भग	पूफा.	वायु	स्वाती

'मुहूर्तन्तु घटिकाद्वयम् ।' के अनुसार ६० घटी के अहोरात्र मान में ३० मुहूर्त, दो-दो घटी (४८-४८ मिनट) पर होते हैं। सूर्योदय से एक-एक मुहूर्त प्रारंभ होता है। मुहूर्तों के नक्षत्र और नक्षत्रों के ध्रुव आदि संज्ञा (सूची से जानिए) भी होती हैं। नक्षत्रों के मन्त्र भी पृष्ठ ८६, ८७, ८८ में बताये गये हैं। दिनमान में १५ मुहूर्त तथा रात्रिमान मे १५ मुहूर्त को विभाजन करके समय जानिए।

अभिजित्-मुहूर्त

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
अंगुल	२०	१६	१५	१४	१३	१२	१२

वारों के नीचे अंगुल-संख्या लिखी गयी है। जिस दिन अभिजित् मुहूर्त देखना हो, उस दिन उतने ही अंगुल का शंकु, मध्यान्ह में समान भूमि में जमा दे, जब शंकु की छाया न रहे, उस समय से २४ मिनट तक अभिजित् मुहूर्त रहता है। इस मुहूर्त में यज्ञोपवीत आदि समस्त कार्य करना, शुभ है।

१२ बजे स्टैण्डर्ड टाइम में, लोकल टाइम का संस्कार करने से, स्पष्ट मध्यान्ह होता है। इस स्पष्ट मध्यान्ह से २४ मिनट तक अभिजित् मुहूर्त रहता है।

आगे शिव द्विघटिका मुहूर्त के चक्र लिखे गये हैं। जिनके समझने के लिये पृष्ठ ३१८ से देखिए।

क्रम	मुहूर्त	कार्य	गुण	वर्ण	वार
१	रौद्र	रौद्र कार्य	तम	कृष्ण	रवि
२	श्वेत	गजबन्धन कार्य	तम	कृष्ण	रवि
३	मैत्र	स्नान-दानादि शुभकार्य	सत्त्व	गौर	सोम
४	चार्वट	स्तम्भन कर्म	सत्त्व	गौर	सोम
५	जयदेव	सर्व कार्यसिद्धि	रज	श्याम	मंगल
६	वैरोचन	शुभ, पट्टाभिषेक	रज	श्याम	मंगल
७	तुरग	शस्त्र साधन	तम	कृष्ण	बुध
८	अभिजित्	ग्राम प्रवेश	तम	कृष्ण	बुध
९	रावण	वैर कार्य	सत्त्व	गौर	गुरु
१०	बालव	युद्ध कार्य	सत्त्व	गौर	गुरु
११	विभीषण	शुभ कार्य	रज	श्याम	शुक्र
१२	सुनन्दन	यन्त्र–चालन	रज	श्याम	शुक्र
१३	याम्य	मारण कर्म	तम	कृष्ण	शनि
१४	सौम्य	सभा प्रवेश	तम	कृष्ण	शनि
१५	भार्गव	शृंगार कर्म	सत्त्व	गौर	सोम
१६	सविता	विद्यारम्भ	सत्त्व	गौर	गुरु

रविवार (दिन)

रौ.	श्वे.	मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	बा.	वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	म.	मुहूर्त
त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	गुण
शू.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	वि.	वि.	अ.	अ.	अ.	शू.	वि.	वि.	वि.	वि.	मा.फा.चै.वै.श्रा.भा.
अ.	अ.	अ.	का.	का.	वि.	वि.	अ.	अ.	शू.	शू.	का.	अ.	अ.	अ.	का.	क्वाॅ.का. अग. पौ.
शू.	शू.	अ.	अ.	वि.	वि.	का.	वि.	वि.	शू.	अ.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	ज्ये.आषा.मलमास

रविवार (रात्रि)

श्वे.	मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	बा.	वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	मुहूर्त
र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	गुण
अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	शू.	का.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	वि.	वि.	अ.	अ.	मा.फा.चै.वै.श्रा.भा.
का.	वि.	वि.	शू.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	का.	का.	अ.	अ.	शू.	अ.	अ.	क्वाॅ. का. अग. पौ
अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	वि.	वि.	अ.	अ.	वि.	वि.	वि	वि.	अ.	अ.	शू.	ज्ये.आषा.मलमास

सोमवार (दिन)

मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	बा.	वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मुहूर्त
स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	गुण
अ.	अ.	वि.	वि.	वि.	नि.	अ.	अ.	अ.	शू.	वि	वि.	वि.	वि.	अ.	अ.	मा.फा चै.वै.श्रा.भा.
का.	वि.	वि.	शू.	शू.	अ.	अ.	अ.	शू.	वि.	वि.	अ.	अ.	शू.	अ.	अ.	क्वाँ. का. अग. पौ.
वि.	वि.	वि.	वि.	शू.	अ.	अ.	अ.	शू.	वि.	वि.	अ.	अ.	अ.	अ.	वि.	ज्ये.आषा.मलमास

सोमवार (रात्रि)

चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	बा.	वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मै	मुहूर्त
त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	गुण
का.	शू.	शू.	अ.	अ.	शू.	वि.	वि.	अ.	अ.	अ	अ.	वि.	वि.	वि.	वि	मा.फा.चैं.वै.श्रा.भा.
का.	शू.	वि.	वि.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	वि.	वि.	अ.	अ.	शू.	अ.	अ.	क्वाँ. का. अग. पौ
वि.	वि.	वि.	वि.	अ.	अ.	का.	शू.	अ	अ.	वि.	वि.	अ.	अ.	अ.	का.	ज्ये.आषा.मलमास

मंगलवार (दिन)

ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	वा.	वि.	सु.	या.	साँ.	भा.	स.	रौं.	श्वे.	मै.	चा.	मुहूर्त
र.	र.	त.	त.	स.	त.	र.	र.	न.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	गुण
का.	का.	अ.	अ.	अ.	अ.	त्रि.	वि.	वि.	वि.	अ.	अ.	वि.	त्रि.	वि.	त्रि.	मा.फा.चै.वै.आ.भा.
वि.	वि.	वि.	त्रि.	शू.	अ.	अ.	शू	वि.	त्रि.	अ.	अ.	अ.	शू	वि.	त्रि.	क्वाँ. का. अग. पौ.
शू	शू.	अ.	अ.	त्रि.	वि.	शू.	अ.	अ.	त्रि	वि.	त्रि.	वि.	वि.	वि.	अ.	ज्ये आषा.मलमास

मंगलवार (रात्रि)

वै.	तु.	अ.	रा.	आ.	वि	सु.	या.	साँ.	भा.	स.	रौं.	श्वे.	मै.	चा.	ज.	मुहूर्त
स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	स.	त.	स.	स.	र.	र.	गुण
वि.	त्रि.	का.	का.	अ.	अ.	अ.	का.	का.	का.	अ.	अ.	अ.	शू	शू.	अ.	मा.फा.चै.वै.आ.भा.
वि.	वि.	वि.	वि.	शू.	अ.	अ.	अ.	त्रि	वि.	शू	अ.	अ.	अ.	वि.	त्रि.	क्वाँ. का. अग. पौं.
त्रि.	वि.	वि.	वि.	शू.	वि.	वि.	त्रि.	वि.	का.	अ.	शू.	वि.	त्रि.	अ.	अ.	ज्ये.आषा.मलमास

बुधवार (दिन)

तु.	अ.	रा.	वा.	वि.	सु.	या.	सौ	भा.	स.	रौ.	श्वे	मै.	चा.	ज.	वै.	मुहूर्त
त.	त.	स	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	गुण
त्रि.	वि.	अ.	अ.	का.	का.	अ.	अ.	अ.	त्रि.	त्रि.	अ.	अ.	का.	का.	अ.	मा.फा.चै.वै.श्रा.भा.
त्रि.	वि.	अ.	अ.	अ.	का.	का	अ.	अ.	अ.	अ.	त्रि.	त्रि.	वि.	वि.	शू.	क्वाँ. का. अग. पौ.
अ.	वि.	वि.	वि.	वि.	अ.	अ.	त्रि.	त्रि.	त्रि.	वि.	अ.	अ.	अ.	अ.	का.	ज्ये.आषा.मलमास

बुधवार (रात्रि)

अ.	रा.	वा.	वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	मुहूर्त
र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	गुण
अ	अ.	अ.	अ	अ.	वि.	वि.	शू.	अ.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	वि.	वि.	मा.फा.चै.वै.श्रा.भा.
का.	का.	अ.	अ.	शू.	का.	का.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	वि.	वि.	शू.	अ.	क्वाँ. का. अग. पौ.
अ.	त्रि.	वि.	अ.	अ	शू.	वि.	त्रि.	त्रि	त्रि.	अ.	अ.	शू.	शू.	अ.	अ.	ज्ये.आषा.मलमास

गुरुवार (दिन)

रा.	वा.	वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मै.	चा.	ज	वै.	तु.	अ.	मुहूर्त
स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	गुण
अ.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	वि.	वि.	शू.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	वि.	वि.	मा.फा.चै.वै.श्रा.भा.
अ.	अ.	शू.	वि.	वि.	अ.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	वि.	वि.	शू.	शू.	अ.	क्वाँ. का. अग. पौ.
अ	अ.	वि.	वि.	शू.	अ.	अ.	अ.	शू.	का.	का.	का.	का.	अ.	अ.	अ.	ज्ये.आषा मलमास

गुरुवार (रात्रि)

वा.	वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	मुहूर्त
त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	गुण
का.	अ.	अ.	अ.	का.	का.	का.	का.	शू.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	अ.	अ.	मा.फा.चै.वै.श्रा.भा.
का.	अ.	अ.	अ.	शू.	वि.	वि.	का.	का.	अ.	अ.	अ.	शू.	वि.	वि.	अ.	क्वाँ. का. अग. पौ.
शू.	शू.	अ.	अ.	अ.	शू.	वि.	वि.	वि.	वि.	अ.	अ.	वि.	वि.	का.	का.	ज्ये.आषा.मलमास

शुक्रवार (दिन)

वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	वा.	मुहूर्त
र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	गुण
अ.	अ.	का.	का.	शू.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	वि.	त्रि.	अ.	अ.	अ.	शू.	मा.फा.चै.वै.श्रा.भा.
अ.	वि.	वि.	अ.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	वि.	वि.	त्रि.	अ.	अ.	शू.	का.	क्वाँ.का. अग. पौ.
वि.	वि.	अ.	अ.	अ.	शू.	वि.	वि.	वि.	वि.	अ.	अ.	वि.	वि.	का.	का.	ज्ये.आषा.मलमास

शुक्रवार (रात्रि

सु.	या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	वा.	वि.	मुहूर्त
स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	गुण
का.	का.	अ.	अ.	अ.	शू.	वि.	वि.	का.	का.	अ.	अ.	अ.	शू.	का.	का.	मा.फा.चै.वै.श्रा.भा.
वि.	वि.	अ.	अ.	अ.	शू.	वि.	वि.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	शू.	वि.	वि.	क्वाँ.का. अग. पौ.
वि.	त्रि.	अ.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	शू.	अ.	अ.	अ.	शू.	का.	का.	अ.	ज्ये.आषा.मलमास

शनिवार (दिन)

या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	वा.	वि.	सु.	मुहूर्त
त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	गुण
का.	अ.	शू.	शू.	शू.	शू.	अ.	अ.	अ.	अ.	शू.	अ.	अ.	शू.	अ.	अ.	मा. फा.चै.वै श्रा.भा.
का.	अ.	शू.	अ	अ.	शू.	अ.	का.	शू	अ.	अ.	का.	का.	का.	का.	का.	क्वाँ. का. अग. पौ.
अ.	वि	वि.	अ.	अ.	शू	अ.	अ.	अ.	अ	शू.	अ.	अ.	शू.	अ.	शू.	ज्ये.आपा.मलमास

शनिवार (रात्रि)

सौ.	भा.	स	रौ.	श्वे.	मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	वा.	वि.	सु.	या.	मुहूर्त
र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त	स.	स.	र.	र.	त.	त.	गुण
शू.	का.	का.	अ.	अ.	अ.	वि.	वि.	वि.	वि.	अ.	अ.	अ.	का.	का.	का.	मा. फा.चै.वै श्रा.भा.
का.	शू.	का	अ.	अ.	अ.	अ.	वि	वि.	वि.	वि.	अ.	अ.	अ.	शू.	का	क्वाँ. का. अग. पौ
अ.	वि.	वि	अ.	अ.	शू.	शू.	वि	वि.	अ.	अ.	शू.	अ.	अ.	अ.	शू.	ज्ये. :। ल ।स

शिवद्विघटिका मुहूर्त
[रुद्रयामलोक्त]

इन मुहूर्तों के नाम सोलह हैं। प्रत्येक दो मुहूर्तों का एक ही गुण होता है। वे दोनों गुण वाले मुहूर्त, प्रत्येक वार के दिन और रात के प्रारम्भ में प्रथम होकर क्रमशः होते हैं। मास भेद से तीन प्रकार के, वारों में उन मुहूर्तों के फल भी भिन्न हैं। यथा—रविवार के दिन मुहूर्त 'रौद्र' प्रत्येक मास में रहेगा; परन्तु यही 'रौद्र' मुहूर्त—माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, श्रावण, भाद्रपद में 'शून्य' अशुभ फलकारक होगा तथा क्वाँर, कार्तिक, अगहन, पौष, में 'अमृत' शुभफल कारक रहेगा और ज्येष्ठ, आषाढ़, मलमास में 'शून्य' अशुभफलकारक रहेगा। इसी प्रकार दिन-रात्रि, वार, मास के भेद से प्रत्येक मुहूर्त, मुहूर्तोक्त कार्यों में शुभ-अशुभ फल करेगा। यथा—रौद्र में रौद्रकार्य करने से शून्य (अशुभ) तथा अमृत शुभफल (कार्यसिद्ध) होगा।

दूसरी बात ध्यान देने योग्य यह है कि, दिन-रात के भेद से १६-१६ मुहूर्त हैं और दिन-रात का प्रमाण सर्वत्र, सर्वदा न्यूनाधिक होता है। अतएव ३२ मुहूर्त, ६० घटी में रहने पर 'द्विघटिका' मुहूर्त प्रसिद्ध होते हुए भी न्यूनाधिक समय में

रहेंगे। दिनमान या रात्रिमान के १६–१६ भाग करके, एक-एक भागों में एक-एक मुहूर्त रहेगा। जिस स्थान पर कार्य करना हो, उसी स्थान का दिनमान या रात्रिमान बनाकर मुहूर्त-साधन का विचार करना चाहिए। सूर्योदय-सूर्यास्त से दिन-रात के मुहूर्त सारम्भहोते हैं। तीसरी बात यह है कि, शिव द्विघटिका मुहूर्त के द्वारा कार्य करने पर तिथि, नक्षत्र योग, करण, कुलिक, यमघण्ट, भद्रा, चन्द्रमा, शूल, योगिनी, होरा, काल, लग्न, व्यतीपात, संक्रान्ति आदि के कुयोगों का विचार नहीं किया जाता। शून्य मे कार्यहानि, अमृत में कार्यसिद्धि, विघ्न में कार्य-बाधा और काल मे कार्यनाश होता है। इनके नाम—

(१) अ.=अमृत, श्री, विष्णु, सिद्धि। माधव, केशव, मुरारि, वामन आदि।

(२) वि.=विघ्न, धनु, युग्म, गणाधिप। विघ्नराज, आखुगामी, युगुल आदि।

(३) का.=काल, मृत्यु, पाद, यम। पद, उमारमण, द्विपद, पदत्रय, सूर्यसूनु आदि।

(४) शू.=शून्य, नभ, ख, अभ्र। गगन आदि।

सत्त्वगुण के समय 'सिद्धि' तथा रजोगुण के समय 'धन-सम्पत्ति' और तमोगुण के समय काट-छाँट, तोड़-फोड़, मोक्ष के कार्य करना चाहिए। मिथुन-सिंह-कन्या-मकर-कुम्भ तमोगुणी, मेष-वृष-तुला-वृश्चिक रजोगुणी और कर्क-धनु-मीन सतोगुणी हैं। शिव द्विघटिका मुहूर्त से शुभाशुभ सूचक जो चिन्ह 'ज्योतिःसार' में दिये गये हैं, उनमें भ्रम होने के कारण, इसमें शून्य, विघ्न, काल, अमृत के लिए शू. वि. का. अ. संकेत द्वारा प्रत्येक वारों में बताया गया है। शुभम।

ज्येष्ठान्ते मित्रभे सूर्ये तिथिविंशतिवैक्रमे। श्री मङ्गलप्रसादस्य पौत्रेण वै त्रिपाठिना॥
पण्डितानां हितार्थाय गयाप्रसादसूनुना। कृतो बालमुकुन्देन ग्रन्थो मुहूर्तदीपकः॥

"जयतु मुहूर्त दीपकः"

॥ श्री हरिः ॐ ॥